॥ ओ३म् ॥

यवनमतपरीक्षा

(अर्थात्)

हुज्जतुलइस्लाम

का

भाषानुवाद

श्रीयुत स्वर्गवासी आर्य्य मुसाफिर श्री
पं० लेखरामजी विरचित उर्दू पुस्तक से
श्री पं० बदरीदत्त शर्मा द्वारा अनुवादित

और

पं० शंकरदत्त शर्मा ने अपने
"शर्मामशीन प्रिंटिंग प्रेस" मुरादाबाद में छापकर
प्रकाशित किया।

द्वितीया वृत्ति १०००　　　मूल्य ।)

भूमिका

उस जगन्नियन्ता एवं शक्तिमान् की अगाध महिमा का वर्णन और परब्रह्म भगवान् की अपार करुणा का निदर्शन अल्पज्ञ मनुष्य पूर्णतया क्योंकर कर सकता है—उसके एक२ गुण का अनुवाद और उसके एक २ उपकार का धन्यवाद करने के लिये भी मनुष्य की आयु पर्य्याप्त नहीं होसकती-बड़े २ ऋषि, मुनि भी थकित होकर नेति २ पुकार उठे-महात्मा योगीश्वरभी (जिनके जीवन से बढ़कर मनुष्य के लिये और कोई उत्तम आदर्श नहीं मिलसकता) अन्ततोगत्वा यही उपदेश करगये कि उसके सत्य विश्वास के सिवाय मनुष्य के लिये और कोई सुखका आश्रय नहीं-सूर्य्य, चन्द्र, नक्षत्र और तारागण सब उसी की महिमा का प्रकाश करते हुए बतला रहे हैं कि हम प्राकृतिक और बनावटी हैं और हम सब एक प्रबल शक्ति के आधीन (जो सारे पदार्थोंकी स्थितिका हेतुहै) अपना २ काम कररहे हैं-जहांतक बुद्धि काम करती है सारी सृष्टि में उसी की विचित्र चित्रकारी के चिन्ह दृष्टि पड़ते हैं सारा प्राकृतिक जगत् अपने हेतु कुछ नहीं करसकता किन्तु प्राणियों के लिये लाभदायक निर्मित है और समस्त सृष्टि के बनस्पति और प्रथिव्यादि के भ्रमण नियम जीवों ही के हितार्थ निर्माण किये जाते हैं। प्रत्येक मनुष्य जानता है कि इस वाह्य और भौतिक दृष्टि के लिये सूर्य्य की कितनी बड़ी आवश्यकता है। जिसके बिना सामान्यतः कोई भी सृष्टि का सौन्दर्य्य निरीक्षण नहीं करसकता और न मनुष्य उससे किसी प्रकारका लाभ उठा सकता है यदि विचार पूर्वक देखाजाय तो जितनी इन भौतिक आंखों के लिये इस भौतिक सूर्य्य की अपेक्षा है। उससे सहस्र गुणा अधिक आत्मिक चक्षु के लिये वैज्ञानिक सूर्य्य की आवश्यकता है मनुष्य का कितनी ही अच्छी पोशाक हो,—कैसी ही उत्तम खुराक हो.—रूप और वर्ण भी रुचिर हो, द्रव्य

भी पुष्कल हो किन्तु एक विद्या और बुद्धि के न होने से मनुष्य निरापशु है—राजर्षि भर्तृहरिजी ने क्या अच्छा कहा है ।

येषां न विद्या न तपो न दानं ।
न चापि शीलं न गुणो न धर्मः ।
तेमृत्यु लोके भुवि भार भूता ।
मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति ॥

बुद्धिमानो के निकट खानेपीने से भी विद्या की अधिक आवश्यकताहै—मनुष्य जो समस्त सृष्टि जगत् में ज्येष्ट और श्रेष्ठ माना जाता है—वह केवल सत्य विद्या ही के प्रताप से अन्यथा विद्या रहित व्यक्ति पृथिवी का भार है—उस जगन्नियन्ता विश्वकर्मा ने वाह्य सूर्य के सदृश आन्तरिक सूर्य्य भी उत्पन्नकिया है—वाह्य में भौतिकप्रकाश है और आन्तरिक में आत्मिक सृष्टि का क्रम और उसके नियम जो सृष्टा की सर्वज्ञता का प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

उनसे विदित होता है कि सच्चाज्ञान वही है—जो विद्या, बुद्धि और सृष्टिनियम के अनुकूल हो-भौतिक चक्षु भौतिक प्रकाश से सृष्टिकी स्थिति और गतिका निरीक्षण व अवलोकन करें-और आत्मिक बुद्धि, विज्ञान के प्रकाश से उसका मनन और विवेचन करें-दोनों का साम्य (मेल) ही सच्चे ज्ञान की पहचान है-अन्यथा बुद्धि के प्रतिकूल, विद्या के विपरीत, प्रत्यक्ष और अनुमान के विरुद्ध कोई ज्ञान ईश्वरीय नहीं हो सकता-तलवार से अपने अनुकूल बनाना. जहाद (युद्ध) से मनमाना, (हूर. व गिलमां) गन्धर्व और अप्सराओं के जाल में फंसाना और बात है । और विद्या बुद्धि से शङ्कायें निवृत करके मनमाना दूसरी बात है । जिस प्रकार सूर्य्य के प्रकाश के सामने चन्द्र, नक्षत्र और दीपक सब फीके पड़जाते हैं । वैसे ही सच्चे ज्ञान अर्थात् विज्ञान रूपी सूर्य के सामने किसी और का चमकना ही असम्भव है ।

विद्या के प्रकाश और बुद्धिके उदय होनेकी देर है-अन्यथा कभी सम्भव नहीं होसकता किझूंठ सत्यको दबासके-जिनके हृदय रूपमन्दिर में विद्या की चिकनाई से बुद्धि का दीपक जलरहा है वह किसी के बहकाने में नहीं आते-और न किसी के डराने और धमकाने से असत्य को ग्रहणकर अपने आत्मा का हनन करते हैं-वह जानता है कि ज्ञाति और सम्बन्धी लोग सब यहीं के साथी हैं-फिर झूंठी ज्ञातिके लिये हम क्यों सत्य और न्याय के विरोधी बनें जब जिज्ञासु इस प्रकार विज्ञान का दीपक हाथमें लेकर सृष्टि क्रमपर दृष्टिपात करता हुआ प्रमाण की चक्षु से देखता है तब अविद्या का अन्धकार दूरहोकर उसे सत्य के दर्शन होते हैं-उस समय वह उनसब झूंठेजाल और बन्धनो को जोझूंठे मतवादियों और स्वार्थी पन्थ प्रचारकों के बिछाये हुए हैं सत्यके बलसे तोड़कर अपने अभीष्ट स्थान को पहुंचताहै-अर्थात सच्चे धर्मको स्वीकार करता है-जिसप्रकार कोलम्बस ने अपने बेधक परिश्रम और साहस से अपने साथियों के साथ छोड़देने और ज्ञाति तथा देशके विरोध करने परभी अत्यन्त कष्ट उठा २ कर अमेरिका पालिया-और जिस तरह गैलेलो प्रभृति फांसीपर चढ़ते २ भी सच्चाई का डंका बजागये-इसी तरह वह सत्यका खोजी जिज्ञासा की उमंग में अवश्य सचाई को पाता है घबराता नहीं और न पछताता है।

सृष्टि के प्रारम्भ से भारत के युद्ध तक सारे भूमण्डल में एक धर्म और एकही प्रकार के कर्म थे-वेदों काही सब जगत् में प्रचार था-और वेदोक्त कर्मों सेही सब को सरोकार—दुर्भाग्यसे आपस में लड़ाई हुई और फूट का बीज बोयागया—और बहुत शीघ्र पुष्पित व फलित हुआ—अर्थात मत मतान्तर का प्रारम्भ हुआ—४९९६ वर्ष व्यतीत हुए—यह लड़ाई कुरुक्षेत्र ज़िला थानेसर के मैदान में हुई थी—१८ दिन तक घोर संग्राम और कुहराम मचा—लाखों मनुष्य और सहस्रों शूरबीर खेत रहे-वैदिक धर्मका सूर्य्य अस्त हुआ-प्रारम्भ मेंजो थोड़बिगड़ वह पारसीहुए-औरसाथही दुर्वृत्त (बदचलन) लोगों में वाममार्ग फैलनाप्रारम्भ हुआ जिसके कई शताब्दी पश्चात् मूसाई

मत फैलने लगा। जब वाममार्गी और मूसाई लोग ईश्वर के नामपर दीन पशुओंका बलिदान और पशुमांस हवन(सोख्तनी कुरबानियां) करने लगे। तब देशमें रुधिरकी नदियां बहने लगीं निरपराध-प्राणियों के रुधिर को पवित्र समझ कर गृह द्वारों पर लोग उसके थापे लगाने लगे। और माथों पर भी रक्त का टीका लगने लगा। तौरेत या तन्त्रग्रन्थों में बछड़ों और बकरों के लोहू से यहूदा या योधा प्रसन्न होने लगा। बूचरखाने का बड़ा ठेकेदार जब ईश्वर को बनाया गया, सारे पातक और अत्याचार उस पवित्र और दयालु परमात्मा के शिर मंढेगये- तब एक क्षत्रिय ने इस कलंक के दूर करने का बीड़ा उठाया अर्थात् शाक्यसिंह गौतम ने बौद्धमत चलाया। और लोगोंको ऐसे निर्दयी ईश्वर और बनावटी ईश्वर ज्ञान (इलहाम) से घृणा उत्पन्न कराई। प्रेम के स्रोत से दयाकी नदी बहाई उपदेश में बतलाया। और लोगोंको दृढ़ निश्चय कराया कि दयालु परमात्मा मांस नहीं खाता और न मनुष्यों को खाने की आज्ञा देता है-इस एकही सच्ची बातने लोगों के आत्माओं पर अपना प्रभाव जमाया। जहाँ मूसा की तलवार कुण्ठित होगई और वाममार्ग की छुरी भी न चल सके-वहां उसकी मधुरभाषिता और सत्यता की असि मनुष्यों के हृदयों को चीर कर पार हो गई-अमेरिका,अफरीका,यूरोप और एशिया जिधर देखो अब तक ढाईहजार वर्ष बीतने पर भी दुनियां की एक तिहाई आबादी उसी का गीत गा रही है इस के पश्चात् मसीहसे तीनसौ वर्ष पहले, श्रीमान् स्वामी शंकराचार्य ने अद्वैतमत का प्रचार किया-जिससे हमारे बहुत से भाई स्वयं ब्रह्म बन बैठे-इन्हीं दिनों सिकन्दर की चढ़ाई के कारण सम्पूर्ण देशों में हलचल मची-और सिकन्दरिया की नींव पड़ी। राजा अशोकके समय में बौद्धमत के प्रीचर (प्रचारक) मिसर में गये। और सिकन्दरिया में एक शिक्षालय स्थापित किया जो बहुत दिनों तक स्थिर रहा और होनहार शिष्यों को उत्पन्न करता रहा-मसीह, ने पहले पहल इसी विद्यालय में शिक्षा पाई। और ,बौद्धमतका दीक्षा लेकर आर्य्यावर्त की यात्रा की। यूहन्ना तसलीस का

बानी इसी विद्यालय के विद्यार्थियों (शागिर्दों) में से था—(देखो इंजील तिब्बत से आई हुई)

इसके पश्चात् मसीह की छठी शताब्दी में मुहम्मद साहब ने अरब में जन्म लिया—और मैदान खाली देखकर ४० वर्ष की अवस्था में पैग़म्बरी की हवा उनके मस्तिष्क में समाई—वैसेही चार और भी सहयोगी मिलगये—और खुद हज़रत खत्मुल मुरसलीन (आख़िरी पैग़म्बर) बन बठे-(मुल्कगीरी) देशों में अधिकार ज़माने के साथ २ 'मज़हबी जहाद' का झण्डा उठाया—और जहां तक होसका अरब के रेगिस्तान में खून की नदियां बहाई—उनके पश्चात् उनके अनुयायी कट्टर खलीफाओं ने उनकी इच्छा (वसीयत) को पूरा किया—यहां तक कि लूट मार का हाट गर्म होकर लाखों शिर तनसे जुदा होजाने, और लाखों लौण्डी ग़ुलाम बनने और सैकड़ों नगर उजाड़ होने के पश्चात्—अरब, राम, ईरान, मिसर, अफ़ग़ानिस्तान, विलूचिस्तान, स्पेन और पोर्चुगाल ने विवश हो मुहम्मदी मत को ग्रहण किया—और यही किन्तु इस से भी अधिक दुर्दशा भारतवर्ष में हुई—परन्तु यह भारतवर्ष और देशों की तरह मर नहीं गया था—इसकी कुक्षि में इसी मार धाड़ और घोर आक्रन्दन के समय में भी रामानुज, रामानन्द, चेतन, कवीर, नानक, अंगद, अमरदास, तुलसीदास, राम, दास, अर्जुन, अवधूत, हरिराय, ऊधोसिंह, विन्दासिंह और शिवाजी प्रभृति महात्मालोग यथा समय उत्पन्न होते रहे—और अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पर भी थोड़ा बहुत सद्धर्मका उपदेश करते रहे-यद्यपि मुहम्मदी जहाद की अग्नि चारों ओर भड़क रही थी—परन्तु इनके शान्ति भरे उपदेशों की वर्षा ने उसे बहुत कुछ शान्त किया—यहां तक कि जो प्रभाव इसलाम का इस देश में होना था—उसका दशमांश भी नहीं हुवा—यह सब इन्हीं का प्रताप था—और देशों में प्राचीन मतों का नाम व निशान नहीं रहा—ईरान में पारसियों की अग्नि इसलामी खून ने वुझादी—यहां वैदिक तौहीद (ब्रह्मज्ञान फिलासोफी) के सामने इसलाम खुद ठण्डा पड़गया—

जिसको मुहम्मदी मतके विद्वान् स्वयं स्वीकार करते हैं देखो परम विद्वान् मौलवी इलताफ़ हुसेन साहब हाली क्या लिखते हैं—

१ वहदी ने हजाज़ी का बेबाक बेड़ा। निशां जिसका अक्साय आलम में पहुँचा॥ नजौहूं में अटका न कुलज़ुममें जिसका। मुकाबिल हुवा कोई खतरा न जिसका॥ किए पै सिपर जिसने सातों समन्दर। वह डूबा दहाने में गङ्गा के आकर॥

पहले तो केवल एक इसलामही का सामना था—जिसके लिये इतने महात्मा साहस कर कटिबद्ध हुये—पर अबतो एक और मत यहां आ विराजा—और आते ही गम्भीरता से काम करने लगा-प्रत्येक बुद्धिमान जानता है—कि मूर्ख शत्रु की अपेक्षा चतुर शत्रु महा भयजनक होता है—अतः वैदिकधर्म दिन प्रतिदिन क्षीण होनेलगा—जब इस प्रकार अन्धकार फैलते २ आर्य्यावर्त तिमिराछन्नहोगया और पुनरुद्धार दुस्तर दीखने लगा तो एक महात्माने विद्योपार्जन से निवृत्त हो स्वार्थ और निज सुख को लात मारकर योगानन्द से निकल जगत् के सुधार पर परिकर बांध उद्यत हुआ—वास्तव में परमात्मा की शक्ति और दैवी प्रेरणा का बल था—अन्यथा एक व्यक्तिसे इतना उपकार होना बड़ा कठिन था—न ईसा की तरह हवारी (चेले) बनाये और मूसा व मुहम्मद की तरह कोई असहाब या खलीफे या फौज साथ ली-केवल सत्य और ज्ञान पर भरोसा रख सत्य सनातन वैदिक धर्मका उपदेश किया—न्याय (मन्तिक के प्रमाणों से अलंकृत; फिलासोफी और पदार्थ विद्या से अनुमोदित, फिज़्यालोजी (पशु सम्बन्धी विद्या) और जियालोजी (भूगर्भविद्या) से परिगर्भित, सायन्स और इतिहास से परिवेष्टित, सांख्य और योग से परिभूषित वैदिक धर्म को दिखला कर शिक्षित समुदायको चकित करदिया—

क्या इस समय में (जब कि चारों ओर विद्या का प्रकाश) फैल रहा था शक्कुल कमर की कहानी काम आसकती थी?

क्या यदे बैज़ाकी दियासलाई का मसाला इस समय काम दे सकता था?

क्या जादू की छड़ी, सांप की लाठी और लाठी का सांप बनाना इस समय काम आसकता था ?

क्या आग जो मूसाने देखी–जिसने पहाड़ जलादिया और अनाअल्ला का शब्द निकाला—खुदा हो सकती थी।

क्या अनेक मतों की पुस्तकों से स्वाभिमत कुछ बातें निकालकर नयामत चलसकता था।

या वह सूफीमत का मनुष्य जिसको यहूदियों ने सूली पर चढ़ाया और जिसने रोते २ जानदी—खुदा हो सकता था।

क्या अंजीर के वृक्षको गालियां देना—और डाक्टरों के सन्मुख मृतकों को जीवित करना, अंधों को सुमाखा करना, जिन्न भूत निकालना—मसीहाई कहला सकती थी कदापिनहीं बुद्धि का अवसर, विद्या का समय, युक्ति का शासन और फिलासफीका राज था—जब आस्मानही न रहे—तब (माराज) घोड़े पर चढ़कर आस्मान में खुदा की मुलाक़ात को जाना वा खुदा के दायें हाथ चौथे आस्मान पर जाबैठना कब मानने के योग्य होसकताथा–सब से अधिक सच्ची और निर्भ्रान्त अनादि और पवित्र शिक्षा की आवश्यकता थी–धन्य हो प्रभु धन्य तुम्हारी अपार महिमा है–हम किस मुह से आपकी अपार करुणा का वर्णन करसकें—जिसने इस समय में विद्वद्वर शिरोमणि श्रीमान् परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी दयानन्दसरस्वतीजी महाराज को जगत्सुधार के लिये प्रेरणा की और वह भी धन्यवाद के योग्य हैं—जिन्होंने सांसारिक लोभ मोह को त्याग—कामादि विषयों से विरक्त होकर ईश्वरीय प्रेम की अग्नि में अपने आपको स्वाहा करदिया उनकी विद्या—उनका ब्रह्मचर्य्य—उनका धैर्य और सद्धर्म पर दृढ़ विश्वास अपनी उपमा न रखता था—उनके वैदिक सत्योपदेश तिमिराच्छन्न आर्य्यावर्त को प्रकाशमय बना दिया—सूर्य और नक्षत्र पूजा उठने लगी—ईश्वरीय तेज के सामने सब ग्रह अस्त होगये—मन्दिर व पर्वना की परिक्रमा करने से लोगोंको बचाया-सर्वव्यापकके लिये स्थान विशेष (बैतुल्ला) बनानेवालों को लजाया दयालु परमात्मा के लिये निरपराध

वस्तुओं की भेट चढ़ानेवालों को ईश्वरीयन्याय से डराया बुतखानों (प्रतिमालयों) और कबरिस्तानों में खाक उड़नेलगी—आतिशपरस्ती (अग्निपूजा) को सदुपदेश की वर्षा से बुझा दिया—ज्वालामुखी पहाड़ों की उष्णता ठण्डी होगई—मानो उनपर ढेरोंबर्फ पड़गई—गंगा, ज़मज़म और बपतिस्मे के पानी से मुक्ति की आशा रखनेवाले निरास होकर हाथ धोबैठे तसलीसकी बाज़ी तीनकाने होगई—चहलकाफ़का तिलिस्म सुलेमानी टूटगया—तैंतीस करोड़ (देवतों) का भेद खुलगया—शैतान की अपवित्रता और मृतक पूजा की दुर्गन्धि से हृदय स्वच्छ और पवित्र होगये-गुरुडमका बोरिया बन्धना बंठचुका, मनुष्य पूजा ऊँचा स्वाँस लेरही है अत्याचारकी तल चार टुकड़े २ होगई स्वयंब्रह्म बननेवालों को ईश्वर का अनादि सेवक बनादिया—और प्रत्येक प्रकार के आत्मिक और शारीरक मनुष्य मात्रको बतादिये—

विदित होकि ४० वर्ष के लगभग समय व्यतीत हुआ कि मौलवी अबदुल्ला साहब ने एक पुस्तक तहफतुल हिन्दनाम की बनाई थी। जिसका उत्तर उसी समय में मुं०इन्द्रमणिजी मुरादाबादी ने तुहफतुल इसलाम में दे दिया। इसके पश्चात् इसी विषय पर लगभग १५ पुस्तकोंके दोनों तर्फसे यथा समय छपती रहीं यद्यपि मु० इन्द्रमणि साहब ने तुहफतुल इसलाम के बाद भी ६ पुस्तकें और लिखीं। परन्तु मौलवी साहब ने इस बाच में मौन धारण कर लिया। सिर्फ तुहफतुल इसलाम हा बीच में ६ बार मुद्रित हुई। और इसी तरह और पुस्तकेंभी जिनसे अच्छी तरह दीन इसलाम की असलियत प्रगट हुई।

अब इतने काल पश्चात् वही मौलवी साहब फिर सोते से जागेहैं। और उसी तुहफतुल हिन्दके ढङ्गपर विद्या और युक्ति से शून्य ऊट पटाङ्ग आक्षेप लिखकर २५६ पृष्ठ की एक पुस्तक हुज्जतुलहिन्द नामकी मुद्रितकीहै–जो हमारे पास बड़े उत्साह से मुं० द्वारिकाप्रसाद जी कायस्थ ने देहली से भेजी है।

देखने से ज्ञात हुवा कि बहुत से आक्षेप तो "सौत अस्सुल जब्बार अली मतनुल कुफ्फार" नामकी किताब से उद्धृत

किये हैं जिनके उत्तर स्वर्गवासी मु० इन्द्रमणिजी ने इन्द्रवज्र उपनाम (मारूफ) "अमाद हिन्द" में देदिये। बहुधा आक्षेप पादरी स्मिथ साहब की किताब तहकीक दीन हक़ से लिये। जिनके उत्तर यह अनुचर "सच्चे धर्मको शहादत" में लिखचुका, और बहुत से आक्षेप "बराहीन अहमदिया" से लियेगये हैं-जिनके सप्रमाण उत्तर "तकजीब बराहीन अहमदिया" में दिये गये है और बीसियों स्थलों पर (मूललेख) असल इबारत "सुरमे चश्म आर्य" की लिखदी। जिसका सविस्तर उत्तर "नुसखे खब्त अहमदिया" में पहले ही हम दे चुके—इनके अतिरिक्त और बहुत से आक्षेप ऐसे हैं—जिनके जवाब मु० इन्द्रमणि साहब की किताबों में दियेगये हैं अतएव हम उन को छोड़कर केवल ऐसे प्रश्नों का उत्तर देंगे-जिनके जवाब रहगये या जो मौलवी साहब ने नये किये—अन्यथा व्यर्थ कागज काला करने से लाभ क्या?

आर्य्य समाज के सामने ऐसे आक्षेप घास फूस से बढ़कर उपमा नहीं रखते—एक ही सचाई की ज्वाला इनको भस्म करसकती है अब हम अपने हिन्दू भाईयों की सेवा में सविनय निवेदन करते हैं कि वह सद्धर्म की सहायता में तन मन धन से उद्यत हों और नित्य नैमित्तिक शास्त्रानुकूल कर्मों तथा वैदिक संस्कारों का अनुष्ठान करें इस समय ईश्वर की कृपा से बुद्धि का शासन और विद्या का राज्य है-फिर हम क्यों उस से वञ्चित रहें-वैदिक धर्म संसार में फैल रहाहै—आपभी स्वार्थ और विरोधको छोड़कर सद्धर्मको जय मनावें—उपनिषदों की ब्रह्म विद्या और शास्त्रोंकी फिलासफी भूमण्डल के प्रत्येक खण्ड में फैलावें—दम्भी और स्वार्थी लोगों की अनुकृति (पैरवी) छोड़कर वेद और ईश्वरको अपना आदर्श बनावें—कपट और छलत्याग कर सत्य की शरण में आवें आर्य्य समाज उस सच्चे वैदिक धर्म को घोषणा करता है—और उस के विरोधियों की कूटनीति तुम्हारे सामने खोलकर रखता है—

पुराणों ने आपको झूंठे विश्वासमें फंसाया—सत्य वदिक धर्म से विमुख कराया—मूर्तिपूजा ने आलसी बनाया—धन सम्पति को नष्ट कराया—और दुष्टों के हाथ से भयानक और विषमावस्था को पहुंचाया—क्या इस न्यायशीला गवर्नमेण्ट के राज्य में भी आपका मन सुषुप्ति से जागृत में आना नहीं चाहता ?

क्या रासलीला और चीरलीला के ऐक्ट (नाट्य) न पुंसक बनाने के सिवाय कोई और फल देसकते हैं ? प्यारे भाइयों सावधान होजाओ—पवित्र धर्मको कलंक न लगाओ तुम्हारे दोषों से धर्म दूषित समझा जारहा है।

अब हम निरीक्षकों की सेवा में कुछ निवेदन करते हैं कि वह इस पुस्तक को आद्योपान्त अवलोकन करके न्याय तुलीपर रक्खें और फिर सत्य को ग्रहण और असत्य को त्याग करें हम अपने यवन मित्रों की तरह जैसे कि वह आर्य्य धर्म को पक्षपात की दृष्टि से देखते—और उसकी पुस्तकों को नहीं पढ़ते या कम पढ़ते हैं—यवन मत की पुस्तकों को आग्रह से नहीं देखते—किन्तु बड़ी जिज्ञासा से अवलोकन करते हैं हमें इस मत में कोई महाशय ऐसी बात बतलावें जो वैदिक मत में न हो तो हम बड़ी श्रद्धा से उसे मानने के लिये तय्यार हैं परन्तु हम क्या करें हमारे मित्र आग्रह के पाश में फंसकर इस प्रकाश के समय में भी माराज् (सीढ़ी) लगा आकाश में जाना चाहते हैं।

किम्बहुनेत्यालम् बुद्धिमत्सु
लेखराम आर्य्य पान्थ लाहोर
ता० ४ दिसम्बर ९६ ई०

॥ ओ३म् ॥

पहला अध्याय ।

वेदविषयक आक्षेपों का उत्तर ।

हुज्जतुलहिन्द पृष्ठ ३—हम लोग यह जानते थे कि पादरी लोगही हमारे दीन (मत) के बड़े शत्रु हैं । हिन्दुओं से हमारे मतको कोई हानि नहीं पहुंचती । हिन्दू बेचारे गरीब (दीन) असामी हैं किसी को नहीं छेड़ते । अब कुछ कालसे उस गरीब आसामीने भी शिर उठाया । और हिन्दुओं के शिरोमणि इन्द्रमणि मुरादाबादी ने बड़ी मतारणा (मुगालता) और कटूक्ति (सख्त कलामी) से दीन इसलाम के साथ बुराई पर कमर बाँधी । इसके अतिरिक्त आजकल हिन्दुओं में आर्य्य समाज एक नया सम्प्रदाय प्रगटहुआ है । जो इसमतपर विशेष आक्रमण (हमला) करता है । और अपनी मूर्खतासे अपने ही आपको स्वर्गीय सम्प्रदाय मानकर वेदपर बड़ा घमण्ड करताहै । और वेद को कुफ्र और शिर्क (नास्तिकता) और वाहियात बातों से भरा हुआ है उसको ईश्वर का वाक्य जानताहै । उस पर ध्यान नहीं देता । और अपनी क्षुद्र दृष्टि से दीन इसलाम पर बहुत से आक्षेप करता और सर्व साधारण को बहकाता और तङ्ग करता है ।

(उत्तर) हमारे आग्रही मौलवी साहब ने जिस उदाहरणीय सभ्यता से पुस्तक का प्रारम्भ किया है—उसका अनुभव तो हमारे पाठकों ने स्वयं किया होगा—हमें उसके लिखने की आवश्यकता नहीं—शेखजी को मालूम नहीं कि पहले आक्रमण किसने किया । या जान बूझकर अजान बनते हैं । पहले उन्होंने हिन्दू मत पर हमला किया । और किताब तुहफतुलहिन्द लिखी । अपनी रक्षा और बचावधर्म और राज नियम दोनों के अनुसार उचित है । अतएव अपनी रक्षा और बचाव के लिये हमारी ओर से भी खण्डन में पुस्तकें लिखीं ।

गई-बस पहले छेड़ आपने ही की-निस्सन्देह हम गरीब आसामी थे और हैं-परन्तु जब कोई हमारे पीछे पड़जाता है। तोफिर हमभी उसकी पूरी २ खबर लेते हैं "अतिसंघर्षण करे जो कोई अनल प्रगट चन्दनतें होई" लाचार होकर आप के अनुचित आक्षेपों का उत्तर देनापड़ा-आप अपनी व्यर्थ और अश्लील और असभ्य बातों से नहीं लजाते-किन्तु मुन्शी इन्द्रमणि की युक्ति युक्त और यथा तथ्य समीक्षा से मुंह चढ़ाते और (अपशब्दों) बद जबानी से गालियाँ सुनाते हो-हम आपकी गालियोंका सिवाय इसके और कुछ उत्तर नहीं देते। "लगेहो मुंहचढ़ाने देतेर गालियां साहब। जबां बिगड़ी तो बिगड़ी थी खबर लीजो दहन बिगड़ा। श्रीमान् स्वामी जी महाराजने सत्यार्थ प्रकाशमें और इसअनुचर ने तकजीब बराहीन अहमदिया व खब्त अहमदियामें इसप्रश्नका कि कौनसी पुस्तक शिर्क (अनेक ईश्वरों की पूजा) से भरी हुई है समीचान और पर्य्याप्त उत्तर देदिया है जो अविद्या के रोगकी पूर्ण औषधि है-यदि हमारे मित्र उसे अवलोकन करते तो हम निश्चय पूर्वक कहते हैं कि फिरकुरान की तौहीद (एक ईश्वर मानना) का दम न भरते—हम यही शब्द जो मौलवी साहब ने वेदों की निस्बत कहेहैं- कुरान के लिये दोहरा सकते है—परन्तु हमारा यह काम नहीं।

मुन्शी इन्द्रमणि के आक्षपों का समाधान् आज तक मौलवियों से न होसका-एक वीर के सामने कितने मौलवियों ने सालठोंके परवाहरे शर-एक हाथसे ही सब को पछाड़ा-क्या कोई बुद्धिमान कहसकता है-कि मुन्शी इन्द्रमणि के आक्षपों का उत्तर आजतक किसी मौलवीसे बना-कदापि नहीं।

शेखसाहब-आप आर्य्यसमाज को चाहे कितनीही गालियाँदें-बुरा कहें-यह इस से नहीं घबराता।

तु० हि० पृ० ६, ४५, ८० आर्य्यमतवालों ने अपने ऊपरसे कलङ्क और आक्षेप दूर करने के लिये—स्वामी दयानन्द सरस्वती का अनुकरण कर प्राचीन व अर्वाचीन हिन्दुओं के विरुद्ध यह बहाना सोचा है कि पद्मपुराण, शिवपुराण, भागवत

और महाभारत आदि पुस्तकें जिनमें झूठ,कुफ्र और गप्पशप्प भराहुवा है-हमारे मत की नहीं है-हमतो सिर्फ वेदको मानते हैं जिसमें झूठ है न कुफ्र, बनावट है न मिलावट-इसका उत्तर यह है कि यह पुस्तकें निसन्देह तुम्हारे मतकी हैं-तुम्हारा वेद जिसको तुम मानते हो स्वयं कहता है कि यह पुस्तक वेद से निकली हैं-और वेद एक छोटी सी विद्या है जिससे परमात्मा का ज्ञान नहीं होसकता-क्योंकि अथर्वण वेद के मुण्डक उपनिषद् में लिखा है—कि एक विद्याका नाम अपरा (छोटी विद्या) है और दूसरी का परा (बड़ी विद्या) अपरा से तात्पर्य्य है चारों वेद उसकी शाखाओं से जैसे कि ६ शास्त्र १८ पुराण व्याकरण, छन्द, ज्योतिष और आयुर्वेद आदिहैं—और परा से अभिप्राय है ब्रह्मविद्या से जिससे उस परम पुरुष को पाता है जो अक्षय और अविनाशी है।

(उत्तर) आर्य्य समाज आक्षेप दूर करने के लिये नहीं किन्तु सत्यके ग्रहण और असत्य को त्याग करने के लिये (जो उसका तीसरा नियम है) पुराणों को नहीं मानता—उसने आपके सदृश अविद्या या आग्रह से नहीं किन्तु उनको पढ़कर और इतिहासों से परीक्षा करके निश्चय किया है कि पुराण क़िस्से और कहानियों से भरे हुए हैं—जैसे कि कुरान और इञ्जील इस लिये वह धर्म पुस्तक नहीं हो सकते, सुनिये शेख साहब, माननीय और अमाननीयका निर्णय इसी से हो सकता है कि यदि वेद में होतो हमें उसके मानने से कभी इनकार नहीं होसकता—वेद में और भागवत का प्रमाण,—लड़के भी इस बात पर हंसेंगे—अस्तु मुण्डक उपनिषद् में एक श्रुति है—जिसके आशय को न समझ कर आपने मनमाना लिखदिया—उसमें न तो ६ शास्त्रों का उल्लेख है न आयुर्वेद का और अठारह पुराणों की तो कहीं गन्ध भी नहीं है वह वाक्य यह है।

तस्मै सहोवाच । द्वेविद्ये वेदितव्य इति ह स्म यद् ब्रह्मविदोवदन्ति परा चैव परा च ॥ ४ ॥

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षाकल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति अथ परा यथातदक्षरमधिगम्यते । ५ खं १

(अनुवाद, याज्ञवल्क्य जी कहते हैं कि दो विद्या जानने के योग्य है जिनको वेदज्ञ इस प्रकार कहते हैं । परा और अपरा अपरा-विद्या केवल यही है कि शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष इन ६ वेदाङ्गों के सहित ऋग यजुः साम और अथर्ववेदों को पढ़े-परन्तु सिर्फ पढ़लेने से विद्या पूर्ण नहीं होती । किन्तु उसपर मनन करना और तदनुसार आचरण करना यह दो विद्या के पूर्ण अङ्ग हैं । और यही दो ईश्वर प्राप्ति के भी साधन हैं । निदान वेदोंके द्वारा कर्म कांड पदार्थ विद्या की उन्नति करना अपरा और ज्ञानकाण्ड (ब्रह्म विद्या का अभ्यास और मनन करना परा विद्या कहलाती है । एक पुस्तक उपनिषद् सार है, जिसे बाबू नवीन चन्द्रराय सभासद् ब्रह्मसमाज ने सम्वत् १९३२ वि० में छपाया था । उस में लिखा है कि ब्रह्म जगत और कर्तव्य विषय में अपरा और परा दोनों प्रकार की श्रुतियां हैं (पृ० ६४ पं० ४ प्र० १९) वैदिक धर्म तत्व में मु० गणेशप्रसाद सब डिप्टी इन्सपेक्टर जिला तिरहुत जो कि ब्राह्म समाज के अनुयायी हैं) इसी श्रुति पर लिखते हैं कि इससे तात्पर्य ईश्वर ज्ञान से है न कि पुस्तक के पाठ करने से क्योंकि वेद में तो ब्रह्मज्ञान ही का प्रधान रूपसे वर्णन किया गया है (पृ० ५७ पं० ३ व ४ सन् १८८१) इससे प्रगट है कि केवल पुस्तकों का पढ़ना अपरा है और उनपर आचरण करना परा-यह अपरा और परा दोनों वेद में हैं । वेद से बाहर नहीं हैं । इसी के सम्बन्ध में एक महात्मा ने कहा है-वेदपाठी भवेद्विप्रः ब्रह्मजानाति ब्राह्मणः ।

अर्थात् वेदों का पाठ करने वाला विप्र कहलाता है । और उनके द्वारा ब्रह्मको जाननेवाला ब्राह्मण-ऐसा ही आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ सुश्रुत के आचार्य लिखते हैं ।

यथाखरश्चन्दन भारवाही भारस्य वेत्तानतु च न्दनस्य । एवं हि शास्त्राणि बहून्यधीत्य चार्थेषु मूढा खरवद्वहन्ति ॥

(अनुवाद) जसे गधे पर चन्दन के लादने से वह बोझ को जानता है न कि चन्दन को, ऐसे ही बहुतसे शास्त्रों को पढ़ कर जो उनके अर्थको नहीं जानता और उसपर आचरण नहीं करता वह गधे के समान सिर्फ भारवाही है-ऐसे ही ऋषियों के वाक्य सुन, सुनाकर कुरान ने भी लिखा है ।

जिसका तरजुमा तफसीर हुसैनीवाला यों में इसप्रकार करता है, खुदा ने यहमत इलफ़ार से कहा । जो इल्म सीधा रास्ता नहीं बतलाता वह बोझ है । इल्मको सिर्फ दिलमें रखने वाले उसका बोझ उठाने वाले हैं । और उसपर आचरण करने वाले उसका लाभ इत्यादि-इसीके अनुसार सादी शीराजी ने भी कहा है । जैसे पशु के ऊपर पुस्तक लाद देनेसे वह पण्डित और ज्ञानी नहीं बनसकता-ऐसेही विद्यापढ़ लेने मात्रसे बिना उसका उपयोग किये कोई लाभ नहीं उठासकता ।

जिसप्रकार कुरान में शब्द कसिस के आजाने से कसिस हिन्द या कसिस अम्बिया और शब्द हदीस आजाने से सुहाह सत्ते का निश्चय करलेना मूर्खता है-इसी प्रकार वेद में पुराण शब्द आजाने से भागवत आदि का प्रत्यय होनाभी भ्रान्ति है । जबतक किसी ग्रन्थ विशेष का नाम न हो या १८ की संख्या उनके साथ न हो तबतक १८ पुराणों का कोई सम्बन्ध पुराण शब्द से नहीं है । यदि वेदोंमें इन पुराणों का नाम होना-जिस प्रकार कुरान में तौरेत, जबूर, इञ्जील आदि का तोहम उसको निर्विवाद मानलेते-क्योंकि हम आपलोगों की तरह ईश्वर में भूल वा अज्ञानता नहीं मानते । जो उसके आदेश को खण्डित मानलें । परमेश्वर करे कि आप इसी एकबातसे सच झूठका निर्णय कर सकें ।

(हु० हि० पृ० ६ प ८०) और वशिष्ठमुनि जो राजा रामचन्द्र के गुरु और हिन्दुओं के बड़े आचार्य हुए हैं और हिन्दुओं के

निकट उनकी परीक्षा स्वामी दयानन्द की विद्या से सकड़ों अंश में बढ़ी हुई है-योग वशिष्ट के चौथे प्रकरण में लिखते हैं कि ब्रह्माने संसार के कल्याणार्थ चारवेद, अठारह स्मृति, छः शास्त्र और अठारह पुराण बनाये-जब यह पुस्तकें सब ब्रह्मा से निर्मित हुईं अर्थात् एकही मनुष्य ने बनाईं तो फिर क्या कारण है कि उनमें से चारोंवेद तो प्रामाणिक और माननीय हुए और शेष सब अमाननीय और त्याज्य-यदि माननीय हों तो सबहों और यदि अमाननीयहों तो भी सबहों और सचतो यह है कि सब अमाननीय हैं।

(उत्तर) हम अपने विश्वास से कहतेहैं कि आपने आज तक योग वशिष्ट नहीं देखा। और न कोई और प्रामाणिक ग्रन्थ देखा है उसमे यह बात कदापि नहीं है और न होनी चाहिये। क्योंकि यह बात कोई अन्धा भी नहीं कह सकता कि चारवेद १८ स्मृति, ६ शास्त्र, १८ पुराण कब ब्रह्माके बनाये हैं। कारण यह कि महामूर्ख के सिवाय पण्डित लोग इस बातको जानते हैं कि यह ग्रन्थ किसके बनाये हैं। हम संक्षेप से यहां पर इसका विवरण करते हैं।

विदित होकि चारवेद तो ईश्वरीय ज्ञानहोनेसे अपौरुषेय है उनके विषय में सब ऋषिमुनि एकस्वर होकर कहरहे हैं कि इनका आदि सृष्टिमें ईश्वर की ओर से प्रकाश हुआ वह किसी मनुष्य के बनाये हुए नहीं-किन्तु परब्रह्म परमात्मा के विधि निषेध रूप आदेश हैं और १८ स्मृति १८ मनुष्यों की बनाई हुईं है जिनके नाम यह हैं-(१) मनु (२) गौतम (३) नारद (४) वशिष्ट (५) वृहस्पति (६) पराशर (७) व्यास (८) याज्ञवल्क्य (९) हारीत (१०) विष्णु (११) भृगु (१२) कौशिक (१३) जमदग्नि (१४) लिखित (१५) दक्ष (१६) यम (१७) भारद्वाज (१८) कात्यायन-यह सारी स्मृतियां न ब्रह्माकी बनाई हैं और न किसी एक मनुष्य की-किन्तु भिन्न २ मनुष्यों की बनाई हुईहैं, जिनके नाम ऊपर लिखेगये-और इन में से केवल मनुस्मृति प्रामाणिक है अन्य सब अप्रामाणिक—

इसलिये कि उन सबका भरोसा मनुस्मृति परही है-और मनु से अधिक उन्होंने कुछ कहाभी नहीं-फिर मुख्यको छोड़कर गौण की चर्चा से कुछ प्रयोजन नहीं।

शास्त्र ६ हैं इनका कर्ता भी ब्रह्मा नहीं-१ सांख्य जिसका कर्ता कपिल (२) वैशेषिक का कणाद (३) न्याय का गौतम (४) योगका पतञ्जलि (५) मीमांसा का जैमिनि और (६) वेदान्त का कर्ता व्यास है-यह छओं वेदों के उपाङ्ग हैं और इनमें फिलासिफी (तत्वविद्या) भरीहुई है हम इनको पूर्णरूप से मानते हैं और प्रत्येक आर्य्य इनका मान्य करता है-इनको ब्रह्मा का बनाया हुआ मानना भूलही नहीं किन्तु धोखा है।

शेषरहे अठारह पुराण इनके कर्ता भी ब्रह्मा नहीं और न कोई एक मनुष्य किन्तु बहुत से मनुष्य हैं जिनके नाम पुराणों से ही परीक्षक लोगोंने जानलिये हैं मुं० इन्द्रमणि ने भी इनके नाम अपनी पुस्तकों में लिखे हैं-उनमें से एक भागवत है जिसका कर्ता मकसूदा बादका रहनेवाला जयदेव का भाई बोपदेव था-और यदि दुर्जनतोषन्याय से हम तुम्हारे कथन को कुछ मानभी लें तो पुराणादि फिरभी ब्रह्मा के बनाये सिद्ध न होसकेंगे-क्योंकि उनके बनानेवाले तो प्रसिद्ध हैं-परन्तु कुरान की दुर्दशा होगी—क्योंकि दीन इसलाम के प्रसिद्ध आचार्य्यवली हमीदउद्दीनसाहब नागोरी अपनीपुस्तक शरहइश्क़ में (जो योग विद्या की प्रसिद्ध पुस्तक है) लिखते हैं।

(अनुवाद)

जिस समय हज़रत मुहम्मद साहबमें ईश्वरत्व का आवेश होता था और उपासक भाव उसमें दबजाता था-उस समय वह जो कुछ कहतेथे वह ईश्वरवाक्य (आयत) समझी जाती थी और जब उपासक भाव प्रबल होता था तब जोकुछ कहते वह हदीस मानी जाती थी।

इससे स्पष्ट अवगत होता है कि दोनों किताबें मुहम्मद साहब की बनाई हुई हैं और जोकि लाखों हदीसे झूंठी मौजूद हैं-जिनको बहुधा सम्प्रदाय मुसलमानों के मानते हैं और जिनके विषयमें सय्यद अहमदखांसाहब लिखतेहैं-शाहअब्दुल

अजीज साहब अपनी किताब तोहफे में एक जगह पर लिखते हैं कि अप्रमाण हदीस उन्मत्तप्रलपित है देखो तहजीब जिल्द १ नं० ६ पृ० ५३।

बस हमें तुम्हारे कथनानुसार कहनापड़ा—जबकि दोनों एक व्यक्ति के बनाये हुए हैं-फिर क्या कारण कि उन में से केवल कुरानतो प्रमाणिक और माननीयहो और शेष उन्मत्त प्रलपितके समान अयुक्त और व्यर्थ समझी जावें-यदि प्रमाणिकहों तो सबहों और सच तो यहहै कि सब अप्रामाणिकहैं।

(ह्र०हि०१०) और इनसब बातों के अतिरिक्त वेद में क्या क्या झूंठ और कुफ् थोड़ा भराहुआहै जिसको तुमने धर्म और विश्वास करके मानाहै-सारावेद देवताओं की प्रार्थना और स्तुति से भराहुआ है।

उत्तर—हम नहीं समझते कि हमारे प्रतिपक्षी आक्षेप करते समय सत्य और न्याय को क्यों तिलाञ्जली दे बठते हैं, और नहीं सोचते कि झूंठ बोलनेका क्या परिणाम होगा।

हज़रतझूंठ और शिर्क और कुफ् तो कुरान में भरापड़ा है जिसका सविस्तर विवरण हम तकज़ीबबराहीन अहमदिया व खतअहमदिया. में लिखचुके हैं-पवित्र वेदों में तो इन तीनों बातों में से एक भी नहीं क्योंकि उस में परब्रह्म परमात्मा का ज्ञान है और विशेषकर उसकी भक्ति और उपासना का आख्यान-शुभकर्म और सदाचार का वर्णन है और सच्चाई और आस्तिकता का विवरण—और यह केवल हमारी ही मन्तव्य नहीं किन्तु बहुधा अन्य मतके विद्वानों ने भी इसबातको स्वीकार किया है।

आनरेबुल इल्फन्सन साहब बहादुर भूतपूर्व गवर्नर बम्बई लिखते हैं—आर्य्यों की धर्म सम्बन्धी पुस्तकों में यत्र तत्र एक ईश्वरका होना पायाजाता है, और उनके अन्तमें यह बतलायागया है कि सब धर्मों से यह बड़ाधर्म है कि उपनिषदों के द्वारा एक ब्रह्म और उसका ज्ञान प्राप्तकरें देखो तारीख हिन्दोस्तान पृ० ७०।

प्रसिद्ध परीक्षक कालमूक साहब लिखते हैं कि उन शूर-वीर लोगों में से जिनका वेदमें तो कहीं वर्णननहीं, परन्तु आ-जकल के हिन्दुओं के देवताओं में बड़ापद और महत्व माना-जाता है यथा राम और कृष्ण आदि-किसी को वेदमें देवता नहीं बतलाया गया-किन्तु उन देवताओं का भी जिनका यह अवतार हैं कहीं वर्णन नहीं मिलता देखो तहकीकात हालत एशियाजिल्द ८ पृ० ३६५ व ३६७।

प्रसिद्ध विद्वान प्रोफेसर विलसन साहब कहते हैं कि वेद से मूर्तियों का प्रचार और उनकी पूजा सम्बन्धी उपचारों के प्रकार और चिन्ह सिद्धनहीं होते-देखो उनका लेकचर छपा हुआ आक्सफोर्ड पृ० १२।

मौलवी जकाउल्ला साहब लिखते हैं कि हिन्दूधर्म की बु-नियाद वेदोंपर निर्भर है जिसका वर्णन पूर्वकर चुके हैं-वेदों में यत्र तत्र परमेश्वर की एकता का वर्णन है-और उसके स्वरूप और गुणों का वर्णन इस प्रकार आया है कि वह सत्य और आनन्द स्वरूप है अनुपम और अविनाशी है-वह एक और अद्वितीय है-न वाणीको उसके वर्णन की शक्ति और न बुद्धि को उसके समझने की सामर्थ्य है-देखो तारीख हिन्द बाब १ फसल ६ पृ० हिस्सा ५०१।

आनरेबल मोन्टस्टुवार्ट इल्फन्स्टन साहब लिखते हैं कि वेदों का मुख्य विषय यह है कि ईश्वर एक है जो कि बहुधा स्थलों पर वेदमें लिखाहुआ है कि वास्तव में परमात्मा एक है जो सबसे महत्तर और ईश्वर का भी ईश्वर है उसीने सारे ब्र-ह्माण्ड कोरचा है। देखो तारीख हिन्दोस्तान सन् ८६ ई० अ-लीगढ़ पृ०१८।

सरविलियम जोन्स साहब लिखते हैं वेद से अवगत हो-ता है कि ईश्वर सत्य (एक रस) और आनन्द स्वरूप है वह अद्वितीय और अविनाशी है उसके स्वरूप को न तो वाणी व-र्णन करसकती है और न बुद्धि समझसकती है वह सबमें व्या-पक है और सबका नियामक है-और अपने अनन्त ज्ञान और

आनन्द से भरपूर है-वह प्रत्येक देश और कालमें सर्वदा उपस्थित है इसके पैरनहीं परन्तु बड़े वेगसे चलताहै-उसके हाथ नहीं पर सारे ब्रह्माण्डको पकडे हुए है-आंखों के बिना सबको देखता और बिना कानो के सबकी सुनता है-बिना किसी समझानेवाले के प्रत्येक बात को समझता और बिना किसी कारण के सब कारणोंका निमित्तकारण है-सबका न्यायाधीश और सबसे बली है सारे पदार्थों को उत्पन्न, धारण और संहार करनेवाला वही है। (किताब विलियम जौन्स साहब जिल्द ६ पृष्ठ ४१८)।

प्रोफेसर विलसन साहब लिखते हैं वेदमें ब्रह्मा विष्णु और शिवको कुछ विशेषता नहीं दीगई और न वह पूजा के योग्य समझेगये और बहुत कम उनका वर्णन मिलता है। (देखो उनका लेकचर पृ० १२)।

कालब्रुकसाहब लिखते हैं कि हम को वेद में कोई ऐसा स्थल नहीं मिला जिससे ब्रह्मा, विष्णु, महेश का अवतार होना सिद्ध हो। किताब तहकीकातहालत एशिया जिल्द ८ पृ० ४९४। इतिहासज्ञ अबूरैहां अलबरुनी लिखता है—अनेक देवता हैं यह साधारण लोगोंका विश्वास है। जो शिक्षित हिन्दू (आर्य्य) है—वह ईश्वर को एक, नित्य, अनादि, अनन्त, पवित्र, सर्व शक्तिमान, सर्वज्ञ, चिन्मय, प्राणका भी प्राण, स्वामी, रक्षक और सच्चिदानन्द मानतेहैं। यह लोग सारे पदार्थों में उसी की सत्ता मानतेहैं क्योंकि जो वस्तु जिसकि है वह उसीके आधार से है (अलबरुनी की किताब पृ० ४८७ व ४८८)

एशियाटिक सोसाइटी के विद्वानों ने पूरी २ परीक्षा और मीमांसा करके लिखा है।

इदं विष्णुरितस्योपरि पुराण सम्मित् सायणीय व्याख्यानञ्च वैदिकानां नादरणीयम्। यास्कानुक्ते अवतार शब्दस्यापि वेदे अदर्शनात्। नि० दे० पृष्ठ २८३।

(अनुवाद)

वेदों में ईश्वर का अवतार होना तो कहां किन्तु अवतार शब्द भी नहीं है। अवतारों की सारी कहानियां पुराणों में भरी है और वेद के अत्यन्त विरुद्ध है-वेद से उनका कोई सम्बन्ध नहीं—यास्क ऋषि भी ऐसा ही मानते हैं। निरुक्त कलकत्ते का छपाहुआ पृ० २८३।

अतः यह कहना आपका कि वेद (शिर्क) नाना ईश्वरों से भरेहुए हैं वृथा प्रलाप है।

(हु० हि० पृ० २०५ व २०६) हिन्दुओं के मतमें दिन और रातमें एक उपासना धर्म है उसका नाम सन्ध्या है और समय उसके तीन हैं (१) प्रातःकाल सुर्योदयका समय (२) मध्यान्ह दोपहरका समय (३) सायंकाल अर्थात् सूर्यास्त का समय।

उत्तर—निसन्देह सन्ध्या करना वैदिक धर्मावलम्बियों का परमधर्म है और उसका तात्पर्य्य परब्रह्म की उपासना है—परन्तु समय उसके तीन नहीं दो हैं-वेद, उपनिषद्, मनुस्मृति और शास्त्र सब दोही सन्ध्याओं का विधान करते हैं—पहला तारों के छिपनेसे सूर्य्य के निकलने तक दूसरा सूर्यास्त से तारों के उदय पर्यन्त। देखो मनु अ० २

और मुहम्मद साहबने भी ऐसाही लिखा है—ए मुसलमानों यदि तुममें दीनता और अपवित्रता नहो तो इधर सूर्योदय से पहले और उधर सूर्यास्त से पहले नमाज़ पढ़ो—जहांतक होसके प्रातःकाल और सायंकालकी (नमाज़) सन्ध्या से प्रमाद न करो-क्योंकि इनसंध्याओंमें प्रमाद करनेवाला बड़ा अपराधी है इन दोनों काल की सन्ध्याओंमें विशेषता यह है कि प्रातःकालका समय आरामकरने और निद्राके वेगका है-और सायंकाल का समय कामकाज और बाजारमें जानेका है—अतः अपने आराम और कामको भी छोड़कर परमात्माकी उपासना करनी चाहिये—दूसरा कारणयह भीहै कि प्रलयमें परमात्मा की रूयत (रूपकारी) भी इन्हीदो कालोंमें होगी। मशकात जिं० न्द ४ बाब रूयत अल्ला ताला फसल २ पृ० ४५०

(इ० हि०) और सन्ध्या मे मन से तो ब्रह्मा, विष्णु और शिवकी उपासना की जाती है—आंख और मुह बन्द करके इन तीनों की मूर्त्ति का ध्यान करना और वाणी से गायत्री का जप करना और किन्ही अन्य मन्त्रों को भी पढ़ना—जिन मे से किसी मे ईश्वर का नाम तक नहीं—और प्रातः काल की सन्ध्या मे सूर्य के सन्मुख मुंह करके खड़ा होना और दोनों हाथों से प्रार्थना करना, और सायंकाल की सन्ध्या मे ऐसा ही पश्चिम की ओर मुंह करके खड़ा और दो पहर की संध्या सूर्य के ऊपर होने से दोनों हाथ ऊंचे करके करना और इस सध्या मे कि हिन्दुओंके धर्म में इससे वढ़ कर और कोई पूजा नहीं ईश्वर का नाम भी नहीं है।

उत्तर—जहाँ तक सन्ध्या और उसके पवित्र मन्त्रों को देखा गया है—ब्रह्मा, विष्णु, महेश का या और किसी देवी देव का उनमें नाम या चिन्ह भी नहीं—सिवाय परमात्मा के और किसी का उन मन्त्रों में वर्णन नहीं—और न किसी अन्य का स्मरण—मनको बाह्य पदार्थों से रोककर प्राणायाम के द्वारा ईश्वर में लगाना और सब इन्द्रियों को वश में कर जगदीश के गुणानुवाद में तत्पर होजाना इसी का नाम संध्या है सन्ध्या शब्द का अर्थ ही यह है कि जिस में सम्यक प्रकार परमात्मा का ध्यान किया जावे उस में किसी मूर्त्ति या व्यक्ति की कुछ भी आवश्यकता नहीं क्योंकि सारी मूर्त्तियां नाश होनेवाली हैं—अविनाशी परमात्मा मूर्त्ति और व्यक्ति से रहित है वह सकाय नहीं कि उसके ध्यान के वास्ते किसी स्थान विशेष या महराब या मन्दिर या मसजिद की ज़रूरत हो—मस्तिष्क में से अहंकार की दुर्गन्धि को निकाल कर परमात्मा के अगाध गुणों का चिन्तन करना, नाभि से प्राणों को उठा कर और शरीर में घुमाकर मनको रोकना, हृदय को रागद्वेष के मल से पवित्र कर दर्पणवत् स्वच्छ रखना—सन्ध्या का मुख्य अभिप्राय है—किसी ने कहा है आंख मूंद कान मूंद होंठ दबाकर। गर न पाये भेद उसका मुझपै हंसाकर॥ गुण के विचारने से गुणी का स्मरण होता है—गायत्री का जाप

अपनी उपमा आप है जोकि अर्थ सहित विचार करने से हृदय के अन्धकार को दूर करता है सन्ध्या में कुल १६ मन्त्र हैं जिन में कमसे कम उसके पवित्र नाम ३०से अधिक हैं—खड़े होने लेटने और बैठने से उपासना का कोई सम्बन्ध नहीं इन बनावटी चेष्टाओं से उपासना अलग है—एकान्त स्थान में बैठकर जहाँ कोलाहल न हो और चित्त की वृत्ति न बटे उपासना होती है और सच भी है उपासना को जनता से क्या सम्बन्ध बुरी भावनाओंको रोककर और चञ्चल मनको स्थिर कर आत्मा में और आत्मा को परमात्मा में लगादेना चाहिये— सूर्य, चन्द्र और शुक्र आदि का उससे कोई सम्बन्ध नहीं, दोनों काल की सन्ध्या जिधर चाहे बैठ कर आराम से करनी चाहिये किसी दिशा विशेष का नियम नहीं क्योंकि वह परमात्मा देश काल से अपरिछिन्न है—किसी दिशा विशेष की ओर लक्ष्य करके सदा उसे प्रणाम (सिजदा) करना भी एक घृणित प्रकार की मूर्त्ति पूजा है—बार २ उठने, बैठने और लेटने से चित्त वृत्ति बिखरजाती है और मन स्थिर नहीं रहता और इस से उपासना का आनन्द भी नहीं आता-उठने या बैठने से इबादत नहीं होती। महनत के न करने से रियाजत नहीं होती (अनुवादक) हां यदि इसे व्यायाम का सब से भद्दा तरीका कहें तो ठीक है।

साधारण रीतिपर तो सन्ध्या से बढ़कर कोई उपासना नहीं परन्तु विशेष रीति पर उपासना का अभ्यास करनेवालों के लिये योग है जिस के पूरा होने से मनुष्य पूर्ण योगी (आरिफ कामल) होकर परमात्मा के ध्यान में निमग्न हो जाता है हाँ कुरानमें या दीन इसलाममें नमाजसे बढ़कर कोई भक्तिनहीं और न (हूरोगिलमा) लौंडी और लौंडोंसे बढ़कर कोई मुक्ति है

(हु० हि०) और गायत्री का पढ़ना इनके निकट एक बड़े पुण्य का काम है—सब हिन्दू इसपर सहमत हैं कि गायत्री के बराबर और कोई मन्त्र नहीं-इसीलिये गायत्री को मूल मंत्र कहते हैं-और कहते हैं कि यदि ब्राह्मण सहस्र बार गायत्री

का जप करें तो बड़े भारी पाप से छूट जाता है— जैसे कि सर्प कैंचुली से अलग होजाता है। और ऐसा कोई काम नहीं जो गायत्री के प्रताप से न होसके। और ब्रह्मा, विष्णु, महेश और वेद गायत्री से हुए हैं। मनुशास्त्र में लिखा है कि पण्डित गायत्री के पढ़ने से निस्संदेह मुक्ति को पाता है। चाहे अपने धर्म सम्बन्धी और कामों को न करे। और स्कन्दपुराण में है कि वेद में गायत्री से बढ़कर कोई वस्तु नहीं—और कोई मन्त्र इसके समान नहीं जैसे काशीके बराबर कोई नगर नहीं। गायत्री वेद और ब्राह्मणों की माता है और अपने पाठकों की रक्षा करती है। सो जिस गायत्री की महिमा है वह यह है:—

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥

और इसके अर्थ यह है कि शब्द ओ३म् ढाई अक्षरोंसे मिल कर बना है। एक अकार दूसरा उकार तीसरा मकार अकार नाम है विष्णु का और उकार नाम है महादेव का और मकार नाम है शक्ति अर्थात् देवी का और कोई २ इस शब्द के अर्थ अल्वीक (यह शब्द उपासना के समय बोला जाता है) के करते हैं—फिर दूसरा शब्द है (भूः) इसके अर्थ पृथिवी के हैं। फिर तीसरा शब्द (भुवः) है जो आकाश का वाचक है और चौथा शब्द (स्वः) है जो स्वर्गका वाचकहै और सिवाय इन चार शब्दों के शेष मन्त्र का अर्थ यह है कि हम सूर्य की सबसे बड़ी ज्योति का ध्यान करते हैं। वह हमारी बुद्धि की प्रेरणा करे। देखो जिस गायत्री की स्तुति में हिन्दुओं के यहां इतनी धूम धाम है। और उसको ऐसा छिपाते हैं कि सिवाय ब्राह्मण और क्षत्रिय के किसी को नहीं बतलाते—और उनको भी शनैः २ कान में सुनाते हैं उस गायत्री का अर्थ (मज़मून) कैसा तुच्छ (लचर) और फ़िर्क़ नास्तिकता से भरा हुआ है। सारे मन्त्रों में उत्तम मन्त्र और उसमें भी सूर्य की प्रार्थना—

पृ० २८८

(उत्तर) निस्सन्देह गायत्री प्रशस्तमन्त्र है और उस में ईश्वर से प्रार्थना है-वास्तव में वह मूलमन्त्र है अर्थात् उपनयन संस्कार में द्विजोंकी माता है-हमारा विश्वास यह नहीं है कि पाप बिना फल भोगके निवृत्त होजाते हैं-परन्तु मुसलमानों का यह विश्वास अवश्य है कि चाहे कोई कैसे ही पाप करें एकबार कलमा पढ़ने से पवित्र होजाता है और तुम्हारीधर्म पुस्तकों में लिखा है कि हुजू असवदके छूने और चूमने से पापी पापसे मुक्त होता है-यह पत्थर प्रारम्भ में श्वेत और उज्ज्वलथा-अब पापियों के छूने से काला और मलीन होगया। देखो तारीख़ अम्बिया ज़िकर इब्राहीम पृ० ४०।

हां अत्यन्त पापी मनुष्य भी गायत्री का अर्थ सहित जाप करने और तदनुसार अपना आचरण बनाने से भविष्यत् में पापों से बचसकता है-और यह भी हमारा विश्वास नहीं कि सब काम गायत्री के प्रताप से होजाते हैं-हजारों काम ऐसे है जो गायत्री के पढ़ने मात्र से नहीं होते-जैसे रोटी पकाना, कपड़े सीना और मकान बनाना आदि-हां गायत्री के जाप से आत्मिक कामों का सम्बन्ध है-और उन में गायत्री अवश्य सहायता करती है-ब्रह्मा विष्णु, शिव गायत्री से उत्पन्न नहीं हुए—और न वेद वा मनुस्मृति में इनका कहीं वर्णन है-और न वेद गायत्री से हुए-हाँ यह अवश्य है-कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश जो महापुरुष हुए हैं जब उनका उपनयन संस्कार हुआ होगा तो अवश्य उनको गायत्री सिखाई गई होगी--वह इस पदवी पर गायत्री के ही प्रतापसे पहुंचे-और उन के वेद पढ़ने और वेद का ज्ञाता होने की जड़ गायत्री ही है-निसन्देह ब्रह्मादि ऋषियोंको उच्चपदवी गायत्री से मिली-और निसन्देह गायत्री का पूरा साधन करने से मुक्ति प्राप्त होती है जिस का नाम योगाभ्यास—और इस में भी सन्देह नहीं कि गायत्री वेद और ब्राह्मणोंकी माता अर्थात् मान करानेवाली है-क्योंकि जिनका यज्ञोपवीत संस्कार नहीं होता वह न तो वेद और न ब्राह्मणोंका गौरव करते हैं-अतः अवश्यमेव इस सब प्रतिष्ठा की हेतु गायत्री है-आपने गायत्री—मन्त्र संस्कृत और उर्दू

दोनों में अशुद्ध लिखा है–और यह भी असत्य है कि इस मन्त्र का अधिकार केवल ब्राह्मण और क्षत्रिय को है–नहीं कदापि ऐसा नहीं होसकता—साधारणत चारोंवर्ण और विशेषतः ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यगुण कर्मानुसार इसके अधिकारीहैं।

अबहम गायत्री मन्त्र अर्थ सहित नीचे लिखते हैं।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो-देवस्य धीमहि। धियोयोनः प्रचोदयात्॥ य० अ० ३६ मं० ३।

(पदच्छेद) ओ३म्। भूः। भुवः। स्वः। तत्। सवितुः। वरेण्यम्। भर्गः। देवस्य। धीमहि। धियः। यः। नः। प्रचोदयात्॥

ओ३म् * यह नाम सर्वदा परमेश्वर के लिये आता और किसीके लिये नहीं, महर्षि पातञ्जलि योग शास्त्र में लिखते हैं (तस्यवाचकःप्रणवः) उस परब्रह्म परमात्माका वाचक ओ३म् शब्द है–महाभारत में भी लिखा है "ओमित्येकाक्षरब्रह्मं" अर्थात् ओ३म् यह एक (अद्वितीय) अक्षर (नाशरहित) ब्रह्म का नाम है।

योगी याज्ञवल्क्य का कथन है कि परमेश्वर जो विद्या और सब पदार्थ विद्या से जानेजाते हैं उन सब का आदिमूल अर्थात् निमित्त कारण है–उसकी उपासना ओ३म् भूर्भुवः स्वः या गायत्रीके समस्त पद संघात या पृथक् २ पदों से करनी चाहिये–तात्पर्य यह कि ईश्वर का ध्यान ऐसा करो जैसा कि गायत्री के शब्दार्थ से प्रतिपन्न होता है।

मनुजी का लेख है कि गायत्री जिसके आदिःमें परमात्मा का सर्वोत्तम ओ३म् नाम आता है ईश्वर की दया का द्वार है।

माण्डूक्योपनिषद्में है कि परमात्माका ध्यान ओ३म् शब्द का सहायता से करो।

---

* यह शब्द अ–उ–म से मिलकर बना है जो मनु० अ० ६ श्लोक ७६ के अनुसार परमात्मा का वाचक है।

शङ्कराचार्य्य लिखते हैं कि भूः भुवः स्वः इन तीनों महाव्याहृतियोंका वाच्य एक परमात्मा है—जो सबका आधार और निमित्त कारण है-अनादि व सर्वव्यापक है—अगोचर और अज है।

मन्त्रार्थ—जो परमात्मा प्राणों से भी प्रिय, मुक्ति और सब सुखोंका दाता, सुखका अधिष्ठान है-जो सब जगत का उत्पन्न करनेवाला, अत्यन्त ग्रहण करने और ध्यान करने के योग्य है—जो शुद्ध और विज्ञान स्वरूप, सबके आत्माओं का प्रकाशक है-उसका हम ध्यान करते हैं-वही परमात्मा अपनी कृपासे हमारी बुद्धियों को बुरे कामोंसे रोककर अपनी भक्ति अपने ज्ञान और जगत की भलाई में लगावें।

यह बहुत संक्षेपसे इसपवित्र मन्त्रका अनुवाद कियागया है जो सविस्तार देखना चाहे वह श्रीमान् स्वामी दयानन्दजी महाराजकी बनाई पञ्चमहायज्ञविधि में देखलेवें-ब्राह्मसमाज की पुस्तक में इस मंत्रका अनुवाद इस प्रकार कियागयाहै उस सबके प्रेरक और सब कामनाओं के पूर्ण करनेवाले अन्तर्य्यामी विज्ञानानन्द स्वभाव ब्रह्म जो सबके आत्माओं में प्रकाशकरने वाला ध्यान के योग्य विज्ञान की परम ज्योतिसे प्रकाशित है उसका हम ध्यान करते हैं-जो हमारी बुद्धि की वृत्तियों को बुरे कामोंसे हटाकर सन्मार्ग में लगावे-और सत्कर्मों की ओर प्रेरणा करे देखो पुस्तक ब्राह्म धर्म पृ० ३० दूसरा एडीशन शाके १७९० शालिवाहन।

परीक्षक कालब्रूक ने गायत्रीका अनुवाद इस प्रकार कियाहै—परमात्मा के स्वरूपका अर्थात् पूजने योग्य उसकी ज्योति का ध्यान करो और यह प्रार्थना करो कि वह हमारी बुद्धि को प्रेरणा करता रहे। देखो किताब तहकीकात हालात एशिया जिल्द ८पृ०४०० ऐसाही प्रोफेसर विलसनसाहब लिखतेहैं-उस विज्ञानभास्कर की उत्कृष्ट ज्योति का ध्यान करो जिनसे हमारी बुद्धि और समझको प्रकाश पहुंचसकता है (प्रोफेसर विलसन की किताब जिल्द १ पृ० १८४)।

कुरान में नमाज़के वास्ते सलवातका शब्द आता है-शब्द

निसाब में इसकी व्युतपत्तियां लिखी है–कि सलवातका धातु (मसदर) सला है जो (सिरीन) शिराका वाचक है–नमाज़ पढ़ने वाला प्रणाम (सिजदा) करने के समय जब सिरीन को उठाता है तो इस क्रिया को सलवात कहते हैं— और कोई सलवात का अर्थ दोनों सिरीनको हिलाना लिखते हैं। (ग़यासल्लुग़ात रदीफ़ स्वाद)।

इसी प्रकार गायत्री का अनुवाद इंगलिश और गुजराती में भी है—पस यह आपका कियाहुआ अनुवाद निम्न लिखित हेतुओं से ठीक नहीं-१ हेतु यह है कि किसी वैदिक कोप में अकारादि ब्रह्मा विष्णु, महेशके वाचक नहीं और न ओ३म् ही इन में से किसीका नाम है दूसरे सन्ध्याका नाम ब्रह्मयज्ञ है जिस से परमात्माकी उपासना कीजावे नकि चन्द्रसूर्य्यकी या ब्रह्मा विष्णु महेशकी तीसरे स्वयंसन्ध्याके अघर्षणके तीन मंत्रोंमें स्पष्ट आज्ञा है कि चन्द्र सूर्य्य पृथिवी आदि समस्त लोकों का उत्पादक परमात्मा है–उसके सिवाय और कोई उपासनाके योग्य नहीं–फिर गायत्री या सन्ध्या के किसी मन्त्र का ऐसा अनर्थ कभी नहीं होसकता।

ओ३म् नाम सिवाय एक अद्वितीय अमूर्त्त, अजन्मा सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा के कभी और किसी के वास्ते नहीं बोला गया—संस्कृत की अनेक पुस्तकों में "ओमित्येकाक्षरंब्रह्म" यह वाक्य आता है जिससे स्पष्ट अवगत होता है कि आर्य्य लोगों में इसनाम से सर्वदा एक परमात्मा की ही पूजा होती रही।

कुरान ने एकता (तौहीद) कहां से सीखी और कलमा कहां से उड़ाया–और किस तरह अपना नाम मिलाकर झूंठ सचका मेल मिलाया—इसे हम सर्व साधारण के सूचनार्थ प्रगट करते हैं।

स्वामी शङ्कराचार्य के समय से जब शैवमतजारीहुआ और उसके उपदेशक देशाटन करते हुए अरब में पहुंचे—तो उन्होंने मक्के आदि स्थानों में जाकर "एक मेवा द्वितीयं ब्रह्म नेह नानास्ति किञ्चन" इस उपनिषद्वाक्य का उपदेश किया

और इन्हीं सन्यासियों के मुखसे मुहम्मद साहब ने जो मक्केके मन्दिर के पुजारी के लड़के थे सुना—तो जिस तरह (बिस-मिल्लाह रहमानुलरहीम) आदि बहुत सी आयतें पारसियोंके मुखसे सुन सुना कर कुरान में लिखीगईं—इसी तरह "लाइला इल्लिल्ला" यह कलमा जो इसलाम की जड़ है " एकमेवा द्वितीयंब्रह्म " इसका हू बहू अनुवाद है—इसी प्रकार कुरान के सूरत फातिहा की पहली आयत यजुर्वेद के ४० वें अध्याय के १६ वें मंत्र का आर्थिक ही नहीं किन्तु शाब्दिक अनुवाद है।

देखिये स्पष्ट रीति पर मुहम्मदसाहबने अनुकृति (नकल) की—और इस बातकोस्वीकार करनेके स्थान में कि मैंने वेदा-नुयायियोंसे परमेश्वरकी एकता (तौहीद) का ज्ञान प्राप्त किया—स्वयं ईश्वरीयज्ञान के वादी (इलहाम के मुद्दई) बनबैठे अब निष्पक्ष लोग झूंठ और सच का निर्णय करेंगे ॥

आप के कलमें में मुहम्मदसाहबका नाम होना एकता की जड़ में कुल्हाड़ी मारता है—और परमात्मा के अनुपम होने में सन्देह डालता है—यदि हमभी आपकी तरह आग्रह और हठसेकामलें तो अल्लाह चूंकि एक पर्वतका नाम है और रह-मान मसीमाका (जिसने तुम्हारे मतानुसार झूंठ मूंठ पैग-म्बरीका दावा कियाथा) इसलिये(बिस्मिल्लाहरहमानुलरहीम) का यह अर्थ करसकते हैं कि प्रारम्भ करताहूं मैं इस कुरानको उस पहाड़ वा पत्थरके नाम से कि जिसका मालिक मसीलमा रहीम है—पस इस दशा में कुरान की बिस्मिल्लाह ही गलत होजाती है जोकि प्रकाश से हटाकर मनुष्यों को अन्धेरे में लेजाती है ॥

अब हम मुख्यनाम (इस्मआज़म) की समालोचना करते हैं—गयासुल्लुगात लिखता है—इस्म आज़म की स्थिति में बहुत कुछ सम्मति भेद है—कोई अल्याह, कोई समुद्र कोई हय्यु-लकयूम कोई रहमानुलरहीम और कोई मुहीमन को इस्म आ-ज़म मानते हैं—परमेश्वर ही जानेकि इन में कौनसा इस्म आज़म है।

सय्यद नासिरुद्दीन मुहम्मद अबुल मन्सूर कहते हैं कि

यहूवाह जिसके मानीहैं जो अपने आप ही ईश्वरका प्रधाननाम है—मुसलमान अल्लाहको प्रधाननाम मानते हैं और ईसाई व यदि आदि मुसलमानोंकी अपेक्षा कई प्रबल हेतुओं से यहू-वाह शब्दको ईश्वर का मुख्य नाम मानते हैं।

(१) कुरान में जो उत्तमताये तौरेत की लिखी हैं—उनमें सबसे बड़ी उत्तमता यहूवाह नामसे है जो तौरत में ईश्वर का मुख्य नाम मानागया है—पस जो शब्द तौरते के लिये प्रधान है वही कुरान के लिये भी होना चाहिये।

(२) यह अवश्य है कि प्रधान नाम लोपागम और वर्ण विकारसे रहित हो और वह लिंग वचन आदिसे भी बद्धनहो। कुरानमें अल्लाह शब्द का बहुवचन मौजूद है और इबरानी में अलवहैम। परन्तु यहूवाह शब्दमें कुछ भी मिलावट नहीं।

(३) अल्लाह शब्द पत्थरों के लिये भी आया है देखो सूरत वलसाफ़ात रकूअ ३ व सूरत फुरक़ान र.कूअ इसी तरह

(४) तौरेत आदि में भी अलवहैम काजी व मुफ़ती के लिये आया है देखो ८२ जबूर १ व ख़रूज २१—६ परन्तु यहू-वाह शब्द सिवाय ईश्वर के और किसी के लिये नहीं आया।

अल्लाहका अर्थ उपासना और यहूवाह का अर्थ जो था और है और सदा रहेगा। पस अर्थकी गुरुता और योग्यता से भी यहूवाह प्रधान नाम ठहरता है। अल्लाह शब्द के मुख्य नाम होनेमें कोई प्रमाण नहीं किन्तु कुरान में तो सूरत बनी इसराईल में साफ़ लिखा है जिसका तर्जुमा यह है कि अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान कह कर जो कहकर पुकारोगे सो उसी के हैं नाम खासे" परन्तु यहूवाह अपना नाम ईश्वर ने अपने मुंह से खास तौरपर बतलाया था। ख़रूज १३–१४ पस इन हेतुओं से जो साहिब किताब देते हैं हमने जाना कि ईसाई पादरी शब्द उलवहैम से कि जो बहुवचन है एक परमात्मा में (तसलीस) तीनका होना मानते हैं। और यदि ऐसा होता तो यह अलवहैमबुतों काजियों और मुफ़्तियों के लिये कभी प्रयुक्त न होता क्योंकि सबूत तसलीस के वास्ते प्रधाननाम अर्थात् यहूवाह बहुचन में होना चाहिये था और

अलवहैम अहले किताबके ही मन्तव्यानुसार प्रधाननाम नहीं है। दौलत फ़ारुकी पृ० १३ व ४०२ रुकुन १ बाव १ देहली।

आनरेबुल सरसय्यद् अहमद् खाँ साहब ने लिखा है कि अल्लाह जिससे अलूह शब्द निकला है और इलूहैम जिसका बहुवचन है गौणिक नाम है प्रधान नहीं यह झूठे और सच्चे दोनों प्रकार के उपास्यों के लिये आता है बाइबिल के बहुत से प्रमाण दियेहैं और प्रधान नाम यहूवाहको वतलाते हैं। देखो तसनीफात अहमदिया बाव १ पृ० ३२३ व ३२४।

पादरी अबदुल्ला आथम साहब लिखते हैं कि यहूवाह जो तौरेत में ईश्वरका प्रधान नाम है वह ऋग्वेद में भी मौजूद है (माहियत ऋग्वेद पृ० १) और ऐसा ही मौनियर विलियम साहब ने भी इण्डियन विज़डम में प्र बल हेतुओं से लिखा है। (देखो उक्त पुस्तक)

ओ३म् जो वेदों में ईश्वर का मुख्य नाम है उसके विषय में स्वामी दयानन्द् जी लिखते हैं कि यह परमेश्वर के नामों में सर्वोत्तम नाम है, ऐसा ही योग, मनु और उपनिषदों ने इसका व्याख्यानकिया है ओ३म् का द्विवचन और बहुवचन भी नहीं। वह स्त्री पुत्रपुन्सक इनतीनों लिंगों से रहित है सातों विभक्तियों में उसके रूप एक जैसे रहते हैं अरबी व ईरानी जैसी अपूर्ण भाषाओंने अल्लाह शब्द की विभक्ति करदी। परन्तु संस्कृत जैसी पूर्ण भाषा ओ३म् का विभाग न करसकी। पस वह पुस्तक जिसमें यहूवाह अल्लाह और ओ३म् यहतीनों नाम मौजूद हैं अर्थात् वेद आज्ञा करते हैं कि न अल्लाह प्रधान नाम है और न यहूवाह किन्तु एक ओ३म् है जिस में किसी प्रकारकी मिलावट या बनावट नहीं होसकी यजुर्वेद की समाप्तिपर भी "ओ३म् खं ब्रह्म" लिखाहुआ है अतः ओ३म् ही परमात्मा का प्रधान नाम है शेष सब गौण।

दूसरा अध्याय।

ईश्वरीय ज्ञान।

मनुष्य की बुद्धिमें भूल है —आग्रहकी कोई उस को सच्चे

मार्ग से फिसला देती है—स्वार्थ की रज उसके बुद्धि के नेत्रों को धुधला करदेती है—पूर्णविद्या और विशेष अनुभवके विना बुद्धि में विकाश नहीं होसकता पाठकों के जानने के लिये हम नीचे इसका कुछ निदर्शन करते हैं।

विदित हो कि इस समय पृथिवी में मनुष्यों की संख्या दो अरब के लगभग है—और उसमें इतनी गड़बड़ मची हुई है कि जिसका कुछ ठिकाना नहीं—(१) कोई तो परमात्मा को ही नहीं मानते—(२) कोई अपने आप कोही ईश्वर जानते हैं और संसारको संसार नहींमानते किन्तु ब्रह्मका ही स्वरूप समझते हैं—(३) कोई दो कर्त्ता मानते है एक पुण्य का कर्त्ता दूसरा पापका—(४) कोई तीन ईश्वर मानते हैं और तीनों का दर्जा बराबर जानते हैं—(५) और कोई महात्मा संसार और उसके पदार्थों की सत्ता कोही नहीं मानते—(६) बहुतसे लोग ईश्वर या पूर्वजों और अवतारोंकी मूर्ति बनाकर पूजते हैं-(७) करोड़ों मनुष्य क़बरों, मढ़ियों, मसानों, जानवरों, वृक्षों और पहाड़ोंको मानते और उनसे मुरादें मांगते हैं—(८) कोई पढ़ लिखकर भी अन्धेरे में रहे मरते समय (वसीयत) आज्ञाकर गये कि अमुक मृतकके नामसे मेरे वास्ते कुक्कुटकी वलिदेना—(९) और कई पढ़े लिखे छिपकलियोंकी पूजा करतेथे—(१०) कोईमत प्रवर्तक और उसके करोड़ों अनुयायी आसमानों पर खुदाको मानते और उसके साकसीमों (चांदीकीपिण्डली) के दर्शनोत्सुक हैं—ईश्वर को अनुयायी, मायावी हिंसक और अत्याचारी, भूलनेवाला, शोक और पश्चात्ताप करने वाला, बुरी

---

(१) बौद्ध, जैनी, चारबाक, एथीस्ट और चेतरामिये (२) अद्वैतवादी, सफ़ी, गुलाबदासी, और निर्मलेसाधु (३) मजूसी, मुहम्मदी और यहूदी (४) ईसाई और हिन्दू त्रिमूर्ति अर्थात् ब्रह्माविष्णु महेशके माननेवाले (५) सूफ़िस्तानिये अद्वैतवादी, और शून्यबादी (६) रोमनकैथोलिक, शैव, वैष्णव, जैनी, बौद्ध और कुछ यवनों के सम्प्रदाय (७) सम्पूर्ण यवन, सरवरिबेलिफ्न, हिन्दू और कुछ रोमनकैथोलिक ईसाई और बौद्ध लोग जुहड़े चमार क़बतियाममिसर (८) कोईर यूनान व

दृष्टि से डरने वाला इत्यादि मानते तथा जादू टोने और भूत प्रेत के विश्वासी होकर सचाई से दूर होगये—(११) कोई ईश्वर को मनुष्य के शरीर में आने वाला मानते और कोई मनुष्य पूजाके भँवर में पड़कर ईश्वर से विमुख होगये हैं (१२) कोई युक्ति और प्रमाण से ईश्वर के एकत्व को स्थापन करते और उसको सम्पूर्ण दोषों से पृथक् जानते हैं—और उसके गुणों में परस्पर विरोध भी नहीं मानते (१३) कोई देवताओं, फिरिस्तों, पैगम्बरों और सितारों का और कोई तत्वोंको पूजते हैं (१४) कोई अपनी पूजा चाहते हैं—और अपने क्षुद्र मन्तव्यों को इलहाम (दैवीय प्रेरणा) बतलाकर भोले भाले लोगों में अपनी महत्व जमाना चाहते हैं (१५) कोई मूर्तियों को (१६) कोई शिवलिंग और जलहरी को (१७)कोई स्त्रियों के गुप्त स्थान को पूजते हैं और कोई घोड़े के मूलेन्द्रिय को पूजते हैं (१८) कोई मा बहन से मैथुन करने में पाप नहीं मानते (१९) और कोई दत्तकपुत्र की स्त्री से (२०) और कोई सिर्फ़ बहन से (२१) और कोई चचा ज़ाद बहन से विवाह करने में बुराई नहीं समझते।

(२२) कोई मांस खाना पाप समझतेहैं (२३) और कोई किसी जानवर को भी नहीं छोड़ते (२४) कोई सिर्फ बारह

मिसरके हकीम (९) मुहम्मदी (१०) सारे मुहम्मदी ईसाई और यहूदी मुहम्मद, ईसा व मूसा पैगम्बर (११) हिन्दू, ईसाई सूफी, वैरागी, शीया, शमशी और मज़ीदिया मुसलमान (१२) आर्य्य व साहद लोग (१३) हिन्दू मुसलमान, डकूत और अरब के काफिर, जैनी, बौद्ध (१४) देव धर्मी, ब्राह्म, शम्सी और गोकुलिये गुशाईं (१५) सारे हिन्दू और जैनी (१६) शिवपुराण व लिंगपुराण के मानने वाले (१७) सारे बाममार्गी और मशअलकशी और इस्माईली पंथवाले (१८) बाममार्गी नरोंकी (१९) मुहम्मद साहब (२०) इबराहीम साहब (२१) सारे मुसलमान (२२) आर्य वेजीटेरियन्स लोग जिनमें सैकड़ों डाक्टर हैं, प्राचीन बौद्ध और नामधारी सिक्ख (२३) ईसाई, बाममार्गी, अघोरी (२४) मुसलमान

को (२५) और कोई गाय को अभक्ष्य (२६) और कोई किन्हीं को भक्ष्य और किन्ही को अभक्ष्य जानते हैं ।

(२७) कोई विवाह में जूती पैजार चलातेहैं (२८) कोई होली में (२९) कोई घोड़े और मनुष्य के चित्र से सन्तान माँगते हैं (३०) कोई कबरोंसे कोई मुस्टण्डे फकीरों से (३१) कोई मुक्ति के लोभ से देशों को लूटते और निरपराधियों को मारते हैं (३२) कोई काम क्रोध को मारते हैं (३३) कोई देवताओं के नाम पर मनुष्य की और कोई अन्य जन्तुओं की बलि चढ़ाते हैं और कोई ईश्वरके नाम पर निरपराध प्राणियों को वध करते हैं (३४) कोई अन्यों की स्त्रियों से जो लूट में लाई जावें व्यभिचार करना बुरानहीं समझते और (३५) कोई पाप समझते हैं (३६) कोई बिलकुल ईश्वरीय ज्ञान को नहीं मानते (३७) कोई तौरेत और जबूरको ईश्वरीय ज्ञान मानतेहैं (३८) कोई तौरेत, जबूर और इञ्जील को (३९) कोई तौरेत जबूर, इञ्जील और कुरान को (४०) कोई सिर्फ इञ्जील को (४१) कोई जिन्दावस्ता को (४२) और कोई सिर्फ वेद को (४३) बहुत से लोग आवागमन को मानते हैं (४४) और

---

(२५) हिन्दू लोग (२६) यहूदी (२७) अंगरेज लोग (२८) हिन्दू लोग (२९) शीया लोग और कुछ इमामिया हिन्दू और (३०)कुछमुसलमान(३१)मुसलमानगाज़ी(३२)योगी व आर्यधर्म के विद्वान लोग (३३) हिन्दू,भील, मुसलमान और यहूदी (३४) मुसलमान, यहूदी, और कट्टर ईसाई और मूर्ख हबशी (३५) सब आर्य और सभ्य ईसाई (३६) ब्राह्म, देवधर्मी और नास्तिक (३७) यहूदी (३८) ईसाई (३९) मुसलमान परन्तु पहिली तीन पुस्तकों पर अमल नहीं करते उनको प्रथिपिद्ध (मन्सूख) समझते हैं (४०) ईसाइयों का एक सम्प्रदाय (४१) पारसी (४२) आर्य व पारसी (४३) आर्य, बौद्ध, जैनी, प्राचीन यहूदी, मुसलमानों के शीया और तनासुखिया फिरके, यूनान, चीन, मिसर, फ्रान्स और जरमन के बहुधा डाक्टर लोग, थियासोफिस्ट, पारसी और प्राचीन समय के सब लोग ।

कोई इसको नहीं मानते (४५) कोई जीवको सादि और नित्य मानते हैं (४६) और कोई अनादि और नित्य मानते हैं (४७) और कोई उसको मानते ही नहीं—और मनुष्य के सिवाय और किसी प्राणी में जीव नहीं मानते (४८) कोई सात आसमान मानते हैं (४९) और कोई आकाश को शून्य मानते हैं और कोई तर्क से उसका कुछ न होना सिद्ध करते हैं ॥

(५०) कोई आकाश को भ्रमण शील और पृथिवी को स्थिर और पहाड़ों को मेखें मानते हैं (५१) बहुधा लोग आकाश को दृष्टि की सीमा और पृथिवी को घूमने वाली मानते हैं—

(५२) कोई भूत, जिन्न और जादू, मन्त्र के विश्वासी हैं (५३) और कोई इसको बिलकुल बनावट, धोखा और मूर्खता समझते हैं (५४) कोई काबे की तरफ सिजदा करते हैं (५५) और कोई बैतुल मुकद्दस की तरफ और उनको खुदाका घर मानते हैं (५६) कोई ईश्वर को एक देशी नहीं समझते किन्तु सर्व व्यापक और सर्वगतजानते हैं (५७) कोइ तूफान नूह के आन की आशा करते हैं (५८) और कोई इसका अणुमात्र भी विश्वास नहीं करते (५९) कोई इस सृष्टि को ४००० वर्ष या ७००० वर्ष से उत्पन्न हुआ मानते हैं (६०) और बहुधा लोग १ अरब ९६ करोड़ वर्ष से (६१) कोई संसार को अभाव

---

(४४) मुसलमानों के कुछ फिर्के और देवधर्मी और ईसाइयों के कुछ फिर्के (४५) मुसलमान और ईसाई ब्राह्म (४६) आर्य्य, बौद्ध, जैनी और तत्वदर्शी (४७) एथीस्ट, ब्राह्म और ईसाई (४८) मुसलमान और ईसाई (४९) आर्य्य और ज्योतिष विद्या के जानने वाले (५०) मुसलमान (५१) आर्य्य और पदार्थ विद्या के जानने वाले (५२) मुसलमान ईसाई, मूर्ख हिन्दू भील गोण्ड इत्यादि (५३) आर्य्य और डाक्टर लोग (५४) मुसलमान (५५) ईसाई व यहूदी (५६) आर्य्य (५७)ईसाई व मुसलमान व यहूदी (५८) आर्य, जैनी, पारसी (५९) ईसाई, मुसलमान, यहूदी (६०) आर्य और भूगर्भ तथा ज्योतिष विद्या के जानने वाले (६१) मुसलमान और

से भाव में आया हुआ मानते हैं (६२) और कोई भाव से भाव की उत्पत्ति मानते हैं—अर्थात् परमात्माके कोषमें अभाव का होना नहीं मानते।

(६३) अनेक लोग परमात्मा के ज्ञानको पूर्ण और एक रस मानते हैं और फिर उसमें न्यूनाधिक व प्रतिषेध होना नहीं मानते–किन्तु पाप समझते हैं (६४) और कोई आदेशों को परिवर्तन शील और अदलने बदलने वाला मानकर अपने से पहिलेकी सम्पूर्ण पुस्तकों को प्रतिसिद्ध (मन्सूख) जानतेहैं–जैसे गवर्नमेएट के वार्षिक एक्ट या सरक्युलर बदलते रहतेहैं (६५) बहुत लोग मुर्दे का जलाना ठीक समझतेहैं, और प्रबल हेतुओं से बतलाते हैं कि दाह करने से वायु जल और भूमि आदि की शुद्धि होती है जिनसे रोग उत्पन्न नहीं होने पाते– (६६) कोई भूमि में दबाना (६७) कोई हवामें रखदेना (६८) और कोई पानी में डालदेना ठीक जानते हैं।

इन सब बातों पर ध्यान देने से ज्ञात होता है कि मनुष्यों की प्रकृति और रुचि भिन्न होने से उनके मन्तव्यों में बड़ा भेद है। समय के परिवर्त्तन से मनुष्यों के विचारों में भी बहुत कुछ अन्तर पड़ता रहता है—एक समय में मनुष्य के कुछ विचार होते हैं—दूसरे समय में वही कुछ और हो जाते हैं—मतान्तर और वेषान्तर से भी इसकी पुष्टि होती है—हजारों मुसलमान, ईसाई, ब्राह्म, बौद्ध और आर्य होगये और इसी तरह हजारों ईसाई भी अन्यमतों में प्रविष्ट होगये और होते जाते हैं। एवमेव यही दशा बौद्ध और ब्रह्ममतों की भी है। इस समय लाखों मनुष्य जो वैदिक धर्म की छाया में आरहे हैं। यह कहां से आते हैं इन्हीं आधुनिक सम्प्रदायों में

ईसाई (६२) आर्य, जैनी, पारसी और सायन्सवाले (६३) आर्य लोग (६४) मुसलमान ईसाई यहूदी (६५) आर्य्य, बौद्ध, जैनी, डाक्टर, विद्वान् ईसाई और थियासिफिस्ट लोग (६६) मुसलमान और ईसाई (६७) पारसी लोग (६८) सावह लोग।

से—स्वयं योरूप के विद्वान् जो वैदिक फिलासफी पर मोहित होरहे हैं क्या किसी शस्त्र के भयसे—कदापि नहीं—वास्तव में अब प्रकाश का समय है—लोग झूंठे मतों से निकलकर सत्य की शरण लेरहे हैं सूर्य्य के उदय होने से लैम्प (चिराग) फीके पड़ते जाते हैं—इसलिये हमको भी उचित है कि इस गड़बड़ाध्याय को दूर करके सचाई का प्रकाश करें—प्रत्येक बुद्धिमान जो इन भिन्न २ मत और सम्प्रदायों को देखेगा—वह यही कहेगा कि यह सत्य नहीं हैं—सत्य केवल एक है और वह जहां है वहां अपना प्रभाव दिखाये विना नहीं रहसकता इन सारी प्राकृत बुद्धियों का कोई एक नियन्ता वा व्यवस्थापक या कसौटी होनी चाहिये कि जिसपर यह रक्खी जावें। और वह कसौटी सिवाय ईश्वरीय ज्ञान के (जो सब प्रकार पूर्ण बुद्धिके अनुकूल और अदल बदल रहित हो) और कोई हो नहीं सकती।

परमात्मा के सर्व व्यापक होनेसे यह बुद्धि किसी प्रकार अङ्गीकार नहीं करती कि वह किसी आसमान पर हो—और अब जो विद्या बुद्धि ने यह निश्चय करादिया है कि आसमान कोई वस्तु नहीं किन्तु शून्य का नाम है तो फिर कोई इलहाम या आस्मानी किताब भी नहीं होसकती—और जब आसमान नहीं तो फिर जबराईल या मैकाईल या अज़राईल या असराफील या जबराईल कहां हैं—और शैतान कहां रहता है—यह सब बनावटी बातें हैं।

इसलिये आवश्यक है कि सर्वव्यापक परमात्मा अपनी अपार करुणा से किसी पवित्र और शुद्ध संकल्प मनुष्य को सृष्टि की आदि में अपने पवित्र और पूर्ण ज्ञानसे अलंकृत करें और ऐसे ज्ञान का प्रकाश किसी चिट्ठीरसा (पैगम्बर या एलची के द्वारा नहीं होसकता, किन्तु स्वयं सर्वान्तर्यामि परमात्माही उसका कारण होसकता है—और सिवाय शुद्ध संकल्प और पवित्र चरित्र मनुष्य के और कोई उसका अधिकारी नहीं होसकता—बस सर्व शक्तिमान भगवान ने भूल, झूंठ और पक्ष से रहित, सत्य और न्याय से प्रकाशित, युक्ति और

प्रमाण से गर्भित वेद का जिसके अर्थ ही ज्ञान के हैं सृष्टि के आदि में चार ऋषियों के हृदय में प्रकाश किया और वही अब तक विद्यमान हैं और रहैगा।

वेद के ईश्वरीय ज्ञान होने का एक मनोहर व्याख्यान।

आवश्यक है कि ईश्वरीय ज्ञान (इलहामी किताब) दूसरी पुस्तकों से विशेष रीतिपर उत्कृष्ट हो-और उस में ऐसे गुण व विशेषण हों जो अन्य पुस्तकों में न मिलसकें क्योंकि कोई मनुष्य ईश्वरीय गुणों की कभी और किसी की भी समता नहीं करसकता—जिस प्रकार ईश्वर रचित सूर्य्य, चन्द्र आदि पदार्थ अनुपम हैं-वैसाही उसका ज्ञानभी अद्वितीय होना चाहिये जिस ईश्वरीय ज्ञान में पहिली बात यह होनी चाहिये कि वह सृष्टि की आदि से प्रलय पर्य्यन्त रहे—अर्थात् जब से मनुष्य सृष्टिका आरम्भ हो तबसे उसका प्रकाश हो और जब तक मनुष्यों की सृष्टिरहे तबतक वह प्रचलित रहे।

हम जब इस बातकी विचारणा या परीक्षा करते हैं कि अमुक वस्तु अमुक से पहली है तो उसके लिये ऐसे चिन्ह ढूंढा करते हैं जो प्राचीनत्व और नूतनत्वके लक्षक हों-अतएव हम यहाँपर ढूंढ़ना चाहते हैं कि वह कौनसे चिन्ह हैं।

कुरान यह पुस्तक जिसे मुहम्मदी लोग इलहाम मानते हैं १३०० वर्षसे है-उससे पहले इञ्जील, जबूर, तौरेत और जिन्दावस्था प्रचलित थीं नौशेरवाँ (जिसके समय में मुहम्मद साहब हुए) पारसीथा-मुसलमान पारसी एकमनुष्य मुहम्मद साहब के सहचरोंमें से अग्निपूजकथा इञ्जील, जबूर तौरेत का नामभी कुरान में आया है इससे सिद्ध है कि यह सब पुस्तकें कुरान से पहले की हैं।

इञ्जील (जिसको आज लगभग १९०० वर्ष होते हैं) को ईसाई लोग ईश्वरीय पुस्तक मानते हैं-इसमें कुरान या उसके समय की पुस्तकोंका नाम या लेख कहींपर नहीं है हां तौरेत

और ज़बूर की प्रतीक या साक्षी बहुत स्थलोंमें है और व्यतीत (गुज़रे हुए) लोगों के इतिहास जहां तहाँ मौजूद हैं-इसके अतिरिक्त मजूसी मतका भी वर्णन है-स्वयं ईसा की उत्पत्ति के समय मजूस लोग यरूशलम में गये थे। मत्ती की इञ्जील बाब २ आयत १०७।

इससे स्पष्ट प्रगट है कि ईसा से पहले यहूदी और पारसी लोग मौजूद थे और उनकी पुस्तकें ईसासे पहली थीं।

ज़बूर दाऊद बादशाह की बनाई हुई है जिसको हुये आजतक २६५२ वर्ष होते हैं-इसमें तौरेत और मूसा आदि पैग़म्बरों का वर्णन है और पारसियों की पुस्तकों की प्रतीकें मिलती हैं परन्तु इञ्जील और क़ुरानका पतानहीं-इससे जाना जाता है कि यह पुस्तक मूसा से पीछे और इञ्जील व क़ुरान से पहले बनाई गई॥

तौरेत यह पुस्तक मूसानवी और उसके एक शिष्य की रचना से है-जिसको आजतक ३३४७ वर्ष होते हैं-इस ग्रन्थ में न दाऊद का नाम न मसीह का और न मुहम्मद का न ज़बूर, न इञ्जील और न क़ुरान का-हाँ अपने से पहले नबियों के नाम उसमें लिखे हैं-अर्थात् आदम, नूह, लूत, इब्राहीम, याक़ूब, इसहाक़, यूसुफ और मिसरके क़ब्ती और पारसी मतके चिन्ह उसमें मिलते हैं यहाँ तक कि मूसा की शिक्षा सारीकी सारी ज़रदुश्त के मतकी अनुकृति (नक़ल) हैं इब्राहीम जो मूसा से पहले हुआ है उसके समय में भी मजूस विद्यमान थे मुसलमानों के आचार्य शेखसादी (शीराज़ी) बोस्तां में ख़लील पैग़म्बरका (जो अग्निपूजकथा) इतिहास इस तरह पर लिखते हैं कि एक दिन इब्राहीम और ख़लील दोनों साथ २ रोटी खाने बैठे इब्राहीम ने ख़ुदा का नाम लिया परन्तु ख़लीलने न लिया इसपर इब्राहीमने उसको कहा यह उचित नहीं है कि भोजन खानेके समय तू भोजन (रोज़ी) देनेवाले का नाम न लेवे-उसने कहाकि यह रीति अच्छी नहींहै-मैंने किसी अग्निपूजक से इसकी विधि नहीं सुनी—इसपर इब्राहीम ने बड़ी अवज्ञा के साथ उसको निकाल दिया क्योंकि नास्तिक

आस्तिकों के सामने अपवित्र होता है—तब खुदाने इब्राहीम के पास जबराईल फरिश्ते को भेजा—उसने आकर इब्राहीम से कहा—यदि वह आग को सिजदा करता है तो करने दे तू क्यों अपनी सखावत (उदारता) के हाथ को उसकी ओर से खींचता है मैने दी इसको रोज़ी और जान सौ वर्ष तक। तू क्यों एक टुकड़े रोटी के लिये उसको निकालता है-इसी प्रकार इसलामी इतिहासों में इसके बहुत से चिन्ह पाये जाते हैं—जिससे स्पष्ट अवगत होता है कि ज़रदुश्त मजूस मतका बानी मूसा व इब्राहीम से बहुत पहले हुआ है—

ज़िन्द अवस्था ग्रन्थ जिसका दूसरा नाम सफरङ्गदसातीर भी है और जो ज़रदुस्त पैगम्बर का बनाया हुआ है उस में स्पष्ट रीतिपर वेदों का नाम चारों वर्णों का कर्त्तव्या कर्त्तव्य, यज्ञोपवीत का विधान, हवन के लाभ, आवागमन का होना माँस भक्षण निषेध इत्यादि विषयों का उल्लेख है और आर्यों का नाम लेकर उनको अपना वृद्ध (बुज़ुर्ग) मानाहै-व्यास के विषय में लिखा है कि उसका बलख में ज़रदुस्त से शास्त्रार्थ हुआ था—गोरक्षा की भी उसमें शिक्षा है—इससे सिद्ध है कि वेद से वह पीछे का है—और तौरेत, ज़बूर, इञ्जील और कुरान इन सब से ज़िन्दावस्था पहिली है-हम पुष्ट प्रमाणों से बतलाचुके हैं कि व्यास जी को हुए आज तक ४६६० वर्ष हो चुके—मूसा के दस हुक्म मनुस्मृति से लिये गये हैं यही नहीं किन्तु तौरेत सामान्यतः मनुस्मृति की नक़ल है—मूसा के समय में आर्य्यावर्त्त में वैदिक धर्म विद्यमान था और मनुस्मृति तौरेत से बहुत पहिली है जिसकी साक्षी यूरोप के विद्वानों ने भी दी है—(देखो प्रसिद्ध भाषावित् डाक्टर मार्टिन हाग साहिब की पुस्तक पृ० ६९ व ७० और जिन्दावस्था बाब होम पृ० आयत १७ परन्तु मनुस्मृति में वेदों का वर्णनहै—व्याससे पातञ्जलि पहले हुएहैं क्योंकि पातञ्जल योग शास्त्र का भाष्य व्यास ने किया है—उसमें भी वेदों का नाम आया है—व्यास से सहस्रों वर्ष पूर्व गौतम हुये हैं—उनके न्याय दर्शन में भी वेद का व्याख्यान है—उनसे बहुत

पहले कणाद हुए हैं, वह भी अपने वैशेषिक दर्शन में वेदों का अपौरुषेय होना मानते हैं।

बुद्धशास्त्र (जिसके अनुयायी इस समय भी संसार में ५४ करोड़ के लगभग हैं) का निर्माता बुद्ध मसीह से ६३० वर्ष पहले हुआ वह भी अपने ग्रन्थ के सूत्र २ में वेदों का वर्णन करता है।

वेद में किसी ग्रन्थ या किसी सम्प्रदाय का उपाख्यान नहीं है—परन्तु और सब ग्रन्थों में किसी न किसी रीतिपर वेदों का आख्यान है और शतशः इङ्गलैण्ड, फ्रान्स और अमेरिका के विद्वानों की साक्षियें विद्यमान हैं कि पृथिवी के पुस्तकालय मे वेदों से प्राचीन और कोई पुस्तक नहीं है—और यह तो आपको भी स्वीकार है जिसको आपने इतिहास के प्रमाण से लिखा है कि ऋग्वेद एक अत्यन्त प्राचीन पुस्तक है-हुज्जतुल हिन्द पृ० १०।

इन सब प्रमाणों से सिद्ध है कि वेद सब से प्राचीन है जो पृथिवी की सब पुस्तकोंसे पहली पुस्तक है,अतएव यह पहली विशेषता सिवाय वेद के दूसरी पुस्तक में नहीं मिलसकती।

दूसरी बात यह होनी चाहिये कि वह ईश्वरीय ज्ञान ऐसी भाषा में हो-जो सब भाषाओं से उत्कृष्ट हो क्योंकि परमात्मा अपने सब गुणोंमें मनुष्यों से विशिष्ट है—

प्रमाण।

भाषाओंकी परीक्षा जैसी आजकल हुईहै वैसी पहले कभी नहीं हुई और जितनी छानबीन यूरोप के विद्वानों ने इस विषय में की है—वह वास्त में आदरणीय और धन्यवाद के योग्य है और सबसे अधिक उदारता उनकी यह है कि वहलोग हमारे मतके नहीं—पर तौभी उन्होंने अपनी निष्पक्षसम्मति प्रगट की है—हम यहाँपर उनकी बहुमूल्य सम्मति (जो उन्होंने बड़ी परीक्षा और खोज करनेके पश्चात् दीहै) प्रगटकरना चाहतेहैं॥

आनरेबुल सरविलियम जौन्स साहब लिखते हैं संस्कृत

यूनानी से अधिक पूर्ण और रूमी से अधिक विस्तृत और दोनों से अधिक ललित और मनोरम है (तहक़ीक़ात हालात एशिया जिल्द १ पृ० ४२२)

प्रोफेसर मौलवी ज़काउल्ला साहब लिखते हैं भाषाओं की गहरी छानबीन से यूरोपियन लोगों ने एक बड़ी गूढ़बात मालूम की है और वह यह है कि आर्यभाषा एशियाकी आधीभाषाओंकी और यूरोपकी लगभग सब भाषाओंकी जड़ है, सुतरां बहुतसी भाषायेंजो इदानी सभ्यता और विद्यासे परिपूर्ण समझी जाती हैं, वह इसी से उत्पन्न हुई मालूम होती हैं, इससे जाना जाता है कि यूनान,रोम,जरमनी, फ्रान्स, इङ्गलैण्ड, हिन्दोस्तान और ईरान इन सब जाति (नस्ल) का एक सिलसिला है। देखो तारीख़ हिन्द १ हिस्सा १ बाब १ फसल पृ० २२।

एक और प्रतिष्ठित व परीक्षक विद्वान् आनरेबुल मोन्ट स्टुवार्टइल फन्स्टन् साहब भूतपूर्व गवर्नर बम्बई लिखतेहैं कि संस्कृत भाषा का व्याकरण इतना विस्तीर्ण है कि मनुष्य की वाक्य रचना के नियम सारी पृथ्वी में यदि निर्धारित हुए हैं तो उससे अधिक नहीं हुये। तारीख़ हिन्दुस्तान बाब ५ पृ० २७७ सन् १८६६ ई०।

इस विषय में जो अधिक देखना चाहें-वह नुस्खे खब्त-अहमदिया और तकज़ीब बराहीन अहमदिया को देखें।

संस्कृत के सम्पूर्ण ग्रन्थोंमें वेद सबसे प्राचीन और उत्कृष्ट ग्रन्थ हैं जिनके विषय में एक निष्पक्ष पादरी साहब लिखते हैं निस्संदेह कोई मनुष्य वेद की जैसी संस्कृत नहीं बना सकता इसपर बड़े २ पण्डित लोग भी सहमत हैं कि वेद की शब्द रचना मनुष्यों की शब्द रचना से विलक्षण है।

एक तो वेद ऐसी पुस्तक हैं जो सब से प्राचीन हैं दूसरे वह ऐसी भाषा में है जो सबसे विलक्षण और विचित्र है। अतएव सिवाय वेद के और कोई ईश्वरीय ज्ञान नहीं होसकता इत्यलं तत्।

तीसरी बात यह होनी चाहिये—कि उसमें मनुष्यों के

इतिहास, सम्वाद और चरित्र न हों-क्योंकि जिस पुस्तक में ऐसी घटनायें होतीहैं वह उन घटनाओंके पश्चात् लिखी जाया करती है-ऐसी बातें लिखने या सीखने के लिये ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता नहीं। ऐसी बातों को मनुष्य बिना इलहाम के जान सकता है। और यदि ऐतिहासिक बातें सिखाना इलहामका काम है तो एक ऐसा इतिहास जो सृष्टि की आदि से लेकर अन्ततक सब मनुष्यों के चरित्रों से भरा ही होना चाहिये—और यह असम्भव है—क्योंकि वह पुस्तक इतना बड़ा हो जावेगा कि कोई मनुष्य उसे कभी पढ़ न सकेगा। अतः ईश्वरीय ज्ञान जो सब मनुष्यों के लिये समानहै वह माननीय चरित्रों से अलग होना चहिये। क्योंकि सृष्टि की आदि में ऐसी घटनायें नहीं थीं।

प्रमाण

इस समय जो पुस्तकें (जिन पर लोगों का विश्वास है, है कि वह ईश्वरीय ज्ञान हैं) यथा कुरान, इन्जील, ज़बूर, तौरेत और जिन्दावस्था इन सब में किस्से कहानियां भरी हुई हैं जिनसे इलहाम का कोई सम्बन्ध नहीं।

जैसे कुरान में आदम, ईसा, मूसा, इब्राहीम, नूह दाऊद, लूत और सुलेमान का पत्रव्यवहार-यूसुफ,ज़ुलेख़ा,लुक़मान, सिकन्दर, असहाबकहफ़, ख़िज़र और इलियास आदि की कहानियाँ हैं।

इञ्जीलमें मत्ती,लूका,मुरक्किस,यूहन्ना,मरियम,ज़कूरिया, हेरोडियस, ईसा, मूसा, और पोलूस का पत्रव्यवहार और इन्द्र्यास, शमऊन आदि की कहानियाँ हैं।

ज़बूर में मूसा, इब्राहीम, इसहाक़, और दाऊद के चरित्र और सुलेमान की कहानियाँ और लड़ाई झगड़े हैं।

तौरेत में आदम, नूह, इब्राहीम, लूत, और उसकी पत्नी, इसहाक़, इस्माईल, यूसुफ, फ़रऊन, मूसा व यशूअ आदि की

कहानियाँ हैं।

जिन्दावस्था में जमशैद, हौशङ्ग, फ़रेदूं कैखुसरों आदि की कहानियाँ हैं।

परन्तु वेद में किसी पुस्तक या नगर या मनुष्य का नाम तक नहीं—उनके चरित्र और गाथा की तो कथा ही क्याहै,महा भाष्य जो वेदों का प्राचीन व्याकरण है और पूर्व मीमांसा जो वैदिक शब्दों के प्रयोग और परिभाषा बतलाती है इस बातका दृढ़ प्रमाणों से सिद्ध करते हैं कि वेदमें सब योगिक शब्द है रूढ़ि कोई नहीं—किसी अवतार या ऋषि या राजा या विद्वान् का इतिहास वेद में नहीं है—अतः इस विशेषण के विशेष्य वेदही ठहर सकते हैं न कोई और।

चौथीबात यह होनी चाहिये कि उसका एक वचन दूसरे वचन उनके विरुद्ध नहो—क्योंकि किसी ग्रन्थ या वाक्य में परस्पर व्याघात दोषका होना उसके रचियता व वक्ता की मूर्खता को प्रगट करता है-कोई बुद्धिमान् ईश्वरको एसानहीं समझसकता।

प्रमाण ॥

"बाइबिलका परस्पर विरोध" और इजुलमाअ जिदे्न ये दो पुस्तकें छपीहुई मौजूदहैं-जिन में तौरेत, ज़बूर और इञ्जील के शतशः विरोध दिखलाएगएहैं—और इसका प्रत्यक्ष चिन्ह यहूदियों और ईसाइयों का आपस का झगड़ा है—शोक की ईसाई राजा यहूदियों को अपने देश में नहीं रहने देते।

इसी तरह मुहम्मद साहब ने यहूदियों को अरब से निकाल देने की वसीयत की—और कुरान का उन पुस्तकों से जिन को वह ईश्वरीय कहता है अत्यन्त विरोध है-मुसलमान उनको जीर्ण वस्त्रके समान त्याज्य समझतेहैं—और जो सलूकइसलामी बादशाहों ने मसीही व यहूदी गिरजाओं से किया—वह भी किसी इतिहासज्ञसे छिपा नहीं है-और अठारह सौ वर्ष में जो इनका एक दूसरे के प्रतिवर्ताव हुआ है उसे कौन नहीं जानता।

तफ़सीर हुसैनी में है कि बख्तनसर बाबिलीने इनके मारने और बांधने का इरादा किया—तत्पश्चात् फ़ारिस के बादशा हों ने इनको सताया और करलिया–अब रसूल मुहम्मद अवतीर्ण हुआ तो उसने आज्ञा दी कि युद्ध से इनको इसलाम में लावें या (जज़िया) एक प्रकार का आर्थिक दण्ड स्वीकार करें-और यह आज्ञा प्रयल तक रहैगी " जिल्द १ पृ० २२४।

स्वयं कुरान में ६६ आयतें एक दूसरी के विरुद्ध हैं जिन के विषय में तफ़सीर हुसैनी लिखती है " कुरानमें निषेधक और निषिद्ध दोनों प्रकार के वाक्य मिलते हैं और वह समयान्तर से सम्बन्ध रखते हैं-प्रत्येक दशा में निषेधक निषिद्ध से पिछला समझा जाता है क्योंकि एक समय में दोनों का समावेश नहीं होसकता" । तफ़सीर हुसैनी जिल्द २ पृ० ११३।

और यही दशा जिन्दावस्था की है परन्तु वेदमें कोई श्रुति ऐसी नहीं जो दूसरी के विरुद्ध हो और न उत्सर्ग और अपवाद है–जब आदेश युक्ति और बुद्धि सम्मत होने से माननीय एवं आचरणीय हैं-इससे मालूम होता है कि वेद सर्वज्ञ परमात्मा की ओर से हैं न कि अल्पज्ञ मनुष्यकी ओर से।

पांचवीं बात यह होनी चाहिये कि उसका कोई आदेश सृष्टि नियम के विरुद्ध और बुद्धि, विद्या के विपरीत न होना चाहिये।

प्रमाण

यदि बाइबिल और उसका सृष्टि क्रम से विरुद्ध होना, विद्या और बुद्धिका अनादर करना इन सब बातों को जानना हो तो फ्रूट आफ़ क्रिश्चिनैटी और क्रिश्चियन मत दर्पण का निरीक्षण आवश्यक है।

अब रहा दीन इसलाम का बुद्धि और विद्या से विरोध करना-सो उसके विषय में शेख़ ताजुद्दीन उसमानी जामुल-फ़वाइद नामक निबन्ध में लिखते हैं–" दीन (मत) निर्भर है नकल पर न कि अकल पर" मइयार इसलाम अनसारी पृ०६।

स्वयं मुहम्मद साहब एक हदीस में लिखते हैं जिसका

अनुवाद यह है " कि जो कोई इस दीन में अकिल को दखल देकर नई परीक्षा करै-वह मरदूद नास्तिक हैं "।

इमाम गिज़ाली साहब लिखते हैं " कि बुद्धि और अनुमान की तुला से तो परमेश्वर बचावै—यदि मैं उसको पकड़ूं तो वह शैतान की तराज़ू है „ किस्तासुल मुस्तकीम ।

युक्ति और तर्कसे तो मुसल्मान भागते हैं और यही कारण है कि दीन इसलाम के विद्वान् तर्क विद्याकी पुस्तकों के पत्रों से इस्तंजा (शौच) उचित समझते हैं—सायन्स और इसलाम का आपस में वैर है—क्योंकि जहां सायन्स ने उन्नति की वहां इसलाम की कुशल नहीं ।

अतएव सृष्टि नियम का द्योतक, सत्य और न्याय का प्रकाशक, विद्या का भण्डार और बुद्धि का उद्गार केवल वेदही है ।

छठी बात यह होनी चाहिये—कि उस में किसी का पक्ष और आग्रह न किया गया हो किन्तु न्याय और धर्म का प्रतिपादन हो-किसी देश विशेष या जाति विशेष का पक्ष न हो ।

प्रमाण ।

तौरेत में यहूद जाति के साथ अत्यन्त प्रेम और अन्य सब जातियों पर अत्यन्त निर्दयता दिखलाई गई है-ईश्वर इसराईल की सन्तान के पक्ष में होकर उनकी कार्य्य सिद्धि के लिये व्याकुल है—मिसरियों के पहलौठे मारडाले-और उन्हें नील नदी में डुबा दिया—उनपर सैंकड़ों आपत्तियें डालीं रूमियों का खत ६ । १७ इसी प्रकार अन्य जाति की स्त्रियों, बच्चों पर इसराईल की प्रसन्नता के लिये कठिन से कठिन विपत्ति डालीं एक क्षुद्र अर्दली की तरह उनके आगे लालटैन लेकर चलता रहा—उस समय सारी दुनियां का ख़ुदा न रहा-किन्तु इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा, याकूब का ख़ुदा, और इसराईलका ख़ुदा, होगया ।

इसी तरह मसीह भी ३२ वर्ष तक यही शिक्षा देता रहा „ कि मैं बनी इसराईल की खोई हुई भेड़ों के लिये आया हूं—

क्या मनुष्यों के मोती सुवरों के आगे डालदूं। देखिये स्पष्ट रूप से बनी इसराईल को मनुष्य और शेष सबको सुवर के नाम से संकेत किया है—फिर अन्तिमावस्था में जब देखा कि वह नहीं मानते-तब इञ्जील मत्ती २२। १६ के अनुसार अन्य जाति वालों को भी आमन्त्रित करनेलगे—कुरानमें भी यहबात सूरतुलजासिया में बाइबिल से लीगई है-जिस पर तफ़सीर हुसैनीवाला लिखता है-हमने याकूब के बेटों को तौरेत दी वास्ते हुक्मकरने दीन और पैगम्बरीके अर्थात् उनमें से बहुतों को पैगम्बर बनाया-किसी खान्दान (वंश) में इतने पैगम्बर नहीं हुए—जितने कि यूसुफ से लेकर ईसा के समय तक इसराईल के खान्दान (वंश) में हुए—तफ़सीर हुसैनी। जिल्द २ पृ० ३१६ ।

यही हाल मुहम्मद साहब और कुरान का है—कुछ शब्दों के अदल बदल में दुखां, यूसुफ, इनआम, जखरफ और सिजदह की सूरतों में स्पष्टरूप से कहागया है कि हमने कुरान अर्बी भाषा में इसलिये भेजा कि तू उसके द्वारा मक्के के आस पास रहनेवाले लोगों को डरावें—क्योंकि वह अर्बी भाषा जानते हैं।

जिस भय से कुरान अर्बी भाषा में भेजा वह भय सारे संसार की ओर से उपस्थित हैं जिसमें न्याय (इन्साफ़) का स्पष्ट सत्यानाश होता है—क्योंकि उसमें पराबियों अरब देश निवासियों का पक्षपात है।

कुरान क्या भेजा मानों सारे संसारके वध(क़त्ल)काअरबों को ठेका देदिया'काफिरों की स्त्रियों और बच्चों को लौंडी गुलाम बनाने की आज्ञा है-मुसलमानों के बदले काफिर दोज़ख (नर्क) में डाले जाते हैं-सारे विश्वका स्वामी और उस अरबपर इतना प्रेम होना यह ईश्वरीय गुणों के सर्वथा विरुद्ध है कुरैश जाति और उनके उपासनालय और उनकी भाषा और उनकी आवश्यकताओं के अतिरिक्त उसने सारी दुनियां के वास्ते नया प्रबन्ध किया-इसका कुरानसे कुछ पता नहीं लगता है अब तनिक ईश्वर से डरकर बतलायें कि कुरान में न्याय की

शिक्षा कहां है और कहां प्रेम और दया की दीक्षा—वेद अवश्य इन सब गुणों का भण्डार है और उसमें यह आशा भी है।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत अर्थव का० १९-६—१३

उस सर्व व्यापक परमात्माने सबकी शिक्षा और कल्याण के लिये चारों वेद का उपदेश किया-जिन में परोपकार की शिक्षा भरी हुई है।

सातवीं बात यह होनी चाहिये-कि उसमें किसी मनुष्य पर विश्वास (ईमान) लाने की आवश्यकता न हो-और न किसी व्यक्ति विशेष से उसका सम्बन्ध हो-क्योंकि उसकी न्यायलय में किसीका सौंपना और सराहना चल नहीं सकती और इस को बुद्धि भी ग्रहणनहीं करती कि उस की न्यायतुला किसी के कहने सुनने से झुकजाय।

प्रमाण

तौरेत में मूसानबी से मलाकी तक बहुत से नबियों पर ईमान लाने की जरूरत है—उनकी शिफ़ाअत की आशा रखनी पड़ती है—जिनको हम बिलकुल नहीं जानते और न वह हम को जानते हैं—जानना तो प्रथक् है पूरी नामावली भी किसी मनुष्य के पास नहीं हैं और यही दशा इञ्जील की है-मसीह कहते हैं कि शिफ़ाअतका द्वार मैं हूं बिना मेरे आश्रय के किसीकी मुक्ति नहीं होसकती—और यही हाल कुरान और मुहम्मदसाहबका है उनकी हदीसों में भी शिफ़ाअतका एक विशेष बाब (अध्याय) है-और साफ लिखा है कि मुहम्मद साहब की शिफाअत के बिना किसी की मुक्ति नहीं होसकती-जब से मुर्दामनुष्यों पर ईमान लाने का सिलसिला चला तब से ही कबर पूजा, पीर पूजा, और मनुष्य पूजा का प्रचार हुआ-जो नास्तिकता और सारी बुराइयों की जड़ है परन्तु वेद में ऐसा अनर्थ कहीं पर भी नहीं-वह सब मनुष्यों को केवल परमात्मा के यथार्थ ज्ञान से मुक्ति का भरोसा दिलाता है।

कुरानकी पड़ताल।

(मौलवी) प्रथम ईश्वरीय वाक्य ऐसी भाषा में हो जो पृथिवी के किसी न किसी भाग में बोली जाती हो नकि वेद जिसकी भाषा कहीं नहीं बोली जाती।

(आर्य) यदि इलहाम ऐसी भाषा में हो तो आप को मानना पड़ेगाकि तौरैत व ज़बूर इञ्जील व सहफ अम्बिया इलहाम की पदवी से गिरी हुई हैं क्योंकि यह भाषायें अब पृथिवी में कहीं नहीं बोली जाती-बल्कि कुरान की अरबी और अरब की अरबी में भी बड़ा भारी अन्तर है-और इबरानी व सिरयानी भाषायें तो बिलकुल लुप्त होगई परन्तु संस्कृत जैसे पहले देवताओं की भाषाथी अबभी देवताओं(विद्वानों) की भाषा है अरब की कुल आबादी के बराबर तो अबभी संस्कृत के बोलने वाले इसदेश में विद्यमान हैं जर्मनी, इंग्लैण्ड, रूस, फ्रान्स चीन और अमरीका में हजारों इस भाषा के विद्वान् मौजूद हैं सारी भाषाओं के विद्वानों की सम्मति है कि संस्कृत भाषा का व्याकरण ऐसा पूर्ण और अद्वितीय है कि मनुष्य की वाणी के नियम सारी पृथवी में यदि प्रचलित भी हुए हैं तो इससे अधिक नहीं हुए-संस्कृत स्वयं शुद्ध और पूर्ण होने के अतिरिक्त सारी सभ्य भाषाओं की माता है हाँ अरबी सभ्यता से गिरी हुई भाषा है बस आप के इस हेतु (दलील) से भी वेद ही सच्चा ठहरता है न कि कुरान।

(मौलवी) दूसरी बात-जिसपर ईश्वरीय ज्ञान प्रेषित हो वह उत्तम गुणों से युक्त होना चाहिये जैसा कि मुहम्मद न कि ब्रह्मा जिसकी बदचलनी सब पर प्रगट है।

(आर्य) ब्रह्मा के विषय में वेदों या उपनिषदों या शास्त्रों ब्राह्मण ग्रन्थों या उपवेदों में कहीं कोई आक्षेप (इलज़ाम) नहीं लगाया गया, और न किसी अन्य ऋषि या मुनिपर,ऋषि कहतेही उसको हैं जो पूर्ण सदाचारी और जितेन्द्रियहो-परन्तु इस्लाम का कोई एक नबी भी सदाचारी नहीं हुआ जिसके आचरण अनुकरणीय हों-इञ्जीलमें मसीह लिखतेहैं,सब जितने

मुझसे आगेआये, चोर बटमारथे यूहन्ना १०-८ और आगामी के लिये भी कहगये कि बहुतेरे झूंटे नबी उठेंगे तुम उनकी बात न मानना वह तुमको बहकायेंगे-और मसीह के इस कथनका कि मैं ईश्वर का बेटा और ईश्वर हूं यूहन्ना १०—२७ व ३० कुरान ने प्रतिवाद कियाहै और इसपर विश्वास करने वालेको नास्तिक और नारकीय माना है कुरान और मुहम्मद के विषय में हम तकज़ीब वराहीन अहमदिया जिल्द १ में लिखचुके हैं।

(मौलवी) तीसरी बात-उसमें परस्पर विरोध नहो, क्यों कि परस्पर व्याघात मनुष्य के वाक्यों में होता है—ईश्वर के वाक्य में नहीं जैसे कि कुरान में कहीं विरोध नहीं है परन्तु वेद तो परस्पर व्याघात से भरा हुआ है।

(आर्य) विदित होता है कि आपने इसलाम की माननीय पुस्तकें आजतक नहीं देखीं। कुरान अपने विरोध का स्वयं साक्षी है। सूरतनिसा में लिखा है "यदि यह कुरान खुदा के सिवाय किसी और की तरफ से होता तो तुमपाते, इसमें बहुतसे विरोध" इससे स्पष्ट जानाजाता है कि बहुत विरोध तो नहीं परन्तु कम विरोध हैं। थोड़े से समयमें इसलामका १५० सम्प्रदायों में विभक्त होजना उसकी शिक्षाके विरोधका कारण है अनेक बुद्धिमान इस बात को मानते हैं कि कुरान व्याघात दोषों से भराहुआ है तफसीर हुसैनी जिल्द १ पृ० ३ में जहाँ बकर और इमाम आसम का सम्वाद है स्पष्टरूप से कुरान में विरोधका होना अङ्गीकार कियागयाहै। और अर्थोंमें विरोधका होना तो स्वयंभी स्वीकृतहै "किसी आयत और हदीसके मानी किसी ने कुछ समझे और किसी ने कुछ या इस वास्ते कि व सबब न मिलने हदीस के लाचारीको क़यास किया। किसी के क़यासमें कुछआया और किसीके कुछ" हुज्जतुल हिन्द पृ०६८

शेख साहब यदि विरोध न था तो हज़रत उसमान ने सब कुरानोंको एकत्र कर क्यों जलादिया, देखो तारीख़ अबुल फ़िदा अरबी जिल्द १ पृ० ४०३ "आयतें की आयतें बदल गईं, खजूरों के पत्तों को बकरियां या ऊंट खागये—और चमड़ों को दीमक खागई, या कीड़े खागये" जिल्द १ पृ०३७१ इसी वास्ते शीया

लोग अभीतक इस कुरान को (बयाज़ उसमानी) उसमान की किताब पुकारा करते हैं और अपने कुरानों के आखीर में तीन पहले खलीफाओं पर शरीक दिया करते हैं (देखो कुरान) हस्त लिखित जो पटना के पुस्तकालय में मौजूद है, इसी तरह आयतों का परस्पर नासिख व मनसूख (निषेधक वा निषिद्ध) होना स्वयं उसके व्याघात को सिद्ध कररहा है-परन्तु वेदमें कहीं भी विरोध नहीं और न अबतक कोई बतलासका।

(मौलवी) चौथीबात—यह सारे संसार में फैली हुई हो जैसा कि कुरान कोई बस्तीअहले इसलाम की ऐसी न होगी जिसमें दो चार कुरान मौजूद न होंगे नकि वेद जिसका कहीं पता नहीं मिलता।

(आर्य) यहभी आपकीसरासर भूल है-कुरान सारे संसार में नहीं-अमेरिका में कुरान कहां-और इसी तरह स्वीडन नार्वे आस्ट्रेलिया, इटली और जरमनी में कुरान का पता नहीं और न वहां कुरान की तालीम होती है-और इसी तरह नैपाल भूटान आदि में कोई कुरान को जानता भी नहीं—यदि पुस्तक के अधिक प्रचार होने से मतकी सचाई है तो आपको ईसाई होजाना चाहिये—क्योंकि बाइबिल के बराबर कुरानका प्रचार नहीं है—कोई शहर हिन्दुओं का ऐसा नहीं जहां वेद न हो—और दक्षिण का तो कोई ऐसा गांव नहीं जहां वेद या वेदों के पाठक (हाफिज़) न हों—वेद संसार से लोप नहीं हुये किन्तु लाहौर बनारस, कलकत्ता, बम्बई, लखनऊ, इलाहाबाद, अजमेर, लण्डन, फ्रांस न्यूयार्क और जरमनी में बराबर छपते हैं और बाजारों में बिकते हैं और सैंकड़ों दूकानो पर मिलसकते हैं जिसका जी चाहे लाहौर आर्य समाज की लाइब्रेरी से १२) को मंगाले—इससे आपकी अज्ञता और अधांधुन्ध इसलाम की तरफ झुकावट मालूम होती है—अन्यथा वेद के अनुयायी कुरान से तो क्या इन्जील से भी कम नहीं।

(मौलवी) पांचवीं बात-जबतक उसका रखना अभीष्ट हो उसमें ईश्वरीय सहायता से प्रक्षेपादि न डालके-और यह बात सिवाय कुरान के और किसी किताब में नहीं।

(आर्य्य) तौरेत में मिलावट होगई और वह निषिद्ध और मानने के योग्य न रही, इबरानियों का पत्र ७–१८ व १९ व ६·७ और ख़ुद कुरान भी उसमें मिलावट होना स्वीकार करता है। और कुरान में प्रक्षेप का होना शीयालोग मानते हैं जैसाकि तुहफे असना अशरिया में लिखा है–" अर्थात् शियालोग प्रचलित कुरान से अपनी निराशा प्रगट करते हैं और कहते हैं कि वह कुरान मुनज्जिल (प्रेषित) नहीं हैं किन्तु उसमान का (·मुहर्रिफ) संग्रह किया हुआ है–बाब ११ फसल २ पृ० ५६२) मास्टर रामचन्द्र साहब ने अपनी पुस्तक तहरीफ कुरान में इस विषय को अच्छी तरह सिद्ध किया है—हां वेद में आज तक क़िसीने यह दोष नहीं लगाया·और न लगसकता है·क्यों कि पूना, बम्बई, बनारस, मथुरा, अहमदाबाद और काठियावाड़में लाखों ऐसे पुरुष मौजूद हैं कि जिनको वेद कण्ठस्थ हैं कुरान के हाफिज़ों में और वेद के पाठकों में एक बड़ा भेद है और वह यह कि कुरान के हाफिज़ अन्धे होते हैं और वेद के पाठक पढ़े हुये और आंखवाले–वेद की जितनी प्रतियां मिलती हैं उनमें आपसमें विरोध नहीं·पटना, जम्बू, जैपुर, बीकानेर में जो सरस्वती भण्डार हैं उनमें सैकड़ों वर्ष की लिखी हुई प्रतियां ताड़पत्र, भोजपत्र और सूतीकपड़ों में लिखी हुई हैं और सब मन्त्र, छन्द और अक्षर आदि वेदों के गिने हुए हैं षोडश संस्कारों में वेद सर्वत्र पढ़ेजाते हैं–आठ२ हज़ार वर्ष की पुस्तकों में जो वेदोंकी प्रतीकें दीगई हैं·वह सब की सब अविकल रुप से इन्ही वेदोंमें मिलती हैं·अतएव वेद प्रक्षेप और मिलावट से रहित हैं·व्यासने वेदों को इकट्ठा नहीं किया—और न ब्रह्मा के चारमुख से वेद निकले–और न ब्रह्मा के चारमुख हैं–वेदव्यास के अर्थ वेदों को जानने वाले के हैं और यह पदवी साङ्गोपाङ्ग वेदोंको पढ़ने के पश्चात् मिलाकरती थी–इस समय भी बनारस में कई व्यास विद्यमान हैं–यथा हरिकृष्ण व्यास इत्यादि हां कुरान को उसमान ने इकट्ठा किया और अगली पुस्तकें जलादीं इस पर लोगोंने आक्रमण करके उसको मारडाला ब्रह्मा या किसी मनुष्य के चारमुख नहीं होसकते यह बात वेद विरुद्ध

और न्याय शून्य है–चत्वारो वेदाः मुखाग्रे यस्य स चतुर्मुखः अर्थात् चार वेद जिसके मुखाग्र हों वही चतुरमुख है–ऐसे चतुरमुखी ब्रह्मा सहस्रों यद्यपि दक्षिणमें विद्यमान हैं।

(मौलवी) मुण्डकोप उपनिषद् अथर्ववेद है कि शङ्कराचार्य्य के भाष्य में यों लिखा है—इससे प्रगट है कि वेद की रचना शंकराचार्य्य के पश्चात् हुई है–और शंकराचार्य्य का समय ११०० या ८०० या ६०० ई० है–पस वेद नित्य न हुआ। जफर मुबीं पृ० २२६।

(आर्य्य) मौलवी साहब और उन मुसलमानों की जो इनके पाण्डित्यपर अभिमान किया करते हैं योग्यता का अनुमान हम इसीसे लगासकते हैं–मुण्डक उपनिषद् में तो क्या किसी उपनिषद् में भी शंकराचार्य्यका नाम नहीं–शंकरस्वामी ने तो मुण्डकोपनिषद् का भाष्यकियाहै–जो शंकरभाष्यके नाम से प्रसिद्ध है शंकर स्वामीने तो स्वयं शारीरक भाष्य और उपनिषद् भाष्य में वेदोंको अनादि और अपौरुषेय माना है अतः वेदों के नित्य और ईश्वरीय ज्ञान होने में किसी को सन्देह नहीं होसकता हां इस लेख से आपकी योग्यता अवश्य प्रकट होगई।

(मौलवी) कृष्णगीता के पृ० ७६ श्लोक १६४ में लिखा है कि यही कर्म है जिनका वर्णन वेदोंमें है इसके पश्चात् श्लोक २१८ में लिखा है कि ईश्वर ने आज्ञा नहीं दी कि मनुष्य कर्म करे–इससे सिद्ध है कि वेद जिनमें कर्म का वर्णन परमेश्वर की ओर से नहीं है–अन्यथा यह किस तरह होसकता था कि परमेश्वर ने कर्म की आज्ञा नहीं दी–इस से स्पष्ट सिद्ध है कि वेद ईश्वर का वाक्य नहीं–फिर श्लोक २७७ में लिखा है कि जो उस विज्ञान मय ज्योति का आश्रय लेता है—उसको ईश्वरकी प्राप्ति होतीहै और उसके लिये वेदों की कोई आवश्यकता नहीं रहती। जफर मुबीं पृ० २१७।

(आर्य्य) गीता के किसी अध्यायमें १६४ या २१८ या २७७ संख्याके श्लोक नहीं हैं–अतः आपका यह कथन आद्योपान्त निर्मूल है परन्तु इस आक्षेप से आप की और आपके मौलाना

मुहम्मदअली की योग्यता प्रकट होगई—गीता योगकी पुस्तक है जैसे मुसलमानों में मसनवी रूमी—वह किसी अद्वैतवादी ने बनाई है हमारा धर्म पुस्तक वेद है गीता का बनानेवाला वेदों को अपौरुषेय मानता है देखो अध्याय ३ श्लोक १५ और उसपर शंकर भाष्य।

(मौलवी पृ० ८१) आर्य्योंने बुद्धिमानों के तर्कों से डर कर यह बात बनाईहै कि अग्नि, वायु और आदित्य ऋषीश्वरों के नाम हैं—या कोई और कहानी किसी पुस्तकमें लिखीहोगी हिन्दुओंके यहाँ ऐसी ऊट पटांग कहानियों की क्याकमी है।

(आर्य्य) यह तो बड़े अन्याय की बात है कि निष्कारण किसीपर दोष लगाना—यह बात हम लोगों ने नहीं बनाई। किन्तु शतशः माननीय पुस्तकों में लिखा है (देखो मनुस्मृति, गोपथ ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण और योगशास्त्र (अभी तक इन के नाम पर द्विजों के गोत्र चले आते हैं ऊटपटांग बातों का प्रचार मुसलमानों में है जिसको अन्यत्र आपने भी स्वीकार किया है "जब लोगों ने हज़रत पैग़म्बरपर झूंठ बांधा और हज़ारों हदीसें झूंठी बनाकर अपना मुंह काला किया" हु० हि० पृ० २०१ इससे सिद्ध है कि झूंठ और बनावट के ढेर मुसलमानों के यहां भरे पडे हैं हदीसों का संघात इसी प्रकार का है और कुरान का विरोध, इसके अतिरिक्त (मौलवी पृ० ८२) यदि हो न हो विपक्षी की प्रसन्नता के लिये यह मान लिया जावे कि यह वेद जो हिन्दुओं के हाथ में हैं ईश्वरीय वाक्य है—तौभी अब उसके माननेकी कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि उसके पीछे तौरेत और इञ्जील और ईश्वरीय पुस्तकें आचुकीं—उनपर चलने की आज्ञा हुई और सब के पीछे कुरान आया अब सारे विश्व के लिये आज्ञा है कि कुरान पर अमल करें—और परमेश्वर ने कुरान को सुरक्षित भी रक्खा है—और हज़रत मुहम्मदरसूल अल्लाह मबऊस होगये अर्थात् दूत बनाकर भेजेगये—और उनकी हदीसें भी सुरक्षित हैं और सारे जगत को आपही की अनुयायिता की आज्ञा है—सो अब संसार भर के सब मनुष्यों को उचित है कि कुरान

और मुहम्मद साहब के अनुयायी हों।

(आर्य) यह कथन आपका बिलकुल युक्ति और प्रमाण से शून्य है सुनिये—तौरेत और ज़बूर के मानने वाले मौजूद हैं और वह मत अबतक जीवित है उनकी किताब सुरक्षित और कुरान से अधिक प्रचरित है-इञ्जीलके माननेवाले हमारे देश के राज पुरुष विद्यमान हैं।

इञ्जील का प्रचार कुरान से कईगुणा बढ़कर है उस के अनुयायी कुरानके अनुयायियोंसे ढाईगुने अधिकअर्थात् ईसाई ३०करोड़ और मुहम्मदी १३करोड़से भी कमहैं-उनकी सैकड़ों पुस्तकें दीन इसलाम और कुरान के खण्डन में प्रस्तुत हैं— उनके उपदेशक पादरी लोग इसलाम के उपदेशक मौलवियों से संख्या और योग्यता दोनों में अधिक, प्रतिवर्ष हजारों मुसलमान दीन मुहम्मदी से हाथ धो ईसाई होरहे हैं-यहूदी और ईसाई यद्यपि आपस में कुछ भेद रखते हैं तथापि दोनों मिलकर इसलाम और कुरानका खण्डन करते हैं—वह लोग अपनी इलहामी पुस्तकों से मुहम्मद को झूंठा नबी और कुरान को झूंठी किताब जानते हैं "ईसा ने कहा है कि मेरे बाद किसी पर ईमान न लाना क्यों कि मुक्ति का द्वार मैं हूं" स्पष्ट शब्दों में अन्तिम दूत होने का दावा किया।

अब रहा कुरान-सो वह तौरेत, ज़बूर इञ्जील की प्रगट रूप से निन्दा या प्रत्युक्ति तो नहीं करता—परन्तु उनके पढ़ने देखने और रखनेका निषेधकरता है-सारे मुहम्मदी इन पुस्तकों को खण्डित (मन्सूख़) जानते हैं यहांतक कि उनको पढ़ते भी नहीं और इसी तरह सारे यहूदी और ईसाई कुरान को— यह विचित्र बात है कि अरबों और इबरानियों का 'ईश्वर' और सारे संसार के लिये उसका आदेश—हम तो समझते हैं पुराने अहदनामे में कुरान और इञ्जील से (तौहीद) एक ईश्वर का मानना अधिक है और इञ्जील में इन सबकी अपेक्षा नम्रता अधिक है-ईसाइयों ने अच्छा किया जो दोनों को शामिल रक्खा-परन्तु कुरान में इन दोनों से बढ़कर कोई बात नहीं—अतएव ईसाई विद्वानों का यह विश्वास सम्पूर्णतया सच

है कि कुरान की कोई आवश्यकता नहीं (देखो अदम जरूरत कुरान)

तौरेत की आत्मविद्या और नीति शिक्षा की नींव मूसा के दश आदेश हैं जो मनुस्मृति, भारत, रामायण और वेदों में मौजूद हैं—और इसको तो तमाम इतिहासज्ञ वल्कि आप भी स्वीकार करते हैं कि 'वेद' तौरेत, जबूर, इञ्जील और कुरान इन सब से पहले हैं–बाइबिल इन इण्डिया के विद्वान् रचयिता ने प्रवल प्रमाणों से सिद्ध करदिया है कि मूसा और ईसा की जो २ अच्छी और उत्तम शिक्षायें हैं वह सब वेद और मनुसे लीगई हैं—कुरान कोई नई शिक्षा नहीं करता किन्तु तौरेत और इञ्जील को ही सत्य शिक्षाओं का प्रकाशक वतलाता है (सूरतमायदह) वाकी रहीं कुरान की किस्से कहानियां वह तो सारी की सारी इञ्जील, तौरेत और यहूदियों की हदीसों और पारसियों की किताबों से लीगई हैं।

अवरहा मुहम्मद साहव का आख़िरी पैग़म्वर होना सो वह किसी तरह भी ठीक नहीं–उनके बाद मसीलमा विन्त स-ज्जाह, अमरीका का मसीह, अरव का मसीह, गोविन्दसिंह केशव चन्द्र सेन, शिवनारायण आदि वीसियों ने पैग़म्वरी का दावा किया है उनकी पुस्तकें और अनुयायी मौजूदह वाक् पटुता भी प्रसिद्ध है अतः किसी तरह मुहम्मद साहव आखिरी पैग़म्वर नहीं होसकते।

अव आख़ीर में हम आपको वतलाते हैं कि परमेश्वर की आज्ञाओं मे अदल वदल तथा उत्सर्ग और अपवाद की आव श्यकता नहीं–देखिये सूर्य्य चन्द्र आदि–परमात्मा का सृष्टि नियम जैसा गर्भारम्भ से है वैसाही अवतक और सदा रहैगा ईश्वर परायणता, धर्म शिक्षा और विद्या आदि की मनुष्यों का सर्वदा आवश्यकता है—अतएव उन में कभी परिवर्त्तन नहीं होसकता "हुकमे अज़ल मैं रदोवदल का नहीं है काम। और उसमें भूल चूक का बिलकुल नहींहै नाम"। वस सिवाय वेदके और कोई ऐसी पुस्तकनहीं वेदही सबसे अधिक सुरक्षितभीहै और ऐसी भाषामें है जिससे उत्तम और पूर्ण और कोई

के वहां विद्याकी या बुद्धि की कुछ उन्नति नहीं हुई—वही ऊंट और वहीसोसमार—वही बद्दूजाति और वही उसकेकारोबार वैद्यक, गणित, तर्क, भूगर्भ, ज्योतिष, पदार्थ, वनस्पति, योग रसायनिक और शारीरक आदि किसी विद्या का कुरान से पता लगावें।

हम तुसखे, खन्त अहमदिया में बहुत से प्रमाण देचुके हैं और तहजीब इखलाकमें सरसय्यद अहमदखाँ साहबने साफ़ लिखा है "कि कुरान में शारीरक की व्याख्याका निषेध किया गया है—इसलिये मुसलमानों ने सिवाय शारीरक (सर्जरी) के प्रत्येक विभाग ने बड़ी उन्नति की जिल्द ५ पं० ३ पृ० ५६ अलबत्ता जहाद (मारपीट) बहु विवाह, जिन्न भूत, हारुत और मारुत की धूम है—शेष विद्याओं का हाल ईश्वर को मालूम है—वेद में आत्म विद्याका इतना वर्णन है यदि उसी को संग्रह किया जावे—तो उसका परिमाण भी कुरान से बढ़जावे—श्री स्वामीजी ने निदर्शन की रीतिपर एकसौ श्रुति आर्याभिविनय में लिखी हैं—वैदिक अध्यात्म विद्याका अनुवाद सरल संस्कृत में दशोपनिषद् हैं—जिनके विषय में प्राचीन और अर्वाचीन समस्त विद्वानों की सम्मति है कि इनसे बढ़ कर किसी मतमें अच्छे उपदेश की पुस्तक नहीं है।

जरमनी के प्रसिद्ध फिलास्फर शोपिनहायर लिखते हैं कि उपनिषदों के प्रत्येक वाक्य से गम्भीर उपदेश और बड़े स्वच्छ विचार टपकतेहैं—सबमें एक अत्यन्त पवित्र और सत्य आत्मा व्यापक मालूम होता है—पृथिवी भरमें सिवाय उपनिषदों के कोई पुस्तक इनसे अधिक उपयोगी और उच्चताका आदर्श नहीं मिलसकता, यही उपनिषद् मेरे इस जीवन में सन्तोष दायक हुये हैं—और यही मरने के पश्चात्भी शान्तिदायक होंगे।

प्रसिद्ध विद्वान् आर. सी. दत्त लिखते हैं "हम नहीं जानते कि कोई दूसरा काम किसी दूसरी भाषा में हो जो कि ऐसी गम्भीर अन्वीक्षा के साथ मनुष्य के मानसिक भावों को विकाश देनेकी रीति बतलावै—जैसा कि ऋग्वेद बतलाता है—अर्थात् किस प्रकार मनुष्य की बुद्धि क्रमशः उच्च कक्षाओं में

भाषा हो नहीं सकती। सारे संसार को वेदका मानना और उनके प्रचारक ऋषियों के आगे शिर झुकाना आवश्यक है।

(मौलवी) छठीबात-उसमें हठ और अत्युक्ति न हो-और उसकी वाक्य रचना ऐसी ललित और सार गर्भित हो कि उसकी उपमा अन्य से न दी जा सके और कोई बात विद्याके विरुद्ध न हो-जैसे कि कुरान।

(आर्य्य) आप यदि कुरान को निष्पक्ष होकर देखें तो मालूम होगा कि वह काव्य की अत्युक्ति से खाली नहीं है-हूरों की आँखों और स्तनों का वर्णन-गिलमाओं के शराब के प्याले और स्वर्गीय फलोंके वर्णन में कुरान कवियों की अत्युक्ति को भी मात करता है-नूहके तूफान का बयान, बुर्ज़ बाबिल की दास्तान, असहाब कहफ़ का स्वप्न, बनी इसराईल के लियेमन व सलोई के कबाब और बहरे कुलज़म (अगाध समुद्र) का उलथा होना क्या कवियों की गप्प नहींहै ? इसी हेतु से अरब लोग मुहम्मदको कवि कहा करतेथे-कुरान की पदरचना ऐसी ललित व गम्भीर नहीं है कि जिसकी उपमा न मिल सके। उसमें विद्या और बुद्धि के विरुद्ध सैकडों बातें लिखी हुई हैं—विद्यासे साततो एकतरफरहेएक आसमानभी सिद्ध नहीं होता और न उनके द्वारों का पता लगता है—और न सात ज़मीनों का कोई चिन्ह मिलता है-कुरान की फ़िलासफ़ी का तो बुर्ज़ बाबिल सबूत है और मुहम्मदके (मेराज) आस्मान पर जाने और खुदासे मुलाक़ात करने का कुरान गवाहहै, एकही आत्म-विषयिक प्रश्न कियागया था—सो उस के उत्तर में अब तक पहलादिन है—आर्यावर्त्त के विद्वानों की सदाचार और नीति शिक्षा सबसे बढ़कर है--और ईरानी व यूनानी हकीम भी पैराबियों से बढ़कर विद्वान और सदाचारी हुये हैं--युद्ध शिक्षा कुरानमें अच्छी थी परन्तु आजकल इसविद्या की उन्नति ने उसको फीका ही नहीं किन्तु असभ्य सिद्ध कर दिया-सारी विद्याओं से न मुहम्मद साहब न कुरान का संग्रह कर्ता उसमान और न उनके सहयोगी परिचित थे—और इसका साक्षी भूत तेरहसौ वर्ष का अरब का इतिहास है—कि इतने समय

जाती हुई उत्पन्न वस्तुओं से उत्पादक के प्रदतक पहुंचती है" हिस्ट्री आफ इण्डिया जिल्द १ पृ०-११३ ।

तीसरा अध्याय ।

गो विषयक आक्षेपोंका उत्तर ?

(तु० हि० पृ० १५६) हिन्दू कहते हैं कि गाय के शरीर में देवता निवास करते हैं - और सोने के सींग आदि बनाकर उस पर चढ़ाते और ब्राह्मण को दान देते हैं । उस के गोबर और मूत्र को शुद्ध और पवित्र करनेवाला जानते हैं और पञ्च-गव्य बनाकर पीते हैं और गोधूलि अर्थात् गाय के पाँव की रज को भी अत्यन्त पवित्र समझते हैं—और कहते हैं कि म्लेच्छ के घर में खाना पीना ठीक नहीं-पर जो उस घर में गाय बन्धी हो तो कुछ बुराई नहीं जैसें यह श्लोक है—"नील पट्टे जलेतक्रे गोशाला म्लेच्छ मन्दिरे" अर्थात् नील का रंग रेशम पर पहनना, छाछ में मिलाहुआ अन्य जाति का पानी पीना, और जिस में गाय बंधी हो ऐसे म्लेच्छ मन्दिर में खाना पीना वर्जित नहीं है ।

(उत्तर) यह आक्षेप किसी शास्त्र के लेखपर नहीं जिस का उत्तर देना हमपर आवश्यक होता-तथापि तुम्हारी संस्कृत की अनभिज्ञता हमें प्रेरणा करती है कि हम तुम्हारी भूल को तुम्हे बतावें जो आधा टुकड़ा श्लोक का आपने लिखा वहभी दो तीन जगह पर अशुद्ध है—किसी से सुनलिया होगा—यह किसी शास्त्र या प्रामाणिक ग्रन्थ का वाक्य नहीं किन्तु किसी कट्टर कवि की घड़न्त है ।

जो हिन्दू कहते हैं कि गाय के शरीर में देवता रहते हैं वह ऐसे ही हिन्दू हैं--जो पीर * अल्ला बख्शकी जियारतवर (दर्शन) और पूजन समय बेटे के लिये सुवर का घेंटा चढ़ाते हैं—गाय एक चौपायों में उत्तम पशु है - देवता उस के शरीर

* इन पीर साहब की कबर कस्बे गंगोह जिला सहारनपुर में है ।

में नहीं रहते किन्तु अपने घरों में रहते हैं। सोने के खोल बना कर उसपर चढ़ाना और ब्राह्मणों को दान देना बुरा नहीं। परन्तु उसको मुक्तिदाता मानना ठीक नहीं। उस का गोवर और मूत्र भी सिवाय खास २ रोगों के प्रत्येक दशा में उपयोगी नहीं हो सकता—और न सच्छास्त्रों में इसकी विधि है हां यह बात वैद्यक से सम्बन्ध रखती है—अब रही यह बात कि प्रायश्चित्त के समय भी पिलाते हैं—सो यह एक प्रकार का जुलाब है या शपथ है कि फिर वह ऐसा काम न करैगा। और यह प्रायश्चित उस समयपर होता है जब कोई हिन्दू मुसलमानी रन्डी से व्यभिचार करै व अभक्ष्य खालेवे—या मुहम्मदी वा ईसाई होकर फिर वापिस आना चाहे सो यह दण्ड की रीतिपर अनुचित नहीं। जो लोग देवता के चढ़ेहुए मांस तक को पवित्र समझते हैं वह यदि गोधूलि को पवित्र समझें तो क्या आश्चर्य है—इस प्रकार के विश्वास की जड़ मूर्खता है। और पक्का नील पहिनने में कोई दोप नहीं—महा देव पहाड़ी राजा का नाम ही नीलकण्ठ था-कृष्ण जी का रंग भी नीला है और वह नील वस्त्र भी पहिनते थे इसी हेतु उन का नाम नीलाम्बर है। पूर्तता के समय की छूत छात किसी प्रकार उचित नहीं परन्तु वह ठीक २ जो वैद्यक शास्त्र के अनुसार है और सब विद्वान पण्डित उसको ठीक मानते हैं। (हु० हि० पृ० १५६) सुबहान अल्ला आदमी जो अशरफुल मखलूकात सृष्टि में सबसे उत्तम है उसके मुहको तो जिससे परमेश्वरका नाम लियाजाता है—अपवित्र जानते हैं और गाय जो एक पशुहै वह हिन्दुओंकी पूजनीय और उसका मल उनकी दृष्टिमें अत्यन्त पवित्र और पवित्र करनेवाला है जिसको खाने से मुक्ति का होना मानते हैं।

(उत्तर १) हम मूर्खता से नहीं किन्तु वैद्यक से झूंठा खाने को बुरा समझते हैं—इसमें सारे संसार के डाक्टर सिवाय कुछ परावियों के हमसे सहमत हैं—गायको न हम इष्ट देवता समझते और न उसके मलको पवित्र जानते हैं और न उसको मुक्तिदाता मानते हैं, परन्तु उस में दुर्गन्ध नहीं होती

इसलिये जलाने, मकान लीपनें आदि के काम में लाते हैं और उसी से खाना पकाते हैं और इसमें मुसलमान, ईसाई प्रभृति सब मतवाले हमारे शरीक हैं।

अब हमें आपके कथनानुसार कहना पड़ा कि "सुबहान अल्लाह" मनुष्य जो सृष्टि में सर्वोत्तम है उसका मलतो अपवित्र और गाय जो एकपशुहै उसका गोबर पवित्र और जो वस्तु (रोटी) मुसलमानों के मुह में जावे उस में उसका धुवां लगे और उसी गायके गोबरसे पकीहुई रोटी खाकर नमाज़ बल्कि कुरान पढ़ें-परन्तु आदमी के मल का धुवां यदि रोटी को लग जावे तो अपवित्र होजावे यह कैसी कुरानकी फ़िलासफ़ी है जिससे इन्सान अशरफुल मखलूकात की हतक होती है।

(उत्तर २) ज़रा हदीस नबवी को खोलकर देखो-उसमें यह रिवायत (गाथा) है कि कुछ अरनीन लोग इन्स से मदीने में आए और उनको मदीनेका पानी लगा-सोभेजा उनको रसूल अल्लाह ने सिदके के ऊंटों में और कहा कि पियो दूध और पेशाब ऊंटों का,, जामे तिरमुज़ी-फिर उसी में लिखा है कि असहाब मालिक और अहमद ने इसहदीस की पुष्टि करते हुए गोबर आदिका पवित्र होना सिद्ध किया है (जामे तिरमुज़ी पृ० १०) बसफिर हमको कहना पड़ा मनुष्यका मल अपवित्र और ऊंटका मल ऐसा पवित्र कि वह मुसलानों के पीने योग्य समझा जावे।

मश्कात में एकहदीस है जिसमें यह रवायत (सम्वाद) है-इब्न आज़िब से रसूलने कहाकि जिसका गोश्त खायाजाता है उसके पेशाब में भी कुछ दोषनहीं (मुशकात जिल्द १ पृ० २७६)

(उत्तर ३) रवाफ़िज़ मुहम्मदियों में से एक फिरका है जो कुरान, नमाज़ और रिसालत (दैत्य) पर विश्वास रखता है-उसके विषयमें तुहफे असना अशरिया में लिखा है-"हिन्दू गायके मलमूत्रको पवित्र समझतेहैं और रवाफ़िज़ गाय व मनुष्य इन दोनों के मूत्रको पवित्र समझते हैं और शुष्कमल को भी (पृ० ६० पं० ५ समर हिन्द लखनऊ)।

(हु० हि० पृ० १६०) और तमाशा यह है कि जिस गाय की पूजा और इतनी प्रतिष्ठा करते हैं और जिसको गोमाता कहते हैं-जब वह मरने लगती है तो बहुतसे हिन्दू उसी माता को अपने घरसे निकाल देते हैं-और जब मरजाती है उसे चूहड़े चमारों के हवाले करदेते हैं-वह उसे सरेबाजार घसीटते हुए लेजाते हैं-भला माता का मुर्दा इस तरह से निकालना उन को शोभा देता है और यह चूहड़े चमार उसका मांस खाते हैं और बचा हुवा मांस और हड्डी कौए और कुत्ते खाते हैं और उसके चमड़े की जूतियां सब हिन्दू पहनते हैं।

(उत्तर १) गाय को हिन्दू इसलिये कि वह दूध जैसा अमृत पदार्थ देतीहै माता कहते हैं-संस्कृत में मान करनेवाली को माता कहते हैं सो वह दुग्ध आदि पदार्थों से मनुष्यों का मान करती है इसलिये माता कहला सकती है हिन्दू लोग उसके मरनेपर श्राद्ध नहीं करते और न बैलको पिता जानते हैं और न बछड़े को भाई और न भैंस को ताई केवल उपयोगी समझ कर उस का मान्य करते हैं पशुओं से मनुष्यों की रिश्तेदारीनहीं होती इसलिये आपका यह आक्षेप सरासर निर्मूल है-फरांसीसी डाक्टर बरनियर साहब इसकी पुष्टि करते हैं वह लिखतेहैं कि हिन्दुओंमें गायका इतना मान्य इसकारण से होगा कि वह एक अत्यन्त उपयोगी पशु है और दूध और घी जो सर्वोत्तम भक्ष्यों में से हैं इससे प्राप्त होते हैं और वह कि बैल कृषिका बड़ाभारी साधन है-इसलिये गाय और बैल दोनोंपर मनुष्य की जीवन यात्रा निर्भर है। जिल्द २ पृ०२१२।

(उत्तर २) कितनेही मुसलमान जो अपने समय में बड़े प्रतिष्ठित थे और जिनकी अबभी तमाम मुसलमानों में बड़ी भारी प्रतिष्ठा है-बिल्लियों और ऊंटो को प्यार करनेसे अबूहरैरह और अबूबकर मशहूर होगये-परन्तु मुसलमान लोग बिल्लियों और ऊंटों को मरनेपर मुरदार समझकर चूहड़े चमारोंके सुपुर्द करदेते हैं-पर उनके साथ ऐसा सलूक नहीं किया।

(उत्तर ३) खजूर को हदीस में मुसलमानों की मौसी

लिखा है-परन्तु वे उसको खाते, जलाते, पकाते और बेचते हैं मौसी को नहीं।

(उत्तर ४) तुम अपनी माता को मरने के बाद शिरपर मट्टीडाल और छातीपर पत्थर रखकर क़बर के गढ़े में डाल आते हो जहां पशु उसको घसीटते और खातेहैं-अन्यथाभीतर ही भीतर उसको विच्छूखाते और कीड़े पड़जाते हैं-और दुर्गन्ध फैलाते हैं—जिससे हवा खराब होकर विशचिका आदि सैकड़ों रोग फैलते हैं—और यह भी तुमलोग जानतेहो कि क़बरोंपर कुत्ते मूतते हैं और मांसाशी परिन्दे चील आदि बीट करते हैं क्या यही माता पिता का आदर है ? ऐसे हो ख्यालपर क़बरों के लिये शेख़शादी ने क्या अच्छा लिखाहै-एक बुढ़िया का लड़का मरा लोगोंने उससे पूछा कि इसकी क़बर में क्या लिखाजावे—बुढ़ियाने कहा कुरान की पवित्र आयतों से बढ़कर और क्या होसकता है—यदि उनका लिखाजाना ऐसी जगह पर कि जहाँ लोग गुज़रते हैं और कुत्ते पेशाब करते हैं अनुचित नहो। (गुलिस्ताँ सातवां बाब)

(हु० हि० पृ० १६०) अब हिन्दू क्रोध, पक्ष और भेड़ाचाल को छोड़ कर न्याय से कहें कि इनके धर्म में गाय क्यों हराम अभक्ष्यहै,-यदि इस कारण से कि वह पलीद और यदि इस हेतु से कि वह पवित्र और उत्कृष्ट है तो उसके चमड़े को क्यों पहनते हैं और मरने के पश्चात् उसकी ऐसी दुर्गति क्यों करते हैं ?

(उत्तर) हमारे धर्म में मांसमात्र अभक्ष्य (हराम) है इसलिये हमसब जानवरों का खाना बुरा समझते हैं—अब रहा यह कि गायपर अधिक बल क्यों देते हैं—इसका विशेष कारण यह है कि वह अधिक उपयोगी है आर्य्यावर्त की रक्षा व पुष्टि अधिकतर इसीपर निर्भर है।

(२) वैद्यक के मत से उसका मांस अतीव हानि कारक है-बस एक ओरतो वह कृषि के सम्बन्ध से और क्या दूध के कारण बड़ाभारी लाभ पहुंचाती है और दूसरी तर्फ़ अर्थात् उसका मांस हानिकारक है यही नहीं कि उस से होने वाले

खाभों से हमें वञ्चित रखता है किन्तु हमारी आरोग्यता को भी नष्ट करता है और अनेक प्रकार के भयानक रोगों को उत्पन्न करता है इसलिये उसका बचाना धर्म और खाना महापाप है—गाय पलीद और अपवित्र नहीं किन्तु सब से उत्तम और पवित्र पशु है परन्तु वह पूजा के योग्य कदापि नहीं होसकता।

अब हम तुम से कुछ प्रश्न करते हैं (१) सुवर को क्यों हराम (अभक्ष्य समझते हो-क्या इस लिये कि वह श्रेष्ठ और शूर है? यदि यही कारण है तो फिर उसको मारते क्यों हो और प्रातःकाल उसका नाम लेना क्यों बुरा समझते हो और सामने आजावे तो अप्रसन्न क्यों होते हो और यदि इस कारणहै कि वह पलीद और अपवित्र है तो उसका नाम कुरान में क्यों है? मुहम्मद साहब के मुख से क्यों निकला मुसलमान लोग कुरान के साथ क्यों उसके नाम का उच्चारण करते हैं? और ईश्वर की विशेष कृपा उसी पर क्यों हुई? जैसे मनुष्यका मांस अभक्ष्य है वैसे ही सुवर का—जिसको बचाया जाता है उसपर विशेष कृपा होती है। (२) तुम दूध क्यों पीते हो क्योंकि श्वेतवर्ण का रुधिर है और कुरान के मतानुसार रुधिर पीना हराम है जैसा कि सुवर-यदि कहो कि रंग के बदलने से हम दूध को पीते हैं तो फिर श्वेतवराह क्यों नहीं खाते—(३) तुम अण्डा क्यों खाते हो क्योंकि वह तो मुरदार है—और जानवरों के गर्भ च्युत शावक क्यों नहीं खाते-यदि कहो कि वह सजीव है मुरदार नहीं तो बध (जिबह) क्यों नहीं करते—बिनाबध किये खाना मुरदारके बराबर है—और मुरदार और सुवर कुरान के मतानुसार बराबर हराम है (४) तुम मछली क्यों खाते हो—क्योंकि वह जिबह नहीं होती बस हराम व मुरदार है।

(हु० हि० पृ० २४२) सर्वोपनिषद् ऋग्वेद में है कि ईश्वर ने घोड़ा और गाय उत्पन्न करके देवताओं से कहा कि इन में हूलूल (प्रवेश) करके खाओ और पियो-इस रिवायत से मालूम होता है हलाल (भक्ष्य) होना गायका।

(उत्तर) यद्यपि यह कोई प्रामाणिक पुस्तक नहीं—और आपने भी उसका कुछपता नहीं दिया-परन्तु जोकुछ लिखा उससे आपकी अनभिज्ञता प्रगट होती है—ईश्वरने देवतों से हलूल करने को कहा—आपने हलाल समझ लिया—खुदाकी रूहने आदम में हलूल किया—तो क्या हज़रत आदम भी तुम्हारे खाने के लिये हलाल होगये सादीने सच कहा है।

यदि रोज़ी (आजीविका) बुद्धि से बड़ी होती तो निर्बुद्धि लोग रोज़ी से तंग न होते।

(हु० हि० पृ० २४१) तुम्हारे धर्म में गायका माँस खाना बतलाओ तो वेद में कहाँ निषेध किया गया है।

(उत्तर) वेद में आम तौरपर माँस खाने का निषेध है देखो पुस्तक "क्या माँस भक्षण धर्मानुकूल है" मास्टर आत्मारामजी मन्त्री विजीटेरियन सोसाइटी लाहौर रचित-और गायका मारना तथा खाना तो अत्यन्त विगर्हित होने से खास तौरपर निषिद्ध हैं देखो "गोकरुणानिधि" स्वामी दयानन्द सरस्वती रचित-हमने भी इसके कई प्रमाण तफ़ज़ीव बराहीन अहमदिया जिल्द १ व ख़ब्त दिमाग़ अहमदिया में लिखे हैं—पर इस जगह आप के प्रबोधार्थ एक प्रमाण और लिखते हैं।

ऋग्वेद अष्टक २ व ६ अध्याय ३ व ७ सूक्त २१ व २२ मंत्र ४व५ और यजुर्वेद अध्याय १ मन्त्र १ में गायके न मारने की आज्ञा है गायका नाम अघ्न्या है देखो निघण्टु अध्याय २ खण्ड ११ इसपर निरुक्तकार यास्कमुनि लिखते हैं अघ्न्या अहन्तव्या भवतीति निरुक्त ११-४३ गायका नाम इसीलिये अघ्न्या है कि वह कभी और किसी दशा में भी मारने के योग्य नहीं।

(हु० हि० पृ० २४३) ब्रह्मचारी परमानन्दने बयान किया है कि मनुस्मृति में लिखा है कि जब ब्राह्मण काशी से विद्यापढ़कर आवै उसका बाप उसकी अगवानी को निकले-और गाय की खाल गर्मा गर्म उसके शरीर पर रक्खे।

(उत्तर) यह आपका कथन उन्मत्तप्रलाप से बढ़कर नहीं है-इसलामी शिक्षा से आप को ऐसी झूंठी बातें बनाने की टेव

पड़गई है-आपकी योग्यता और शास्त्रभिज्ञता तो हमें शब्द विद्या से मालूम होगई—हमारे यहाँ संस्कृत तो क्या भाषाको न जानने वाले भी विद्या नहीं कहते। क्या आपने इसी बिर्तेपर हिन्दूधर्मको त्याग किया था-और इसी योग्यता पर मुसलमान आपको बड़ी २ उपाधियों से अलंकृत कर रहे हैं।

ब्रह्मचारी परमानन्द को लाओ या किसी और को, काशी का तो मनुमें नाम भी नहीं—और न यह कि बाप उसकी पेशवाई को निकले, और न यहकि गायकी गर्मागर्म खाल उसके बदनपर रक्खे, किन्तु मनुस्मृति में तो गाय मारने वाले को बड़ा पापी और अपराधी भी लिखा है—(मनुस्मृति अ० २ श्लोक २४६ और अ० १० श्लोक ६२ व ६३ व अ० ११ श्लोक ५६ व ७८ व ७६ व १०८ से ११५ तक)।

शहजादे दाराशिकोह ने योगवशिष्ठ के फ़ारसी अनुवाद में लिखा है कि राजा दशरथने विश्वामित्र ऋषिको पैरधोने के लिये जल दिया—और एक गाय भेंट (नज़राने) के तौरपर उनके सामने उपस्थित की, क्योंकि हिन्दुओंमें इससे बढ़कर और कोई भेंट नहींहै-(योग वशिष्ठ फ़ारसी पृ० ७ कानपुर)

अब हम गाय के दूध और मांस और गोबर और मूत्र के विषय में वैद्यों (डाक्टरों) की सम्मति लिखते हैं।

(गायका दूध) तुहफ़तुल मोमनीन में लिखा है कि गाय का दूध कान्तिवर्द्धक, पुष्टिकारक, पाचक, वीर्य्योत्पादक, मल प्रक्षालक और मस्तिष्कको बढ़ानेवालाहै, फिर उसीमें लिखाहै गायका दूध विरेचक मासीष्क शीतलता पहुंचानेवाला,शरीर को पुष्टि देने वाला है—और समस्त वातरोग और त्वक् रोगों को शान्त करनेवाला—और औटाया हुआ दूध चावलों के साथ देनेसे आयु को बढ़ाताहै और अखरोट व छुहारेके साथ पीने से गुरदे और शरीर को बढ़ाता है—और लोहे या गरम पत्थर से बुझाया हुआ दूध अतिसार के लिये बड़ा उपयोगी है एवं नाक और कान में टपकाने या शरीर में मालिश करने में आँख और मस्तिष्कके रोगोंको दूर करताहै दीर्घरोगीभीउसके सदा सेवनसे चंगा होजाताहै (तुहफ़तुलमोमीन पृ० ५०४)

इसी प्रकार और इससे भी विशेष क़राबादीन कबीर में भी दूध के गुण लिखे हैं देखो जिल्द २ पृ० ४४७।

(गाय का मांस) मख़ज़नुल अदविया में लिखा है कि गाय का मांस गरम और ख़ुश्क है ऊंट से कम और भेड़ से अधिक–खासियत और तासीर उसकी यहहै कि बहुतदेरमें पचताहै और खूनको बिगाड़ता है और वात के समस्त रोगोंको उत्पन्न करताहै–अतिरिक्त इसके खुजली, दाद और कुष्टादि त्वक् रोगोंको भी उत्पन्न करता है और नित्य सेवन करने से गठिया, प्रमेह और प्रदरादि रोगों को उत्पन्न करता है—और ऊपरसे उसके शराब पीतेहैं इसलिये कि शराब उसको पचाती है–और जो शराब नहीं पीता, उसे कदापि गो मांस का सेवन नहीं करना चाहिये, मख़ज़नुल अदविया पृ० १५१।

हकीम अलीसैना लिखते हैं कि गाय का मांस शोथ, वरम, खुजली, कोढ़ और गठिया को पैदा करता है—क़ानून पृ० २०७।

हकीम मौलवी इमामुद्दीन अहमद किताब बक़ाय नस्ल इन्सान में लिखते हैं-गायका मांस गर्म ख़ुश्क, देरहज़म और ग़लीज़ खून को पैदा करने वाला होता है—पृ० १६६।

हकीम बन्देहुस्न लिखतेहैं कि गायका मांस अत्यन्त गरिष्ट पाचक शक्ति को मन्दकरने वाला, रुधिर को बिगाड़ने वाला बात रोगों को उत्पन्न करनेवाला और जोड़ों और रगोंमें दर्द उत्पन्न करनेवाला है—(जामेंमुफर्रिदात पृ० ६१ कानपुर)

(गायका गोबर) प्रसिद्ध हकीम मुहम्मद मोमिन हुसैन साहब लिखतेहैं गायका गोबर आदि और अन्तमें गर्म बीच में खुश्क और पाचक–राख उसकी इस्तस्का (दाफी) वरम और बहुत से विषों के लिये अकसीर है और लेप ताज़ह उस का जो ठण्डा न हुआ होवै वरम घाव (जो छुरी आदिके लगने या खून के रुकने से होता है) को दूर करता है और ज़ख्म को भरताहै–और जोड़ों और रगोंके दर्दको और विषीले जानवरों के काटनेसे जो दर्द होता है उसको भी फायदा करता है इत्यादि देखो तुहफतुल मोमनीन पृ० ६२ देहली।

गोबरको दाद पर लगाने से भी फायदा होता है जिसकी पुष्टि यहां के वैद्यों ने की है—देखो रिसाला परशानी हिन्दू कानपुर पृ० १५४।

(गायका मूत्र) उदर शूल और अर्श के लिये गोमूत्र बड़ा फायदा करता है और कान और दाढ़ के दर्द के लियेभी बड़ा उपयोगी है देखो तुहफतुलमोमनीन पृ० १६६।

इत्यादि प्रमाणों से सिद्ध है कि गाय का दूध, गोबर और मूत्र अनेक रोगों की औषधि और बड़े उपयोगी पदार्थ हैं और उसका मांस आरोग्यता का नाश करनेवाला और अनेक रोगों को उत्पन्न करने वाला है।

इसीवास्ते करावादीन क़ाई में मुहम्मद साहब की एक हदीस लिखी है जिसका मतलब यह है कि गायका मांस रोग पैदा करनेवाला और उसका दूध आरोग्य देनेवाला है।

परन्तु शोक है मुसलमानों की बुद्धिपर कि न वह हकीमों की राय पर चलते हैं और न अपने पैग़म्बर की हदीस का मानते हैं व्यर्थ के हठ और आग्रह से आये दिन इस देश में हैज़ा फैलाते और उपद्रव मचाते हैं।

क़ामूस में लिखा है कि यह अम्बर दरयाई गायका गोबर है-जिसको तमाम मुसलमान खाते हैं-गायका अम्बर प्रसिद्ध है कमूस जिल्द १ पृ० ३०५।

कुत्ते का मरा हुआ और उस के मुंह से चाबा हुआ हलाल है—कुरान की सूरत माइदय में लिखा है कि जो शिकार सिखलाये हुए शिकारी जानवरों से मारा गया है वह हलाल है इसपर तफसीर हुसैनी में लिखा है कि एकवार रसूल अल्लाह अर्थात् मुहम्मद से अदी व जैद नामक दो पुरुषों ने यह प्रश्न किया कि हम कुत्तों और शिकारी जानवरों की मदद से महमानदारी आतिथ्य) करते हैं और वे हमारे पहुंचने से पेश्तर जानवर को जिबहकर डालते हैं और हक़ताला (खुदा) ने मुरदार को हराम किया है इस प्रश्नका उत्तर देने के लिये मुहम्मद साहब के पास यह आयत उतरी कि सिखलाये हुए जानवरों का मारा हुआ शिकार हलाल है—तफसीर हुसैनी

जिल्द १ पृ० १३७ नवलकिशोर प्रेस व आमे तिरमुज़ी । पृ० २ मुर्तज़वी प्रेस दहली ।

उसी सूर की एक दूसरी आयतपर आहबली बल्लाह साहब फ़र्माते हैं कि भूख के वक्त मुरदार का खाना भी हलाल है पृ० १०१ व १३५ ।

शहद जो मक्खियों का वमन (कै) है उसको मुहम्मद साहबभी खातेथे और सब मुसलमानभी खाते हैं-तफसीर हुसैनी में लिखाहै कि मक्खियां स्वाभाविक रीतिपर फूलों और औषधियों में रसको लेती हैं वह उनके आमाशय में आकर शहद बनजाता है-और वही शहद उनके उदर से लुआब होकर निकलता है जिल्द १ पृ० ३७० ।

कारामूज़ी (उपयोगी) जानवरोंपर दयाका फल ।

तारीख़ फिरिश्ता में एक इतिहास (हिकायत) है कि आरम्भ में नासिरुद्दीनसुबुक्तिगीन अलप्तगीन दरोंशापुर की सेवा में रहता था-इसके पास सिर्फ़ एक घोड़ा था दिन भर जंगल में रहता और शिकार खेलता था एकदिन इसने जंगल में एक हिरनी को देखा कि जो अपने बच्चों के साथ चग रही थी इसने घोड़ा दौड़ाया और हिरनी के बच्चोंको पकड़लिया और उसके हाथ पांव बान्धकर शहरको लेचला-थोड़ी दूर जाकर पीछे को मुंहकिया तो हिरनीको पीछे आता हुआ देखा कि घबराई हुई चली आरही है—अमीर नासिरुद्दीन ने दयाकरके उसके बच्चेको छोड़ दिया-हिरनी अपने बच्चेको पाकर वहां से आनन्द क्रीड़ा करती हुई चलदी-और एक दममें नज़र से गायब होगई-इस घटना के बादही अमीर नासिरुद्दीन सुबुक्तिगीनका भाग्योदयहुआ और वह जबतक जिया आनन्द और मंगल करतारहा । उसीरात को अमीर नासिरुद्दीन ने हज़रत मुहम्मदको स्वप्न में देखा वह कहते हैं ऐ अमीर नासिरुद्दीन तेरीदया और करुणा (जो तैने एक दीन और दुखी प्राणी पर की है) परमात्मा के यहां कबूलहुई और बादशाहत तेरे नाम लिखीगई अब चाहिये कि तू इसी रीतिपर प्रजाका पालनकर

और दया व अहिंसा को जोलोक परलोक में सिद्धि की देनेवा-ली है कभी हाथ से न छोड़ना तारीख़ फिरिश्ता जिल्द १ पृ० २१ सन् १८८४ ई० ।

सादी शीराजी लिखता है-एक मनुष्यने एक बकरी को भेड़िये के मुंहसे छुड़ाया रात को जब खुद उसके गले में छुरी फेरने लगा तो बकरी का रोम २ यह कहता था कि भेड़िये के चुंगल से तैंनेमुझे छुड़ायापर अन्तमें तू खुद मेरे लिये भेड़िया बनगया ।

मूज़ी (दुष्ट) जन्तुओं पर दया का फल ।

सहीह बुखारी व मुसलिम में है रसूल खुदाने कहा कि एक स्त्री जो (व्यभिचारिणी थी) बख्शी गई-इसलिये कि उसने एक कुतियाको (जोकुऐं के किनारे जीभ निकाले खड़ी थी और प्यासके मारे मरीजाती थी-अपने मोजे, को ओढ़नी से बान्ध कर पानी पिलाया—इसी पुण्यसे उसके सब पाप दूर होगये। लोगोंने पूंछा कि क्या हमारे लिये चौपायों में भी कुछ सबाब (पुण्य) है रसूल ने कहा किप्रत्येक मनुष्य जो कोमल हृदय रखता है पुण्य का भागी है जिल्द २ पृ० २३७ ।

इसीके अनुसार सादी शीराजी ने बोस्तां में भी लिखा है कि एक मनुष्यने जंगल में एक कुत्ते को प्यास से मरता हुआ देखा-उसने दयाकरके अपनी टोपीका डोल और पगड़ी की रस्सी बनाकर उसकेलिये पानी निकाला—पैगम्बर ने खुदा से सुफारिश करके उसके अपराधों को क्षमाकराया इत्यादि ।

फिर एक और हदीस में है कि एक स्त्री एक बिल्ली के बदले नरकमें गई जिसने उसेबन्द करके खाने पीने से बञ्चित करदिया था—वह विचारी कूड़ा कर्कट ही खाती थी ।

फिर दौसी ने क्या अच्छा लिखा है कि चींटी को भी मत सता क्योंकि वह जान रखती है और जान सबको प्यारी है ।

एक और महात्मा लिखते हैं कि किसी प्राणी को मतसता और जो चाहे सोकर—हमारे धर्म (शरअ) में इससे बढ़कर और कोई पाप नहीं है ।

अब पाठक स्वयं ही न्याय करें कि मांस खाना उचित है या नहीं-और जानवरों का न मारना कितना बड़ा पुण्य कार्य्य है अर्थात् जितना फल सारी उमरके नमाज़ व रोज़ह से होता है-उससे अधिक तुम्हारे ही मतानुसार एक प्यासी कुतिया को पानी पिलानेसे होता है क्योंकि परिणाम दोनोंका मुक्ति है॥

प्रहसन ।

मलिकुल मौत (यमराज) के पास मनुष्य और सांप दोनों गये-यमराज ने भीतरसे पुकारा कि पहलेमूज़ी (दुष्ट) आवे॥ मनुष्यने साँप से कहाकि मूज़ी तू है तू पहलेजा-सांपने कहा कि तू मूज़ी है पहले तूजा-इसी झगडे में समय बीतगया और कोई अन्दर न गया-यमराज क्रोध में भरा हुआ बाहर आया और मनुष्य के मुंहपर एक थप्पड़ मारा और कहा कि हमने तुझको बुलाया था तूक्यों नहीं आया-उसने कहा कि आपने मूज़ी को बुलाया था-मूज़ी साँप है मैं नहीं-यमराजने कहा कि तू पुण्य समझकर मारता है और वह मजबर होकर काटता है इसलिये तू मूज़ी है। मनुष्य ने कहा कि हमारी पुस्तकों में लिखा है कि सांप मूज़ी है उसका मारना पुण्य है यमराज ने एक और थप्पड़ मारा और कहा हम खूबजानते हैं कि कलम दुश्मन के हाथ में है।

अध्याय चौथा

पुराण विषयिक आक्षेपों के उत्तर

पुराण * आर्य्यों की धर्म पुस्तक नहीं और न उनका धर्म से कोई सम्बन्ध है-कभी धर्म के निर्णय में पुराणों से सहायता नहीं लीगई और न लीजानी चाहिये—पुराण उस समय के नहीं जब आर्य्य जाति उन्नति के उच्चतम शिखर पर चढ़ी हुई थी—किन्तु बहुत निकट समय के बने हुये हैं सब पुराण बुद्ध और विक्रमादित्य के पीछे के बने हुये हैं। पुराण एक गुप्तभेद को पूरा करने (बुद्धमत को संसार में फैलानेके लिए) पालिसी से बनाये गये हैं। पुराण में बुद्ध को अवतार माना गया है। उनमें और सब देवताओं की निन्दा कीगई और उन पर दोष लगाये गये हैं परन्तु बुद्ध को बिलकुल निर्दोष छोड़ा गया है—जो कि बौद्ध मतकी उन्नति के समय में पुराणों के बनमें का एक पुष्ट प्रमाण है जो आप को भी स्वीकृत है-देखो पृ० ५३ पं० १९।

---

* प्रसिद्ध विद्वान् मौलवी जकाउल्लासाहब प्रोफेसर लिखते हैं—"अठारह पुराणों में वेद को अपौरुषेय माना है और बड़े मान्य और आदर के साथ उनका नाम लिखागया है—परन्तु जो पुराणों का मत है वह वेदों से निराला है-इन दोनों मतों में आकाश पाताल का अन्तर है-यद्यपि हिन्दू इस बात में प्रसिद्ध हैं कि वह अपनी कुल रीति और आचार विचारों को परिवर्तन नहीं करते—परन्तु वेद से तो उन्हों ने ऐसा विरुद्धाचरण किया है कि यदि कोई हिन्दू वेद के अनुसार मत स्वीकार करै तो वह हिन्दू नहीं देखो तारीख़ हिन्द हिस्सा १ बाब ११ फसल १३ सन् १८७५ ई० वास्तव में यह सच है वह हिन्दू नहीं किन्तु आर्य्य, कहलाता है।

बहुत से पुराण अकबर बादशाह के समय तक बनते रहे और कई औरङ्गजेब के समय तक—पुराणों में रामानुज का वर्णन है औरङ्गजेब के मन्दिर तोड़ने का सविस्तर वृत्तान्त पाया जाता है, हिन्दू राजाओं के मुसलमान होने के समाचार हैं, तमाकू पीने का निषेध है, म्लेच्छ मन्दिर तोड़ रहे हैं और नारदजी रोतेहुये बदरिकाश्रमके पहाड़ों में जाते हैं विष्णु ऋषि से मिलते हैं, शंख, चक्र, गदा, पद्म का उल्लेख है। परन्तु शंकराचार्य्य की पुस्तकों में पुराणों का पता नहीं। अतएव पुराण न इतिहास और न धर्म सम्बन्धी पुस्तकें हैं वह केवल नाटक या उपन्यास हैं—जिनमें बुद्धि और विद्या के विरुद्ध सैकड़ों बातें भरी हुई हैं-सच पूछो तो कुरान और पुरान एक जैसे हैं—न वह घाट न यह बाढ़ दोनों एक थैली के बट्टे हैं।

वेद में ब्रह्मा, विष्णु, महेश या किसी और देवता की पूजा का

(शेष नोट) फिर उक्त प्रोफ़ेसर साहब लिखते हैं "कि अब ब्राह्मणों का बनायाहुआ मत पौराणिक जो बहुधा हिन्दुओं ने स्वीकार किया है उसका सारांश यहहै कि ब्रह्मा, विष्णु शिवको मानते हैं जिनका वर्णन ऊपर हो चुका है-जिस ब्रह्म का विवरण वेदों में है उसको हिन्दुओं ने बिसार दिया और अवतारों की पूजा करने लगे—राम, कृष्ण, विष्णु के अवतार मानेगये और अगणित छोटे २ देवता पूजनीय ठहराये गये" फिर लिखते हैं "कि पुराणोंका मत हिन्दुओं के दार्शनिक मत से कुछ भी मेल नहीं खाता—देखो तारीख़ हिन्द हिस्सा १ बाब १ फसल १३ पृ० ८० सन् १८७५ ई० फिरलिखाहै कि वेद से मूर्तियोंका बनाना और उनकी पूजाके लिये उपचारों का कल्पित करना सिद्ध नहीं होता-राम,कृष्णका तो नाम भी उस में नहीं देखो तारीख हिन्दहिस्सा१बाब१ फसल८ पृ०५०सन् १८७५ ई०फिर लिखाहै एक ईश्वरके तीन बड़े अंश ब्रह्मा,विष्णु,महेश, जो ठहरायेगये हैं-उनका विधानमनु, में बहुतही कमआया है। न उनको कुछ विशेषता दीगई, न पूजाके योग्य ठहराये गये

विंधान नहीं और न उनकी ईश्वरता का वर्णन है। उस में केवल एक परमात्मा ही उपासना के योग्य बतलाया गया है। और उसीको सृष्टिका कर्त्ता, धर्त्ता और हर्ता मानागया है। वेद में यह आज्ञा है कि जो एक परमेश्वर के सिवाय किसी और की उपासना करता है वह मूर्खता के जङ्गल में भटकता फिरता है। रामकृष्णका वेदों में पता नहीं और न परशराम या बुद्ध की कथा। किसी अवतार की गाथा वेदों में नहीं और न वैदिक धर्म के अनुसार अवतार ईश्वर का हो सकता है। ६ शास्त्रों में भी इन देवताओं का कहीं पता नही मिलता और न १० उपनिषदों में उनका कोई चिन्ह है। अतः आर्य्य धर्म या वैदिक धर्म पर आप के यह आक्षेप नहीं हो सकते क्योंकि हम पुराणों को सर्वथा नहीं मानते और न किसी देवता को ईश्वर जानते हैं।

(शेष नोट) न उनका अवतार होना सिद्ध है। मनु में सती होने का भी लेख नहीं हिन्दुओं की सारी रीतियाँ (रसूम और अटराग वेद और मनु से पीछे की बनावट है। देखो तारीख हिन्द हिस्सा १ बाब १ फसल ६ पृ० ५० सन् १८७५ ई०

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ इलफन्स्टन साहब लिखते हैं-"इस नूतनमत (अर्थात् हिन्दुओं के आधुनिक मत) की पवित्र पुस्तकें अठारह पुराण हैं जिनके अनुयायी कहतेहैं कि वे सब व्यासजी के बनायेहुए हैं। परन्तु वास्तव में वे आठवीं और सोलहवीं सदी के मध्य में भिन्न २ स्थानों पर भिन्न २ मनुष्यों द्वारा निर्मित हुए हैं। इन पुस्तकों में से बहुतसे पुस्तक सम्प्रदाय विशेषों के मन्तव्य और उनकी पुष्टि से भरेहुए हैं। और सब पुस्तकों में जो प्रत्येक सम्प्रदाय के इतिहास और चरित्र भरेहुए हैं। इस कारण यह सबके सब एक ऐसा संग्रह नहीं है कि जिस में एक को दूसरे से कुछ सम्बन्ध या सादृश्य हो। वह कदापि इस मनोर्थ से नहीं बनाये गये कि उन से कोई धर्म की विधि वा प्रणाली प्रचलित की जावे। परन्तु तो भी वह सब धर्मके विषय में परम प्रमाण मानेजाते

जबकि हम या कोई और विवेचक पुरुष पुराणों को धर्म पुस्तक नहीं मानते और न प्रामाणिक जानते हैं। तो फिर उनपर किये हुए आक्षेप (जिनकी बुनियाद ही कल्पित है) क्यों न कल्पितहोंगे-और जो उनकल्पित आक्षेपों पर घमण्ड करें उसकी दशा कैसी शोचनीय है।

'परन्तु इस दशा में भी कुरान उनसे किसी तरह बढ़कर नहीं-जैसे कुरान प्राचीन गाथाओं से भराहुआ पड़ा है ऐसे ही पुराण भी—हम कोई हेतु नहीं पाते कि एक को दूसरे से विशेष ठहरावें'। इसलिये हम पुराणों पर किये हुए आक्षेपों का उत्तर प्रारम्भ करते हैं।

हैं और जो कि इन्हीं पुस्तकों से हिन्दुओं का आधुनिक मत बना है इसलिये कुछ आश्चर्य्य नहीं जो उसमें परस्पर विरुद्ध बातें मिलती हैं" (देखो तारीख हिन्दोस्तान, पृ० १६४ सन् १८६६ ईसवी।

(शेष नोट) (इस समय के देवताओं का बयान) जैसा कि हम लिखचुके हैं। यद्यपि अब भी हिन्दू एक अद्वितीय परमात्मा को मानते हैं। जिससे यह सृष्टि सारी उत्पन्न हुई क्योंकि उनके आधुनिक विश्वासानुसार यह संसार और ईश्वर एक ही है) तथापि नाना देवताओं की पूजा करते हैं जिनकी संख्या नियतकरनी असम्भव है। परन्तु कोई २ उन की संख्या तैंतीस करोड़ बतलाते हैं जो अयुक्तिसे भरीहुई है इनमेंसे कितने ही आकाश में रहने वाले अयोनिज हैं जिनकी गिनती लाखों से होती है और वह कोई व्यक्तिगत नाम या गुण नहीं रखते देखो कैड़ी साहब की किताब और तारीख हिन्दोस्तान पृ०१६४ सन् १८६६ ईसवी (हिन्दू धर्मकी वर्त्तमान दशा अर्थात् मनुके समय से अबतक जो परिवर्त्तन हुये) जो बड़े परिवर्त्तन मनु के समय से हिन्दू धर्म में हुए हैं वह यह हैं एक ईश्वर से विमुक्त होजाना, वास्तिविक देवताओं को छोड़कर कल्पित देवताओं की पूजा करना।

ब्रह्मापर आक्षेप और उनका उत्तर।

(कु०हि०पृ० २१-२२ व १३२-१३५) ब्रह्माने अपनी पुत्री को कुदृष्टि से देखा और चाहा कि उसको पकड़लूं-महादेव प्रगट हुए और कहाकि ए! ब्रह्मा तुमने जो अपनी पुत्री से मैथुन करनाचाहा-हमने तीनों लोकमें ऐसा पाप करनेवाला कोई नहीं देखा-तुमपर और तुम्हारी बुद्धि और वेदज्ञतापर धिक्कार है। ऐसा पाप न किसीने किया और न कोई करेगा शिवपुराण हिस्सा १ खण्ड २ पृ० ५० से ५६ तक।

(उत्तर) यह किसी धूर्त दुराचारी पुरुष की घड़न्त है जो कदापि सभ्य पुरुषों के मानने के योग्य नहीं, क्योंकि सच्छास्त्रों में इसका कहीं पता नहीं-परन्तु तुम्हारी पवित्र तौरेत में जिसपर तुम्हारा पूराविश्वास है तुम्हारा ईश्वर मूसानबी को यह आज्ञा देता है "और लूतज़गर से अपनी दोनों बेटियों समेत निकल कर पहाड़ पर जारहा-क्योंकि जंगल में रहने से उसे शंकाहुई और उसकी दोनों बेटियां एक गुहा में रहनेलगीं। तब पहलौठी ने छोटी से कहा कि हमारा बाप बूढ़ा है और पृथ्वी में कोई पुरुष नहीं जो संसार के नियमानुसार हमारे पास आवे। आओ हम दोनों अपने बापको शराब पिलावें और उससे संयोगकरें। ताकि हमारे बापका वंशोच्छेद नहो। सो उन्होंने उसी रात अपने बापको शराब पिलाई और पहलौठी भीतर गई। और अपने बापसे संयुक्त हुई। पर उसने उसके लेटते और उठते वक्त उसे न पहचाना। दूसरे दिन बड़ीने छोटीसे कहाकि देख कलरात में अपने बाप से संयुक्त हुई आओ आजरातको भी उसे शराबपिलावें और तूभी

---

* वास्तविक देवताओं से अभिप्राय पञ्चदेव पूजासे है जिसकी आर्य्य धर्मानुकूल प्रत्येक मनुष्य को आज्ञा है वह पांच देव यह हैं (१) परमेश्वर (२) माता (३) पिता (४) आचार्य्य (५) अतिथि—इन पांचों देवताओं की पूजा प्रतिदिन मनुष्य को यथा योग्य करनी चाहिये और आर्य्यों के पंच महायज्ञों का उद्देश्य यही है।

आकर उससे हम बिस्तर (संयुक) हो-सो उस रात को भी उन्होंने अपने बापको शराब पिलाई—और छोटी उससे संयुक्त हुई और उसने उसको भी लेटते और उठते वक्त नहीं पहचाना सोलूत की दोनों बेटियां अपने बाप से गर्भवती हुईं और बड़ी एक बेटा जनी और उसका नाम मुग़ाब रक्खा—वह मुग़ाबियों का जो अबतक हैं बापहुआ—इसी प्रकार छोटी भी एक बेटा जनी उसका नाम अभी रक्खा—यह बनीअमू का जो अब तक हैं बापहुआ—(देखो तौरेत पैदायश बाब १६ आयत ३० तक पृ० २५ कालम् १ सन् ८३ ई० लुधियाना प्रेस)।

ब्रह्मा का परिणाम

(१) ब्रह्माके दुराचर की कहानी एक बनावटी किस्सा है जिसका सिवाय पुराणों के (जिनमें और भी अनेक असम्भव बातें लिखी हुई हैं) वेदादि सत्य शास्त्रों में पतातक नहीं।

(२) उस बनावटी किस्से के अनुसार भी ब्रह्माने अपनी पुत्रीपर सिर्फ़ कुदृष्टि की न कि व्यभिचार।

(३) इसपर महादेव ने उसको धिक्कृत और तिरस्कृत किया न कि उसके अपराध को क्षमा।

(४) कायिक पाप नहीं हुआ केवल मानसिक पापमात्र।

(५) धिक्कार और तिरस्कार रूपदण्ड भी कुछ कम नथा।

लूत का परिणाम

(१) हज़रत लूत का इतिहास (किस्सा) स्वयं ईश्वर ने तौरेत में मूसानबी पर प्रेषित (नाज़िल) किया—न कि कोई बनावटी किस्सा।

(शेषनोट) ऐसे अनित्य पदार्थों की पूजाका प्रचार जिन में ईश्वर के गुण मानलिये हैं, सम्प्रदायों की बहुतायत किन्हीं किन्हीं देवताओं से विमुख होकर कि किन्हीं को पूजनीय और मुक्तिदाता मानना, वेदों के स्थान में पुराणों का प्रचार और काषायाम्बर धारी लोगों को धार्मिक जगत में आदर मिलना इत्यादि तारीख़ हिन्दोस्तान पृ० १६० व १६१ सन् १८६६ ई०

(२) स्वयं ईश्वर और मूसाकी साक्षी है कि हज़रत लूत ने अपनी दोनों पुत्रियों की ओर सिर्फ कुदृष्टिही नहीं की किन्तु व्यभिचार भी किया।

(३) इस कुकर्म करने पर हज़रतलूत से खुदा या जब्राईल अप्रसन्न नहीं हुये किन्तु प्रसन्न होकर उसी शुभ मुहूर्त में गर्भ भी ठहरादिये।

(४) ईश्वर की कृपा से वे गर्भक्षीण भी नहीं हुए और नपतितहुये किन्तु उनसे दो कुल उजागर पुत्र उत्पन्न हुये।

(५) हजरतलूत ने सिर्फ व्यभिचारही नहीं किया किन्तु मद्य भी पिया।

(६) हजरतलूत ने सङ्कल्पही नहीं किया किन्तु व्यभिचार भी।

हज़रत-लूत ने सिर्फ एक पुत्री से व्यभिचार नहीं किया किन्तु दोसे।

प—मुस्मदी भाइयो ? जरा ईश्वरके लिये विचारकरो कि सन्तान भी हुई—पैग़म्बर वदस्तूर बने रहे-और इन्हीं तीनों को ईश्वरने अत्यन्त पवित्र समझ कर और सबमें से चुनकर इसी पवित्र काम के लिये गन्धक की आग से बचाया था इन्ही हज़रत लूत पर ख़ुदाका इलहाम भी उतरा करता था यह हज़रत इब्राहीम के आत्मीयों मेंसे थे अर्थात भतीजे थे

फिर वही इतिहासज्ञ लिखते हैं—जो कुछ होता हुआ हम देखते हैं वह सब यद्यपि धर्मके नामसे होता है-तथापि उसमें धर्मकी अनुकूलता (पावन्दी) बहुत कम होती हैं-इस दशामें भी यदि तत्वपर दृष्टिडाली जावे आदि समय से अबतक धर्म के प्रभाव (असर) में बहुत कम ह्रासहुआ है-परन्तु हिन्दुओं के उपास्य अब वही नहीं रहे जो पहले थे-एक ईश्वर की पूजा (जिसको वेदने परम धर्ममाना है) के स्थान में अनेक और विलक्षण देवताओंकी पूजा और मूर्तिपूजाकी रीति प्रचलितहोगई है-यद्यपि ईश्वरकी एकताको लोग सर्वत्र भूल नहींगये-तथापि सिवाय विद्वानों और अध्यात्म वादियोंके कोईमनुष्यएकता को

कोई साधारण पुरुष भी नहीं; किन्तु पैगम्बर थे अब ज़रा न्याय करो कि ब्रह्मा से वह कितने अधिक अपराधी हैं, कितने अधिक व्यभिचारी हैं और कितने अधिक निन्दनीय हैं-कमसे कम डबल अपराधी होने में तो कोई मूर्ख भी इन्कार नहीं करसकता।

और हुज्जतुल हिन्द पृ० ८१ पर आप लिखते हैं कि ब्रह्मा की कोई पौरुषेय व्यक्ति नहीं है—यदि यह सच है तो ब्रह्मा पर कोई कलङ्क नहीं आसकता और सिर्फ हज़रत लूत ही अपराधी ठहरे।

(हु० हि० पृ० २२ व २३) एक विवाह में ब्रह्मा का वीर्य भूमि पर गिरपड़ा महादेव ने वध करना चाहा—ब्रह्मा और विष्णु महादेव के चरणों पर गिरपड़े और इतने भी बहुत खुशामद की तब प्रसन्न हुए और कैलाश पर्वत पर सुशोभित हुए। शिवपुराण।

(उत्तर) हमारी प्रामाणिक पुस्तकों में इसका कहीं पता नहीं पुराण प्रामाणिक कोटि में नहीं। इसलिये यह किस्सा बनावटी है—परन्तु तुम्हारी प्रामाणिक पुस्तकोंमें एक ऐसाही इतिहास मौजूद है-हज़रत आदम पर (जो तुम्हारे वंशधर और आदि पुरुष थे) ऐसीही घटना हुई-स्पष्ट विवरण उस का तफसीर हुसैनी में इसतरहपर कियागया है कि एकबार

(शेषनोट) दृढ़ता के साथ नहीं मानता। तारीख़ हिन्दोस्तान पृ० १६२ सन् ८६ ई० इस वर्तमान विपत्ति को जो पुराणों की शिक्षा से आर्यधर्म तथा आर्य जातिपर (जो सम्प्रति हिन्दू नाम से प्रसिद्ध हैं) आचुकी है-जिसका मुख्य कारण वेदों को छोड़कर और सचाई से मुंह मोड़कर पुराणों का आश्रय लेना है इसकी प्रायः निष्पक्ष इतिहासज्ञोंने पुष्टि की है—और अन्ततोगत्वा उन्होंने यह सम्मति दी है कि इस विप्रतिपत्तिके होने पर भी सिवाय आर्यावर्त्त के कोई देश ऐसा नहीं मालूम होता जहाँ धर्म प्रतिक्षण लोगों की दृष्टि के सन्मुख रहताहो। तारीख़ हिन्दोस्तान पृ० १६१ सन् १८८६ ई०

आदमका वीर्य पात हुआ और वीर्य उसका मट्टीमें मिलगया आदम यह देखकर भयभीतहुआ—ईश्वरने उस मट्टी मिले हुये वीर्य से याजूज माजूज को जो मनुष्यों के वंशधर हुए उत्पन्न किया—बस जो लोग कहते हैं कि पैगम्बरों का वीर्य स्खलित नहीं होता मिथ्या है। तफसीर हुसेनी जिल्द २ पृ० २५ (हु० हि० पृ०१३५और १६ सेर६तक) (१) ब्रह्माने कईबार ईश्वरत्व (खुदाई) का दावा किया (२) और वेद कि जिसको ईश्वरीय वाक्य मानते थे उसकी आज्ञा को न माना इसलिये उसका शिर कटगया या जलगया—

(३) और यहबात ठहराई गई कि जो कोई लिंगका आदि वा अन्त देखआवे वही ईश्वर है और झूंठ कहदिया कि मैंने लिंग को छूलिया है और इसके लिये दो गवाह झूंठ बनाये (४) और अपनी पुत्री सरस्वतीपर आसक्त हुए और उससे मैथुन करने की इच्छाकी-जिसपर महादेव ने उनको धिक्कार दिया—(५) और पुनर्वार अपनी पुत्री को देखकर वीर्यस्खलित किया (६) और सुन्दरासुन्द को ईश्वर की भक्ति से विमुख किया और इन्द्र के पापों को निरपराधियों की गर्दन पर रखदिया (७) और पांचवां हिस्सा उनके वाक्य का झूंठ और अन्यथा हुआ यह सब बातें प्रमाण पूर्वक १ फसल में लिखी जाचुकी हैं—अब यह बतलाइये कि इन सब बातों में से आप ब्रह्मा की किस २ बातसे इन्कार करोगे और किसकाम के लिये प्राश्चितका होना सिद्ध करोगे-शरीरमें सैकड़ों छिद्र हैं कहां कहाँ रुई रक्खोगे।

(उत्तर) आपने ब्रह्मापर पुराणों के प्रमाण से ७ कलंक लगाये हैं परन्तु कहीं किसी पुराणका लेख उद्धृत नहीं किया और न उनका ठीक २ पताही दिया—साराबल आपका सौतुल्ला अख्बार पर है हर जगह उसीका प्रमाण दिया गया है मूल पुस्तकों से कुछ प्रयोजन नहीं—सौतुल्लाअख्बार की मु० इन्द्रमणिसाहब मुरादाबादी ने अपने अपने बनाये इन्द्रवज्रमें खूब धज्जियां उड़ाई हैं और उसकी त्रुटियां सर्व साधारण को अच्छी प्रकार दिखलाई हैं—आर्ष ग्रन्थों के अनुसार जिनका

विवरण इसी पुस्तक में लिख चुके हैं और श्रीमान् स्वामी दयानन्दसरस्वती जी ने भी सत्यार्थप्रकाश में लिखदीहैं (देखो पृ० ७१ से ७३ तक) कोई आक्षेप या कलंक ब्रह्माजी या किसी और ऋषि मुनि पर नहीं आसकता आर्यसमाज स्वयं ऐसी बातों को जो वेद और युक्ति के विरुद्ध है नहीं मानता-परन्तु हम बतलाते हैं कि दीनइसलाम के साधारणता सब नबी और विशेष मुहम्मद साहब इन आक्षेपोंके भारसे दबेहुवेहैं।

वह दूसरों के वैद्य नहीं किन्तु स्वयं इनरोगों में ग्रस्त हैं हम अप्रमाणिक पुस्तकों यथा अमीर हमज़ा और अलिफलैला की साक्षी न देवेंगे किन्तु इसलाम के खुदा और माननीय आचार्यों के मूल पुस्तकों से प्रमाण देवेंगे जिस में आपको किसी तरह का सन्देह न रहे।

पैगम्बरोंने खुदाई का दावा किया।

तुम्हारे यहां के प्रसिद्ध नबियों ने खुदाई का दावा किया है-हज़रत ईसाने खुदाई का दावा किया-चारों इञ्जील इसकी गवाह हैं—सारे अनुयायी उसको ईश्वर मानते हैं-सैकड़ों मुसलमान भी दीन इसलाम से फिरकर उसकी खुदाई को मानने लगे और यहां तकही बस नहीं किया किन्तु उनमें से कई विद्वानों ने इसलाम के खण्डन में पुस्तकें लिखी हैं सविस्तर देखो नियाजनामा जो मौलवी सफ़दर अलीसाहब इन्सपेक्टर मदारिसका रचा हुआहै और जौहर कुरान जो मौलवी अब्दुल्लाआथमसाहब एकस्ट्राअसिस्टैण्ट कमिश्नरका बनाया हुआ है-और तहकीक ईमान, तारीख मुहम्मदी, हिदायतुल मुसलमीन और नग़में तम्बूरी मौलवी अमादउद्दीन साहब रईस पानीपत विरचित इत्यादि।

स्वयं हज़रत मुहम्मद ने भी खुदाईका दावा किया-अपने हाथको खुदाका हाथ कहा-कुरानमें आयतहै जिसका तर्जुमा यह है (खुदाका हाथ है ऊपर हाथ तुम्हारे के) और हदीस में भी उन्होंने खुदाईका दावा किया है जिसका तर्जुमा यह है (मैं खुदाके नूर से हूं)।

शेख फ़रीद उद्दीन अत्तारसूफ़ीने हदीस लौमअ् अल्लाहसे मुहम्मद साहब को खुदा साबित किया है।

मसनवी रूमी में एक वली और बायज़ीद बस्तामीका सम्वाद लिखा है जिसमें उस वलीने अपने आपको खुदा कहा है—(देखो मसनवी रूमी दफ्तर दूसरा पृ० २४३ सन् १२७२ हि० हैदरी प्रेस बम्बई)।

मीरज़िया उद्दीन साहब भी पद्मावत में मुहम्मद साहब को खुदा सिद्ध करते हैं—देखो पद्मावत नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित का पृ० ४ व ५।

मौलवी जामीने यूसुफको खुदा कहा—देखो जुलेखा सन् १३०५ हि० पृ० ३२ नवलकिशोर प्रेस लखनऊ।

एक मौलवी कहता हैः।

यह तहकीक पहुंची हैं हमको ग्रहद। अहद है सो अहमद है अहमद अहद॥ (अर्थ) यह निश्चित रीत पर हमको मालूम हुआ है कि खुदा मुहम्मद है और मुहम्मद खुदा॥ सदीकी कहता हैः—

अहमद को हमने जानरक्खा है वही अहद। मज़हब कुछ और होगा किसी बुलफ़िज़ूल का। (अर्थ) हम तो मुहम्मद को ही खुदा समझते हैं किसी बेवकूफ का और कुछ मज़हब होगा। ज़ामिन कहता हैः—

कोई समझता है अहमदको बन्दहे बिल्कुल। खुदा रसीदों ने उस जात को खुदा समझा। (अर्थ) कोई मुहम्मद को बन्दह समझता है पर खुदा के जानने वाले तो उसे खुदा ही समझते हैं।

मुहम्मद साहब ने कुरान का हुकम न माना।

कुरान में लिखा है कि बिना व्यभिचार के स्त्री को तिलाक (त्याग) मतदो परन्तु मुहम्मद साहब ने इसके विरुद्ध काम किया अर्थात् अपनी स्त्री सूदह को इस अपराध पर कि वह बूढी होगई थी बिना व्यभिचारके तिलाक देदिया—देखो कुरान

की सूरतें तिलाफ में लिखा है:-मत निकालो औरतोंको घरोंसे सिवाय उसदशा के जबकि व्यभिचार करें।

तफ़सीर हुसैनी में लिखा है कि हज़रत पैगम्बर ने सूदह बेटी ज़मीअहको तिलाक दिया-वहउस मार्गमें बैठाईगई जिधर से होकर हज़रत निकलते थे-जब सय्यद आलम उधर होकर गुज़रे तो सूदह रोनेलगी और बड़ी आधीनता से कहा रसूल मेरी प्रार्थना सुन मैं ईश्वर की सौगन्द खाकर कहती हूं यद्यपि पुरुषों के स्नेह से मेरा हृदय शून्य होगया है तथापि मेरी यह इच्छा है कि क़यामत (प्रलय) के दिन में तेरी स्त्रियों के समूह में गिनीजाऊं इसलिये तूमेरा त्याग मतकर-मैं यह प्रतिज्ञा करतीहूं कि आज से मैं अपनी वारीआयशा को देदूंगी-हज़रत ने यह सुनकर इसको स्वीकार किया और उसकी बारीके दिन आयशा के घरमें रहते थे (तफ़सीर हुसैनी जिल्द १ सूरते निसा पृ० १३७)

और इसीतरह मुहम्मद साहबने तौरेतका हुकम न माना ऊंट जो सुवर के सदृश हराम था उसको हलाल करदिया तौरेत अह्बार ११, ४-७

झूंठ का सबूत।

अपने से पहले सब नबियों तथा तौरेत और ज़बूरके विरुद्ध झूंठा दावा किया कि मैं खुदा का नबीहूं-और एक झूंठ यह बोला "कि यहूदी कहते हैं अज़ीर खुदाका बेटा है" दूसरा झूंठ यह बोला "कि ईसाको सूली नहीं लगी,, तीसरा झूंठ यह कहाकि मैं रातको घोड़े पर चढ़कर और मैराजका ज़ीना लगाकर आसमान पर खुदा से मिलने गया था। देखो क़ुरान सूरत नजम व सूरत बनी इसराईल व हदीस बुख़ारी पृ०५ व ६ व तारीख इसलाम सन् १२६८ हि० जिल्द १ नं० २ तफसीर साफी व काफी कलीनी में हबीब इब्नबशर और मआलिम तनज़ील की गाथा (रिवायत) है-(सूरत नमल आयत १८) हज़रत अलीने झूंठ कहा, खुदाके हुकम से एक फिरिश्ते ने झूंठकहा, जबरईल और मूसाका फरेब, इब्राहीम पैगम्बरने झूंठ बोलकर

बाप और खुदाको फरेब दिया, इब्राहीम पैगम्बरनेझूंठबोलकर अपनी जोरूको बहनकहा और फिरउससे मैथुन किया देखो तारीख अम्बिया सन् १२७६ हि० देहली पृ० २८२-२८३-२८५ पं० २ व ३ और पृ० ६६ और तौरेत पैदायश बाव २० आयत १३ बाब २६ आयत ८ और बाब २७ तारीख आम्बिया पृ० ४८ व ५३ मुरतजाई प्रेस देहली और तारीख तिबरा पृ० ५७ व ६४ सन् १२९१ हि० नवलकिशोर प्रेस।

तुम्हारी शरीअत (धर्मशास्त्र) में अवसर पड़ने पर झूंठ बोलनेकी विधि है-तक्किये वाली आयत में साफ लिखाहै कि मौका पड़नेपर झूंठ बोलना बुरानहीं-शीया लोग कहते हैं कि अलीने और मुहम्मदने साहबने तक्किया किसी मतलब के लिये झूंठ बोलना भी किया है इसलिये हमपर भी उसका करना फर्ज है-अकूबत पृ० ७८ व हिदायत पृ० २६७ व तुहफा नं० ९७५

और देखिये इमाम मुहम्मद गिज़ाली साहब क्या लिखते है

रसूल अल्लाह ने तीन जगहों में झूंठ को अवकाश दिया एक युद्ध में कि अपना लश्कर शत्रु से सत्य न कहे—दूसरे यह जो दो मनुष्यों में सन्धि कराता है एक दूसरे की ओर से उन बातों को कहता है कि जिनसे मेल दृढ़ होता चाहे वह उन में से किसी ने न कहीं हो—तीसरे वह जो दो स्त्री रखता है हर एक से यही कहता है कि मैं तुझे अच्छा समझता हूं देखो कीमिया सआदत पृ० २९२ सन् १२७९ हि० नवलकिशोर प्रेस और मज़ाहर हक जिल्द ४ पृष्ठ ९५ १५५ तुहफतुल अख्यार नं० १७१ व १९३

मुहम्मद साहब ने अपनी पुत्रवधू से विना विवाह के प्रसंग किया।

मुसम्मात जैनब जो ज़ैद (जिसे मुहम्मद साहब ने अपना दत्तक पुत्र बनाया था) की विवाहिता स्त्री थी उससे हज़रत ने बिना विवाह किये मैथुन किया और झूंठ बोला कि खुदा ने आसमान पर मेरा निकाह पढ़ा है और जबरईल गवाह है

पाप का संकल्प ही नहीं किया किन्तु अमल भी--सविस्तर देखो तफ़सीर हुसैनी जिल्द २ सूरत अजराब पृ० १६२ सन् १२६६ हि० ।

मुसम्मात हव्वा जो आदम के शरीर से निकली थी जैसे पुराणों के लेखानुसार ब्रह्मा के वदन से वाक् (सरस्वती) उस से हज़रत आदम ने मैथुन किया—वाणी का मुंह से निकलना यह एक सीधा सादा अलंकार है यह किसी स्त्री का नाम नहीं और न ब्रह्मा की बेटी का नाम है—अमरसिंह लिखते हैं 'गीर्वाग्वाणी सरस्वती' अर्थात् यह चारों बोलने की क्रिया के नाम हैं परन्तु हज़रत आदम पर वह आक्षेप प्रलय तक बना रहेगा।

इसी प्रकार हज़रत आदम के सब पुत्र अपनी बहनों से प्रसंग करते थे और खुदा का हुक्म था तौरेत बाब पैदायश व तरीख़ अम्बिया पृ० १० सन् १२८१ हि० ।

नं० ५ का उत्तर यह है कि जब सारे मुसलमान मुहम्मद साहब के पुत्रवत् हैं तौ फिर हज़रत ने उच्चश्रेणी के मुसलमान की पुत्रियों से क्यों विवाह किये जो सरासर इलज़ाम है ज़रा बुद्धि से सोचो।

मुहम्मदसाहब ने मुसलमानों को ईश्वरकी उपासना से रोका।

उच्चश्रेणी के मुसलमान अधिक भक्ति करना चाहते थे—मुहम्मद साहब ने उनको रोका ऐसा न हो कि कहीं लोग इन की तरफ़ झुकजायें—देखो तफसीर हुसैनी में लिखा है कि एक दिन हज़रत ने अपने मित्रों के लिये कयामत की और स्वर्ग का द्वार नहीं खोला— कुछ मित्रों ने जिन में सद्दीक़, मुरतज़ा मिकदाद, आबूदज़, और सुलैमान भी शामिल थे उस मानके मकानपर कमेटी की और सब ने मिलकर यह प्रण किया की आज से हम लोग इस तरह पर अपना जीवन बितायेंगे अर्थात् दिन में रोजह और रातको जागरण करेंगे, शय्या पर न सोवेंगे, मांस और चर्बी न खावेंगे, स्त्रियों के

पास न जावेंगे, संसार से मोह छोड़कर और कम्बल धारण कर पृथिवी की परिक्रमा करेंगे और इस प्रण को उन सबने सपथ से पुष्ट किया—यह खबर हजरत को पहुंची और उन्होंने उनसे कहा कि मैं उसको पसन्द नहीं करता जो कुछ कि तुमने सोचा है मेरी समझ में तुम्हारी इच्छायें तुमपर वाजिब (उचित) हैं—बस तुम रोज खोलो और बन्द करो—रातको मकानों में रहो और सोओ—देखो मैं पैगम्बर हूं—रातको सोता हूं रोजह रखता हूं, और बन्द करता हूं, गोश्त और चर्बी खाता हूं और स्त्रियों में जाता हूं और उसी समय एक आयत भी नाजिल हुई। तफसीर हुसैनी सूरत मायदह पृ० १५५ व ५६।

१५ हदीसों में से १४ झूठी हैं और एक सच्ची।

मुहद्दिस बुखारीने देश देशान्तर में फिर कर ६ लाख हदीसें इकट्ठीकीं फिरउनकी परीक्षाकीगईतो अन्तमें ५९६०००० हदीसें निर्मूल ठहराकर रद्द करदीं–केवल ४००० अङ्गीकार कीं। अबूदाऊद ने पांच लाख हदीसों का संग्रह किया–उनमें से किन्हीं के मतानुसार ४८०० और कई के ४००० रक्खीगई और शेष निकालदीगईं—इससे स्पष्ट अवगत होता है कि बुखारी आदि ने कुल हदीसोंकी परीक्षा करके उनके १५ विवाह किये जिनमें १४ सिद्ध और एक निसिद्ध ठहराया।

ब्रह्माजी की बावत किसी ग्रन्थ में नहीं लिखा कि उनके कथनका १५वाँ भाग झूठहै—यदि कहीं लिखा है तो दिखलाओ नहीं तो झूंठ बोलने से हाथ उठाओ—बस इन सब बातों में आपकुरान और मुहम्मदसाहब की किस २ त्रुटिको संभालेंगे जिसने अपने हाथको खुदाका हाथ बतलाया और अपने आप को पुजवाया जिसके मतके योग्य पुरुषोंने उसे खुदा बताया अर्थात् अहमद को अहद ठहराया; मौलवी रूमी जैसे फाजिलों ने जिसे अवतार बतलाया, जिसने ईश्वर के समस्त पहले आ-

देशों (इलहामों) को जीर्णवस्त्र की नांई फाड़ कर फेंक दिया और झुठलाया, जिसने अपने आपको आखिरी पैगम्बर बतलाया, जिसने प्राचीन नबियों के मत से मुंह मोड़कर नयामत चलाया, जिसने बिलकुल झूठे दावे कुरान में लिखे हैं, जिसने लटमार और तलवार को अपने मतोन्नति का साधन बनाया, जिसने अपने बेटेकी वहूसे बिना विवाह मैथुन किया और इलजाम खुदापर लगाया औरएक झूंठा किस्सागढ़ा कि खुद खुदाने आस्मानपर मेरा निकाह जैनवसे पढ़ा-जबरईल गवाह बनाया जिसने तप और वैराग्य से लोगों को हटाकर ७० हूर और ७२ गिलमाओं के जालमें फंसाया और जान बूझकर बहिश्त (स्वर्ग) को काम क्रीड़ा का उद्यान बनाया-और जिसके कथन में १८ हिस्सा झूंठ और एक हिस्सा सच देखने में आया-भला क्या ऐसा मनुष्य ईश्वरका दूत या उसकी आज्ञाओंका प्रवर्तक हो सकता है—और क्या ऐसी व्यक्ति पर ईमान लाने से किसी प्रकार की साँसारिक वा पारमार्थिक भलाई हो सकती है? कदापि नहीं-बस हमको तुम्हारी तरह कहना पड़ा कि शरीर तो छिद्रों से परिपूर्ण है रूई कहां कहाँ रक्खोगे।

विष्णुपरकियेआक्षेपोंकाउत्तर

(ह० हि० पृ० ११-१२-१३-१४-३१-३२-१३५) "उनमें एक देवता इनके विष्णुजी हैं जिन्होंने धोका देकर वृन्दा जलन्धर की स्त्री) से व्यभिचारकिया और उसके शापसे पत्थरबनगये"

(उत्तर) इसलाम के पैगम्बरों और अग्रगन्ताओं में से एक भी ऐसा नहीं जिसके आचरणों से संसार को पवित्र और भलाई की शिक्षा मिलसके-साधारण पुरुषों की दशा को हम क्या कहें जबकि बड़े २ पैगम्बरों के चाल चलन का यह हाल हो। तब हमको इसलाम की दशा देखकर यह कहना पड़ता है:-जो आपहीगुम है वह दूसरोंको क्या मार्ग बतावेगा।

इसलाम के नामी और इलहामी पैगम्बरों में से एक हज़रत दाऊद हैं जिन्होंने ओरियाह की जोरू बितशा को बहकाकर उससे व्यभिचार किया—और उसके पतिको फरेब से

धोका देकर मरवा डाला-यदि किसी आग्रही मौलवी को इन्कार हो तो हम सबूतदेने के लिये तय्यार हैं-देखिये तुम्हारी पवित्र पुस्तक समवाईल में ईश्वर कहता है।

"एक दिन शामको ऐसाहुआकि दाऊद अपने बिछौने पर से उठा और बादशाही महल की छतपर टहलनेलगा और वहांसेउसनेएकस्त्रीको देखा जो नहारहीथी और वहस्त्रीअत्यन्त रूपवती थी-तब दाऊदने उस स्त्री का हाल मालूम करने के लिये आदमी भेजे-उन्होंने कहा वह इलआम की बेटी और ओरियाह की जोरू है दाऊदने दूत भेजकर उस स्त्री को बुलाया और उससे मैथुन किया-क्योंकि वह रजस्वला होकर शुद्ध हुईथी वह स्त्री अपने घरको चली गई और गर्भिणी हुई तब उसने दाऊद के पास खबर भेजी कि मैं गर्भवती हूं देखो समवाईल बाब ११ आयत ६ से २५ तक।

ओरियाह के मरवा देने के बाद दाऊदने उसको अपनी जोरू बनालिया और दाऊदके वीर्य्यसे उस स्त्री के पुत्र उत्पन्न हुआ समवाईल बाब ११ आयत २६ व २७ पृ० ३८१ कालम ३ सन् १८८३ ई०।

फिर उसीस्त्री से दाऊद ने पुनःप्रसंग किया और गर्भ ठहरा-जिससे हज़रत सुलैमान पैग़म्बर उत्पन्न हुए-समवाईल बाब १२ आयत २४ व २५ पृ० २८२ कालम २ सन् १८८३ ई०।

हज़रत दाऊद ने उस स्त्री को जबकि वह नहा रही थी—बिलकुल नग्न देखाथा समवाईल २ बाब ११ आयत २॥

हजरत दाऊद वह नबी इसलाम के हैं जिनपर ख़ुदाने ज़बूर नाज़िल की!

इसके साथ ही देखो क़ुरान सूरत स्वाद जिसके हाशियेपर पृ० ४२२ में शाहवली उल्ला लिखते हैं "कि दाऊद नौ औरतें रखता था-तिसपर और एक औरत जो दूसरे की विवाहिता थी उसने चाही-खुदाताला ने फिरिश्तों को उसे तम्बीह करने के लिये भेजा—और इस किस्से का मूल आयत में भी है,,

और तफसीर हुसैनी में लिखा है" कि किन्हीं २ भाष्यकारों ने इस किस्सेपर यह हेतु दिया है कि शास्त्र और बुद्धि इसको स्वीकार नहीं करती। देखो तफसीर जलाली हैदरी प्रेस बम्बई सन् १२८१ हि०पृ० ११५ और कुरान मुजतबाई प्रेस देहली सन् १२९९ हि०पृ०६०६ और तारीख अम्बिया पृ०१५१ से १५३ तक सन् १२७६ ई०इनके अतिरिक्त सीरतुल रसल, बहरे मवाज, लुब लुबाब और इखलाकुल साल हैन में भी दाऊद का व्यभिचार करना स्पष्ट लिखा है-विष्णुके व्यभिचारकी गाथा किसी प्रामाणिक ग्रन्थमें नहीं है परन्तु दाऊद का किस्सा इसलाम की प्रामाणिक ही नहीं किन्तु ईश्वरीय पुस्तक में भी लिखा हुआ है।

(हु० हि० पृ० ३५ व ५८) स्कन्दपुराण के अध्याय ४६ में लिखा है कि विष्णु जी ने काशी के राजा देवदास के समय में यह शिक्षा की कि इस संसार का बनाने वाला कोई नहीं। सुरूपा स्त्रियों के साथ रमण करना यही मुक्ति और सुख है और स्त्री, बहन बेटीमें भेद समझना मूर्खता है-सब स्त्रियों को समान जानकर जिससे जी चाहे आनन्द करे।

(उत्तर) यह राजा दिवोदास बहुत अर्वाचीन समयका है जबकि हिन्दुओं में वाममार्ग प्रचलित हुआथा (जो कि व्यभिचार, मद्यपान और मांस भक्षण आदिका मूलहै) किसी विष्णु नामक वामीने यहकाम कियाहोगा—जैसाकि अब भी वाममार्गी ऐसा करतेहैं—परन्तु यह वैदिक धर्म के महा विरोधी हैं और महात्मा पण्डित लोग इसकर्मको अतीव गर्हित समझते हैं-देखो शब्दधामकी व्युत्पत्ति शब्द स्तोम महानिधि में।

तारीख खुलफामें जलालुद्दीन् सियूती लिखते हैं कि जब खिलाफत हारूरशीद को पहुंची अर्थात् वह खलीफा हुआ। तब उसने अपने बाप महदी की एक नियुक्ता स्त्री को अपने लिए पसन्द किया—उसने कहा कि तुझे लाजिम नहीं है क्या कि मेरेसाथ तेरे बापने सोहबत की है। हारूं रशीद इसपर आसक्त होगया था। इसलिये उसने अबू युसुफ इमाम जमांके पास अपना आदमी भेजा और सवाल कियाकि इसकी विधि

(जवाज़) में भी तेरे पास कोई सयूत है इमामने व्यवस्था (फ़ितवा) दी की जिस वस्तु को वह मांगती है उसके लिये दे और स्त्री की बात विश्वास के योग्य नहीं. उस को अपने काम में लाना चाहिए इत्यादि इसपर अब्र मुबारिकने कहा कि मुझे मालूम नहीं इससे अधिक और कोई विचित्र पुरुष कि जिसने रक्खा है अपना हाथ मुसलमानों के खून और माल में अर्थात् अधिकार पाना चाहता है अपने नापकी प्रतिष्ठा (हुरमत) में और उस काज़ी के वचन पर विश्वास करता है जिसने फितवा दिया कि अपने वापकी हुरमत को फाड़डाल और अपनी शहवत (कामचेष्टा) को पूराकर अर्थात् उसको अपने काम में ला। तारीख खुलफ़ा पृ० १६७ सन् १३०६ हि० मुजतबाई प्रेस देहली।

कृष्णपर आक्षेप और उनका उत्तर।

(हु० हि० पृ०५२ व ५३ व १४१ से १४४ तक) कृष्णजी का शिर्क (स्वयंब्रह्म) बनना और उस की आज्ञा देना, ब्राह्मणों की, शिवलिंगकी, वन और पर्वत की और आग की पूजा करना और दूसरोंसे करवाना, और देवताओं के वास्ते लड़ने का हुक्म देना।

उत्तर—कृष्ण जी ने न तो कभी शिर्क किया और न उस की आज्ञादी–वह स्वयं ईश्वर की उपासना करते और सदा लोगों को उसकी शिक्षा देते रहे—महाभारत शान्ति पर्व अ० ५३ में लिखा है "सन्ध्या न पथ माविश्य सर्व ज्ञानानि माधवः अवलोक्य ततः पश्चाद्दध्यौ ब्रह्म सनातनः २ अर्थात् कृष्णजीने योगदशामें ज्ञानके द्वारा निश्चय करके उस सनातन १ ब्रह्मका ध्यानकिया-हां यदि आप ब्राह्मणों की पूजा का नाम शिर्क रखते हैं तो दूसरी बात है-कृष्ण जी जो एक धर्मात्मा और सज्जन पुरुषथे-ब्राह्मणोंकी सदासे सहायता करतेरहे-हमारी सम्मति में ब्राह्मणों की पूजा करना ही उनके ईश्वर भक्त होने की दलील है। क्योंकि वेद में मनुष्य के लिये ५ नित्य कर्म

लिखे हैं (१) ब्रह्मयज्ञ अर्थात् ईश्वर की उपासना (२) देवयज्ञ अर्थात् देवताओं की पूजा (३) पितृयज्ञ अर्थात् माता, पिता, आचार्य्य ब्राह्मण आदिकी सेवा (४) भूतयज्ञ दीन और असमर्थों के लियेदान (५) अतिथियज्ञ अर्थात् अभ्यागत का सत्कार। ब्राह्मणों को पूजा यदि शिर्क है तो भी आपकी सेवा और शुश्रूषा भी शिर्क है। और यह नूहसे लेकर सब पैगम्बर करतेरहे। बस तुम्हारे मतानुसार वह भी सब मुशरिक हुए।

महादेव के लिङ्ग की कृष्णने पूजा नहीं की—और न कृष्ण के समय में यह कुरीति प्रचलित थी—इसका प्रचार तो बहुत पीछे से हुआ है—कृष्णजी जो एक परमात्मा के भक्त थे—सविस्तर देखो गीताका ८ वां अध्याय। और यदि हवन से आपका तात्पर्य्य आगकी पूजासे है तो यह आप की बुद्धि का दोष है हम लोग आग को ईश्वर समझकर नहीं पूजते किन्तु उससे ठीक २ काम लेते हैं और यदि किसी वस्तु का यथार्थ उपयोग ही आपकी दृष्टिमें पूजा है—तो इससे हमें भी इन्कार नहीं। यह सारे आक्षेप जो तुमने कृष्णजी पर किये हैं तुम्हारे कुरान और इसलाम पर चरितार्थ होते हैं।

मुहम्मद साहबने शिर्क किया, अर्थात् परमेश्वरत्व की कुचेष्टा की संग असवद (असवद पाषाण) को चूमा, और उसको खुदाका हाथ कहा—और उसके फलसे उनके पाप (गुनाह) दूर हुए, कावे की परस्तिश (पूजा) की, असवद नामक पाषाणको परमेश्वरका हाथकहा, मूर्त्तिओं की स्तुतिकी १८ महीने तक यहूदियों की खातिर बैतुल मुकद्दिस की तरफ सिजदह करतेरहे, जबकि कावे में ३६० बुत मौजूद थे तब भी उसी बुतखाने की तरफ सिजदह करते रहे सारी दुनियाँ को मकान परस्त (स्थान पूजक) बनादिया, खुदा को परिच्छिन्न (एक देशीय) कावे में रहनेवाला ठहराया, शैतान को सर्व व्यापक बतलाया, खुदा के मुकाबिले में गुमराह करनेवाला और उसका प्रति पक्षी (मुखालिफ) बनाया। लोगोंको मूर्खता के गढ़े में गिराया। इससे सिद्ध है कि स्वयं मुहम्मदसाहब ने शिर्क किया और उसकी आज्ञा दी।

(हु० हि० पृ० ५३) कृष्णजी जरासन्ध के भयसे मथुरासे भागकर द्वारिका में गये थे महाभारत सभा पर्व ।

उत्तर—जैसे मुहम्मद साहब कुरैशों के भयसे मक्के को छोड़कर सौर नामकी गुफामें जाछिपे और उनके पीछा करने पर वहां से भी भागकर मदीने चलेगये—और ऐसे २ बहाने किये जो किसी बहादुर से तो क्या सामान्य पुरुषसे भी नहीं होसकते-खुदाने भी अपनी कुनफीकू के। बलको भुलाकर बहाने बाज़ी दिखलाई—उसी दिन से हिजरीसाल प्रचलित हुआ जो हज़रत के भागने की तारीख़ है।

हमले हैदरीमें लिखाहै कि अबूबक और आंहज़रत (अर्थात् मुहम्मद साहब) दुश्मनोंके ख़ौफ़से रातको भागे-प्रातः काल एक ग़ार (गुफा) में जिसका नाम सौर था जाछिपे-अबूबक्र ने उसके सूराख़ तक बन्द करदिये ताकि कोई देख न ले इस तरह तीन दिन और तीन रात तक दोनों यार उस ग़ारमें छिपे रहे।

और नासिखुल तवारीख़ में खुद हज़रत अली ने इस बात को स्वीकार किया है क्योंकि यह धोखा मुहम्मद साहब की इच्छा और प्रेरणा से दिया गया था इतिहासज्ञगबनसाहब लिखते हैं "यद्यपि शत्रु दरवाज़ेपर टहलरहे थे-परन्तु वह धोके में आकर अलीको मुहम्मद समझे हुए थे-जो रसूल के बिस्तरपर उन्हींकी हरीचादरओढ़े सोरहाथा" (तारीख़ ज़वाल रोम व एजाज़ पृ० ८८) ।

एक और जगह गबनसहाब ने लिखा है "कुरैश लोगों ने मुहम्मदसाहब की तलाश में मक्के की सारी भूमि छानडाली और उस गुफापर भी पहुंचे जिसमें हज़रत और उनके साथी छिप हुए थे—परन्तु यह प्रसिद्ध किया जाता है कि मकड़ी के जाले और कबूतर के घोंसले ने (जोख़ुदाने काफिरोंको धोखा देने के लिये पैदाकर दिया था) उनको यकीन दिलाया कि यहाँ कोई नहीं है और न कोई यहां आया है। देखो तारीख़ ज़वाल रोम व एजाज पृ० ८२ ।

मुहम्मदसाहब कुछ थोडे. से मनुष्यों के भय से भागे और

कृष्णजी एक बड़ी भारी सेना के मुकाबले में।

(सु० हि० पृ० १४२) एकबार कृष्णजी ने रुक्मिणी से कहाकि जो कोई तुम्हारे योग्य हो उसके घर जाबैठो मैं तुमसे स्नेहनहीं रखता--यह सुनकर रुक्मिणीक्रोध और शोकमें दुखितहुई तब आपने उसको गलेसे लगाया और कहा कि जब कोई सुरूपा स्त्री क्रोधसे नाक भौयें चढ़ाती है तो बहुत प्यारी मालूम होती है--इसलिये हमने जान बूझकर तुमसे यह बात कही थी ताकि तुम क्रोध करके भौंवें चढ़ाओ और कटाक्ष दिखाओ।

(उत्तर) स्त्री पुरुष में परस्पर प्रेम और अनुराग होना चाहिये और यही कृष्ण और रुक्मिणी में था--अतिशय अनुराग होने पर प्रायः ऐसी बातें हुआ करती हैं--परन्तु यह कोई बद्चलनी (बुराई) में दाख़िल नहीं-और न इससे कोई कृष्ण जी पर या रुक्मिणीपर कलङ्क लगसकता है--फिरनहीं मालूम कि यह आक्षेप क्योंकिया गया-पहले ज़राअपने घरमें हज़रत का चालचलन तो देख लिया होता।

तारीख़ अम्बिया में है एक दिन आं हज़रत (मुहम्मद) आयशा के घर पधारे-आयशाने कहाकि मेरा सर दुखता है-इ-बारह तुम्हारी लाश को दफन करूं और जनाज़े की नमाज़पढ़ूं आयशाने कहातो आप यही चाहते हैं कि मैं मरजाऊं और आप और बीबी को लेकर उसीदिन मेरीजगह सोवेंगे-हज़रत हंसनेलगे (तारीख़ अम्बिया पृ० ३६२ सन् १२८१ हि०)ऐसाही मदारिजुलनबूवत जिल्द २ पृ० ५५२ सहीह बुखारी पृ० ६५० तारीख अबीफ़िदा अरबी पृ० १५६ जिल्द १ और रौज़तुल सफ़ा जिल्द २ पृ ४१७ में लिखा है।

प्रियपाठक! अब दोनों के अन्तर ध्यान दीजिये। उधर रुक्मिणी कृष्णको चाहतीथीं उधर मुहम्मदसाहब आयशा पर मरतेथे इधर रुक्मिणी और कृष्णका प्रेम संसार पर प्रगट है और मुहम्मद और आयशाकी दशाभी किसी ईमानदार मुसलमान से छिपी नहीं रुक्मिणी कृष्ण के जीतेजी और मरने के पश्चात् भी पतिव्रता धर्मका पालन करती रही-परन्तु आयशा हज़रत

के जीतेजी ही बदनाम होगई-कुरान में जहाँ यह क़िस्सा लिखागया है उसकानाम सूरत अनवर है-और उसी की व्याख्या तफ़सीर हुसैनी जिल्द २ पृ०७५ तफ़सीर जलाली जिल्द २ पृ० ४५ तफ़सीर सवातउल इलहाम पृ० ४३० व ४३१ और सहीअ बुखारी पृ० ५४६ व ५३१ सन् १२२७ हि० में कीगई है।

मौलवी हुसैन बाज़ अस्पष्ट शब्दों में डरता हुआ स्वीकार करता है-उसी दिन से आयशा पर मुहम्मद साहब के यारों की नियत बिगड़ी जैसाकि लिखा है " एक ने यारोंमें से कहा कि यदि हज़रत मेरे सामने परलोक सिधारें तो मैं आयशाको ब्याहूंगा-दूसरे के मनमें यह बात आगई थी परन्तु मुंह में न लाया „ जब मुहम्मद साहबने देखाकि सहाबे (मित्रवर्ग)की नियत आयशा की तर्फ अच्छी नहीं है तो झटएक आयत उतारली जो सूरत अखराबमें है उसका भाष्य तफ़सीर हुसैनी में इस प्रकार किया गया है " जो शख्स निकाह करें पैगम्बर की औरत से यह खुदा के नज़दीक बड़ाभारी गुनाह (पाप) है। (तफ़सीर हुसैनी जिल्द २ पृ० २०५)।

आयशा और मुहम्मद साहब के विषय में गुलिस्ताँ के सातवें बाबकी वह हिकायत बिलकुल चरितार्थ होती है जिस के अन्त में लिखा है " कि युवती स्त्री के पहलू (अंक) में पीर (वृद्ध) की अपेक्षा तीरका बैठना अच्छा ,, परन्तु कृष्ण और रुक्मिणी के लिये एकजान दो क़ालिब कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी।

अब हम यह बतलाते हैं कि कृष्ण जी का माहात्म्य और दौत्य (पैगम्बर होना) दीन इस्लाम की पुस्तकों सेभी सिद्ध है जिस को आपने भी माना है आप लिखते हैं " बल्कि बाज़े मुसलमानों का भी यह गुमान है कि कृष्णजी ईश्वर भक्त (मुवहद) बल्कि पैगम्बर थे और हज्ज करके द्वारिका होकर हिन्द में आये-और उनकी बाबत जो हिन्दुओं की पुस्तकों में अपकर्म (बुरेफेल) लिखे हैं वह बिलकुल झूठ हैं ह० हि० पृ० १४१ पं० ५।६।७।

(२) तुम्हारे यहां एक हदीस है जिसका तर्जुमा यह है

"तहकीक हुआ है कि एक नबी हिन्दोस्तान में-श्याम है रंग उसका और नाम उसका कान्ह है। (देखो फितुहात मक्की और मदीनतुल तहक़ीक)

(३) शीया लोगों का वह सहस्र नाम जो अलीकी तारीफ़ में पढ़ा करते हैं उसमें लिखा है "हिन्दू लोग कृष्ण कहते हैं और मुसलमान अली। हैदर कहता है कि यह दोनों जहान के खालिक हैं। अब हम इस बातका निषेध करतेहैं जोकि आपने लिखा है कि वह हज्ज करके द्वारिकाके मार्गसे हिन्दमें आए।

विदित होकि राजा युधिष्ठिरका सम्वत् इस समय ४९९१ है और कृष्ण जी उसके समय में हुए। (देखो तारीख दुनिया हिस्सा १)

इब्राहीम जिसने काबा बनाया उसको पैदा हुए ३८११ वर्ष हुए—उससे पहले काबे का नाम व निशान भी न था-कृष्णजी मुहम्मदसे ३६३६ वर्ष पहले और इब्राहीम काबेके निर्माता से ११७९ वर्ष पहले हुए-उनके समय में न तो इब्राहीमथे और न मुहम्मद साहब इसलिये उनका हज्ज करना सरासर गप्प है और द्वारका के मार्ग से हिन्द में आना दूसरी यह गप्प है। कृष्ण जी वास्तव में तुम्हारे मतानुसार नबी और हिन्दुओं के मतसे ऋषि थे उन्होंने कहा है कि सिवाय वेद मार्ग के और सब कल्पित हैं-मनुष्य को चाहिये कि सर्वदा वैदिक धर्मपर आरूढ़ रहे और किसी के जाल में न फंसे।

लगभग आठसौ वर्ष के व्यतीत हुए कि एक वैष्णव ने (जिसका नाम बोपदेव था और जो रहने वाला मकसूदाबाद (बंगाल) का था) एक पुस्तक भागवत नामक बनाई-जिस में कृष्ण जी पर बहुत से झूंठे कलंक लगाये-और रासलीला आदि निन्दनीय नाटकों का प्रचार होगया—जो धर्म शास्त्र के अत्यन्त विरुद्ध है।

(तु० हि० पृ० १४२ व १४३) भागवत स्कन्द १० तर्जुमे गणपत राय में लिखा है-"कि कृष्ण एकदिन गोपियों के कपड़े उठाकर कदम्ब पर चढ़गया—और उनको नंगा देखा—फिर उसी स्कन्द में लिखा है कि गोपियों के साथ एकरात कृष्ण ने

रासलीला की—कृष्णजी गोपियोंको लासकर राधिकाको गले से लगाकर काम क्रीड़ा कररहे थे और उन्होंने तमाम गोपियों को ऋतुदान देकर उनकी इच्छा पूरी की।

(उत्तर) यह सारे आक्षेप झूंठ हैं-इनके किसी अंशमें भी सत्यका लेश नहीं-क्योंकि भारत और गीतामें इनका कहीं चिन्हभी नहीं-स्वयं भागवत में भी जहांतक हमने ढूंढा राधिका का नामतक नहीं यद्यपि भागवतादि पुराण स्वयं अप्रामाणिक हैं परन्तु भाष्यकारों ने और भी अन्धेर कर दिया—(एक तो करेला स्वयं कडुवा दूसरे नीम चढ़ा) एक दो भाष्यों के सिवाय और कोई अनुवाद भागवत का ठीक नहीं-और भागवत में यह भी लिखा है कि जब तक कृष्ण वृन्दावन और गोकुलमें रहे उनकी अवस्था ७ या ८ वर्षकी थी—बस ऐसे अबोध बालककी चेष्टायें बुद्धिमानों में आक्षेप के योग्य नहीं हो सकतीं अतएव कृष्णपर कोई कलङ्क नहीं लगसकता-पर जरा अपने हज़रत जबराईल की दशापर तो दृष्टिपात कीजिये कि उन्होंने किस तरह मरियम को नंगा देखा और क्या कर्म किया ?

जरा आँखें खोल कर कुरान की सूरत मरियम और सूरत तहरीम को अवलोकन कीजिये। सूरत तहरीम का तर्जुमा शाहवली उल्ला साहब इस तरह पर करतेहैं:—"उमरांकी बेटी मरियम ऋतु स्नान करती हुई अपनी भग को देखरही थी—पस फूंकी मैंने रूह अपनी रूह बीच भग उसकी के"

मरियम के नंगी होकर न्हाने का वृत्तान्त मौलवी रूमी ने भी अपनी मसनवी के तीसरे दफ्तर में लिखा है (देखो मसनवी रूमी पृ० २७३) और हज़रत ज़करिया क्यों मारे गये—उनके मारेजाने का कारण भी रौजतुल सफ़ा जिल्द१ पृ० १२४ में साफ लिखा हुआ है और तारीख़ अम्बिया पृ० १८२ भी द्रष्टव्य है। (२) दाऊद ने ओरिया की जोरू को नंगा देखा और व्यभिचार भी किया और उसके पति को मरवाभी डाला (समवादिल बाब ११ आयत २ से २७ तक (३) हज़रत सुलैमान ने क्या २ रासलीलाकी ज़रासला तीन बाब८ आयत २३ व ३५ को तो देखो।।मदारिज़ जिल्द २ पृ० ५४२ में लिखा

है " कि सुलेमान की तीन सौ विवाहिता और एक हज़ार दासी (लौंड़ी) थीं—एक रात में सौ स्त्रियों की परिक्रमा करता था ।

(४) हज़रत दाऊद के सुपुत्र हज़रत अमनून ने अपनी बहन तिमिर के साथ मुंहकाला किया—(देखो समवाईल २ बाब १३ आयत १ से १८ तक पृ० ३८३ सन् १८८३ ई० लुधियाना प्रेस) यदि आप स्वयं न पढ़ सकते हों तो तौरेत के इन ख्यालों को किसीसे पढ़वाकर अपनी तुष्टि कीजिये ।

महादेव पर आक्षेप और उनका उत्तर

(हु० हि० पृ० १८) ईश्वरहोना महादेवका चारों वेदों से ।

(उत्तर) निस्सन्देह महादेवके अर्थ परमेश्वर के हैं क्योंकि उससे बड़ा कोई नहीं—फ़रांसीसी डाक्टर ब्रेज़ साहब ने लिखा है " ईश्वर के यौगिक नाम ब्रह्मा अर्थात् सब से बड़ा, विष्णु अर्थात् सर्व व्यापक, महादेव अर्थात् अत्यन्त प्रकाशमान है—वैदिक परिभाषामें यह कोई व्यक्ति विशेष नहीं थे (देखो) उनका सफरनामा जिल्द २ पृ० १५)

(हु० हि० पृ० २६) गिरिजा और महादेव के विवाह के समय स्त्रियोंका मारपीटकरना और ठठ्ठे उड़ाना (शिवपुराण)

(उत्तर) वेद में महादेव परमात्मा का नाम है और पुराणों में महादेव एक राजा का नाम है—जो हिमालय पर्वत के शिवालक प्रान्त का राजा था—और वह पार्वती का पति दक्ष का जामाता, गणेश और कार्तिकेय का बाप था और पहाड़ी राजाओं के सदृश बैलों के रथ पर या बैलों पर सवार होता था—इसका अधिकार शिवालक पर्वत से कैलाश तक था—यह मनुष्य और विद्वान् था इसी का वृत्तान्त नाटक की रीतिपर शिवपुराण में लिखा है—यदि आप को सन्देह हो कि महादेव ईश्वर और मनुष्य दोनों का नाम कैसे है ? तो हम पूछते हैं कि सरमद एक फ़क़ीर का नाम था और खुदा का नाम क्यों है (देखो मुन्तख़ब व सुराह व ग़यास)

अहद खुदा का नाम और एक प्रसिद्ध सूफ़ी (योग)

का नाम है (दबस्तान मज़ाहब)

मुहम्मद खुदा का नाम भी है और नबी का भी।

महमूद खुदा का नाम भी, बादशाह का भी और पैगम्बर का भी।

याकूब नबी ने अपने मामूं की बेटी राखील पर आसक्त होकर सात वर्षतक भेड़ें चराई—परन्तु शोक कि इतनी मिहनत से भी वह न मिली—किन्तु उस के ससुरने धोका देकर दूसरी लड़की व्याह दी—जिसपर उसको ७ वर्ष और भेड़ें चरानी पड़ीं—तब राखील हाथ लगी देखो तौरेत पैदायश बाब २६ आयत ६ से ३० तक।

इसी तरह मूसा नबी एक स्त्री के लिये १० वर्ष तक भेड़ें चराता रहा—(देखो बुरहान गयास व तौरेत खरूज बाब २,३

यह बातें जो राजा महादेव के साथ विवाह के समय स्त्रियों ने की थीं—हंसी ठट्ठेमें दाखिल हैं—करामात और प्राकृतिक नियमों के उल्लंघन से इनका कोई सम्बन्ध नहीं—आक्षेप करनेसे पहले आपने उक्त दो नबियोंका हाल तो पढ़लियाहोता और यदि करामात (सिद्धि) देखना चाहो तो स्मरण करो कि हजरत के मित्र कुरैश की औरतों ने मारपीट तो दरकिनार नाककानतक काटलिये थे—उस समय किसीने प्रभाव या करामात नहीं दिखाई—हजरत और हैदर और अली सब मुंह देखते रहगये। अहद की लड़ाई में अतबानाम के एक मनुष्य ने स्वयं हज़रत मुहम्मद के दोदाँत तोड़ डाले थे—तब भी कोई करामात नहीं दिखासके।

(हु० हि०पृ० ५०) मल्लयुद्ध करना महादेवका अर्जुन के साथ और कभी विजयी और कभी पराजित होना।

(उत्तर) महादेव पहाड़ी राजा और अर्जुन मैदानी राजा था—यदि इन्हों ने युद्ध किया तो इस में बुराई क्या है—पर तुम्हारे याकूब नबीने तो खुदासे कुश्ती की और खुदासे कुछ न होसका—तब हारकर खुदाने वह काम किया जो सिवाय नपुंसकके और कोई नहीं कर सकता—अर्थात् याकूब की जंघा (रान) की नसको छुआ—और उसकी रानकी नस चढ़

के छूने से चढ़गई (तौरेत पैदायश बाब ३२ आयत २४-३२)

(हु० हि० पृ० ४० महादेवने शराब पी और नंगा नाचा ।

(उत्तर) आपने कोई प्रमाण नहीं दिया-परन्तु हम आप को बतलाते हैं—ज़रा तौरेत खोलकर नूह पैगम्बर का जीवन चरित्र देखो—उसमें लिखा है:—"कि नूह खेती बाड़ी करने लगा और उसने एक अंगूर का बाग़ लगाया-और उस की शराब पीकर नशे में आया—और अपने डेरे के भीतर नंगा हुआ—और कि न आन के बाप हाम ने उसे नंगा देखा (तौरेत तकवीन बाब ६ आयत २० व २१ और उस मद्यपी (शराबी) की प्रार्थना परमेश्वर ने स्वीकार की (तौरेत तकवीन आयत बाब ६ आयत २५ व २७)

(हु० हि० पृ० २४) महादेव ने निरपराध ब्राह्मणों को वध किया ।

(उत्तर) यह बात किसी प्रामाणिक ग्रन्थ में नहीं पर तुम्हारे मूसा नबी ने एक निरपराध मिसरी को मारडाला तौरेत में लिखा है कि एक मिसरी एक इबरानीको जो उसके भाइयों में से था मार रहाथा-मूसाने इधर उधर दृष्टि डाली जब देखा कि कोई नहीं तब उस मिसरी को मारडाला और रेत में छिपादिया-और जब फ़रऊन ने पकड़ना चाहा तो भाग गया (गोयो ताजीरात हिन्द दफ़े ३०२ के अनुसार इश्तहारी मुजरिम था (देखो तौरेत खरूज बाब २ आयत ११से १६ तक इसी का वर्णन तारीख अम्बिया पृ० ६८ में भी किया गया है और यही इतिहास कुरान में भी तौरेत से उद्धृत कियागया है जिसका अनुवाद यह है "कि ऐ मूसा तैंने एक मनुष्यको मारा पस मैंने तुझको शोकसे युक्त किया ? इस किस्से को सत्यता तफ़सीर जलाली में भी मानीगई है और सूरत शुअरा में भी एक आयत है जिसका तर्जुमा यह है "इनका मुझपर दावा है कि मैंनेएक क़ब्ती को मारा है इसलिये डरता हूं मैं कि कहीं क़ब्ती के बदले में मुझे न मार ।

गणेशपर आक्षेप और उनका उत्तर।

(हु० हि० पृ० २९) महादेवने पार्वती की खुशामद की और लाचार होकर गणपति की पूजा और एक वर्ष के मतों की आज्ञा दी-गणपति नाम देवता है हाथी की आकृति वाला और उसका गणेश भी है।

(उत्तर) गणेश या गणपति शब्द का अर्थ है सब का स्वामी-इसलिये यह किसी मनुष्य का नाम नहीं किन्तु परमेश्वर का नाम है-जातकादिज्योतिष के ग्रन्थोंका निर्म्माताभी एक गणेश नाम पण्डित था जो पन्द्रहवीं शताब्दी में हुआ है और एक कश्मीरी लेखक का नाम भी (जिसने व्यास के सामने भारत लिखाथा) गणेश था—और पद्मपुराण में लिखा है कि 'शूद्राणां गण नायकः" मूर्खों का एक देवता भी गणेश नाम का है जिस की उन्होंने विलक्षण आकृति बनारक्खीहै-मालूम नहीं कि आप किस गणेशपर आक्षेप करतेहैं-हमलोग ऐसे बनावटी किस्सों को नहीं मानते और न ऐसी विचित्राकृतिके व्यक्ति की कल्पना करते हैं तो भी आपके मुंह से यह आक्षेप शोभा नहीं देता-क्योंकि कुरान और हदीस में सूरत हाक्का के हवाले से ऐसेही विलक्षणाकृति फिरिश्तों का वर्णन है जिसपर आप का पूरा विश्वास है बस जबतक आप कुरान से हाथ नहीं उठाते तबतक आप इन आक्षेपों से नहीं बचसकते।

(हु० हि० पृ० ६७) इसस्थलपर यदि हिन्दू यह कहें कि हारूतव मारूत दोनों फिरिश्ते एक स्त्री पर आसक्त होगये थे तो उसका उत्तर यह है कि प्रथम तो यह रिवायत (कहानी) किन्हीं २ विद्वानों के निकट माननीय और विश्वास योग्य नहीं दूसरे जब उन्होंने अपराध कियाथा उस समय वह केवल फिरिश्ते न रहेथे किन्तु मनुष्यत्व के गुण उनमें आगयेथे।

(उत्तर) इसका तो वर्णन कुरान में है तफसीरें (टीकायें) इससे भरी पड़ी हैं-वह कोई २ विद्वान् कौन हैं ! जो कुरानको उन्माद रोगके कारण विस्मरण किये बैठे हैं-कुरान की सूरत बकरमें आया है कि हारूत व मारूत दो फरिश्ते बाबुलमें-

जेगये । इसपर तफ़सीर हुसैनी वाला लिखता है कि बाबुल नगर में हारूत व मारूत नाम दो फ़िरिश्ते आस्मान से उतरे भूमिपर आकर ये जोहरानाम की स्त्री पर आसक्त हुए और शराबपीकर हिंसा तथा बुतोंको सिजदा करने में भी उद्यत हुए खुदाताला ने ऊपर से इनको मना (वर्जन) किया और जब न माना तो (अज़ाब) क्लेश में इनको डाला गया–जो कि अबतक बाबुलके कुए में उलटे टंगेहुए हैं (तफ़सीरहुसैनी जिल्द १ पृ० १७) अब बतलाओ वह कौन से विद्वान् हैं जो इसको नहीं मानते । दूसरी बात भी क़ुरान के विरुद्ध है क़ुरान बाबुल के कुंए में भी अलीउल मलकीन (फ़िरिश्तोंके सरदार) कहता है–इससे सिद्ध है कि उन्हों ने यह सारे काम फ़िरिश्ते पन (देवत्व) की अवस्था में किये–इसी प्रकार अज़ाजील व जबरईल फ़िरिश्तों ने भी ऐसे बहुतसे काम किये हैं—यहांतक कि तूफ़ान नूह भी शैतान की प्रेरणा और इच्छा से हुआ। (देखो तारीख़ अम्बिया पृ० १४ व १६)

मुहम्मद साहब की शारीरक दशा और जीवन यात्रा ।

इसलाम के एक प्रसिद्ध इतिहास में लिखा है "किहातिब" नाम एक दूत (एलची) ने जिसको मुहम्मद साहब ने मिसर के बादशाह के पास भेजाथा–हज़रतका यह हुलिया (चिन्ह) वर्णन किया "कि देखते हैं मुहम्मदसाहब आईने (दर्पण) को और बराबर करते हैं और लटकाते हैं केशों को कंघी से और नहीं जुदा होती है आपसे वह चन्द चीजें सफर में न घर में आईना, सुरमैदान, कंघी, मिसवाक (दन्तौन) और देखा मैं ने उसको कि श्रृङ्गार और और सजावट करतेहैं वास्ते मिलने अपने साथियोंके (देखोफितूह मिसरउर्दू पृ० ४२६ सन् १२८२ हि०) ।

दृष्टि (नज़र) लगने से डरते थे—एक हदीस में आया है जिसका तर्जुमा यह है "यदि कोई वस्तु प्रबल होती भाग्यपर तो वह बुरी दृष्टि (नज़र) होती । (जामे तिरमुज़ी पृ० ४६) ।

जादू टोने को मानते थे और उससे डरते थे—हदीस में है कि आसिमके बेटे अलबीद यहूदी ने हज़रतपर जादू किया जिससे ६ महीने तक बीमार रहे—मुशकात में लिखा है " कि जादूका असर हज़रत पर बड़ी भयानक रीतिसे हुआ—इसकी अवधि में कुछमत भेद है कोई कहते हैं कि ४० दिनतक उसका असर रहा कोई कहते हैं ६ महीनेतक और कोई साल भरतक बतलातेहैं मुशकातके मुफस्सिर (भाष्यकार)की यह राय है कि ४० दिनतक उसका वेग (ज़ोर) अधिकरहा ६ महीनेतक सामान्य रीति पर बीमार रहे और साल भर तक कुछ अंश रहा एक रिवायत में इब्न अब्बास लिखते हैं कि हज़रत ने अली और अम्मार को उस जादू के तोड़ने के वास्ते भेजा इन्हों ने चाह ज़रवान में पहुंचकर देखा कि एक वृक्ष की खोखर में हज़रत की लकड़ी की तसवीर टँगी हुई है और उस में सब तरफ से सुइयां छिदीहुई और ११ गिरह बंधीहुई हैं पस लाया जबरईल ग्यारह आयत जिनमें से प्रत्येक आयत के पढ़ेजानेपर एक गिरह खुलजाती थी—और हर एक सुई के बाहर निकालने से हज़रत को आराम और चैन पड़ता था इस जादू का प्रभाव यह था कि पुरुष नपुंसक होजाता था। (देखो मुशकात जिल्द रावअ् बाब फ़िल्मोजिज़ात फ़सल १ पृ० ५७६) इसी प्रकार तफ़सीर हुसैनी जिल्द २ पृ० ४७६ में भी यह क़िस्सा उद्धृत कियागया है।

मुहम्मद साहब जितेन्द्रिय और सदाचारी न थे।

शाह अब्दुल हक़ साहब मुहद्दिस देहलवी लिखते हैः—" कि संसार के पदार्थों में से दो चीजेंहज़रत को बहुत प्यारी थीं—एक स्त्री दूसरी सुगन्धि और यह भी कहते हैं कि रति क्रीड़ा में ३० मनुष्यों से ४० मनुष्यों तक की शक्ति वह रखते थे—इसीलिये उनके वास्ते आज्ञा थी कि वह जितनी स्त्रियों से चाहें विवाह करें "

मुहद्दिस, बुखारी लिखता है—"कि एक रात में हज़रत अपनी सब स्त्रियों के पास हो आते थे और वह संख्या में ११ थीं—" ताऊस " में रिवायत है कि उनमें ३० मनुष्यों की शक्ति थी—और " मजाहिद " में लिखा है कि ४० मनुष्यों की शक्ति रखते थे—उसी में अन्यत्र लिखा है कि ४० स्वर्गीय मनुष्यों की शक्ति रखते थे—और एक रिवायत में यह स्पष्ट कहागया है कि एक स्वर्गीय मनुष्य सौ पृथिवी के मनुष्यों की बराबर शक्ति रखता है खाने, पीने और मैथुन करने में (इस हिसाब से तो ४०००० मनुष्यों के बराबर शक्ति हुई) इसलिये उनको आज्ञा थी कि वह जितनी चाहें उतनी स्त्रियाँ रक्खें यह भी उनके महत्व और बड़प्पनका एक हेतु है (मदारिजुल नबूव्वत बाब २ जिल्द २ पृ० ५६२ नवलकिशोर प्रेस)

अबूहरेरह से यह रिवायत है:—" कि एक दिन हज़रत ने जबरईल से अपनी शिथिलता का वर्णन किया—जबरईल ने कहा कि तुम हरीसा खायाकरो कि उस में ४० पुरुषों की शक्ति रक्खी है (तिब्बे नबवी पृ० ६ नामी प्रेस लखनऊ सन् १३१२ हिं०)

तारीख़ अबुलफ़िदा में लिखा है कि रसूल अल्लाह का निकाह १५ बीबियों से हुआ था १३ बीबियों से प्रसंग किया और दो से नहीं किया (जिल्द १ पृ० ३६८)

और सबसे अधिक अत्याचार यह था कि जिस किसी स्त्री को हज़रत पसन्द करलेवें वह अपने पतिके लिये हराम (अभोग्य) होजाती थी मुशफात में है " चाही हुई हज़रतकी हराम होजाती थी ऊपर खाविन्द अपने के " यह भी हज़रतका एक प्रताप था और किसी को नहीं हासिल हुआ (जिल्द २ पृ० १०८)

जब मुहम्मद साहब कामक्रीड़ा करते २ अत्यन्त शिथिल हो गये और उनकी सारी इन्द्रियां थक गईं तब सूरत अहज़ाब की यह आयत उतारी जिसका तर्जुमा शाह रफ़ीउद्दीन इमामुल मुहद्दिसीन इस प्रकार करते हैं:—" नहीं हलाल है वास्ते तेरे औरतें बाद इसके—और न यह कि बदल डाले तू उनसे

और बीबियां—अगर्चें अच्छा लगे तुझको हुस्न उनका मगर जिन के मालिक होगये दाहने हाथ तेरे ”

इसी आयत का विवरण तफसीर हुसैनी में भी कियागया है “ हलाल नहीं है वास्ते तेरे औरतें इसकेबाद उनको छोड़कर जि[illegible] तेरे पास आईं नहीं है—और यह भी हलालनहीं कि बद[illegible] तू उन[illegible] दूसरी औरतों को यानी एक को तिलाक़ देवै और बजाय उसके दूसरी से निकाह करै—अगर्चें उनका हुस्न तुझै पसन्द आवै तब भी वह तेरे लिये हलाल नहीं हैं मगर जिनके मालिक होगये आधीन तेरे उन्हीं के वास्ते यह नियम है काफिरों के लिये नहीं। (जिल्द २ पृ० २०४ व २०५ सन् १८८४ ई०)

परन्तु जब औषधादि के खाने या किसी अन्य कारण से काम शक्ति उद्दीप्त हुई तो फिर कुरान के हाशिये में यह लिखा गया “ बीबी आयशाने फर्माया कि यह मनअ (निषेध) आखिर को मौकूफ हुआ—सब औरतें हलाल होगईं ,, (देखो कुरान पृ० ५८६ नवल किशोर प्रेस कानपुर सन् १२८६ हि०)

करामात के मानने वाले मुसल्मान और खासकर नौ मुसलिम (ताज़ह मुसलमान) शेख अबीदुल्लाह साहब बाबार मुहम्मद साहब के मुअजिज़ात (किरिश्मों) का जिकर करते हैं—और इसकी पुष्टि में मौलवी जामी के कुछ पद्य लिखते हैं परन्तु हम उनको बतलाते हैं कि यह कवियों की उक्ति है और वास्तव में निर्मूल और कुछ भी नहीं हैं-लीजिये हम एक स्पष्ट और पुष्ट युक्ति इसकी प्रत्युक्ति में सुनाते हैं-इनका शरीर था, कपड़े पहनते थे, विवाह और स्त्री प्रसंग करते थे सन्तान भी हुई थी, ऊंट और गधे पर सवार भी हुआ करतेथे बीबी आयशा को कन्धे पर चढ़ाकर हबशियों का नाच भी दिखलाया था, अहद की लड़ाई जो शवाल सन् ३ हि० में हुई उस में-एक काफिर का पत्थर लगने से हज़रत के नीचे के चार दान्त टूटगये और मस्तक में भी आघात पहुंचा और आप घोड़ेसे गिरगये-और उनकी मेख (शलाका) उनके गालमें फँसगई जब वह बड़ी कठिनतासे निकाली गई तो बहुत रुधिर

कहा तब फातिमा ने बोरिया जलाकर डाला-और इस लड़ाई में यह प्रसिद्ध होगया कि हज़रत शहीद होगये (मारेगये) यह सुनकर सिवाय थोड़ेसे मनुष्यों के और सब भाग निकले और पराजित हुए-स्वयं जामीने भी लिखा है "दुश्मन के पत्थर से गाल उसका टूटा ,, इत्यादि ।

कुरैश की बहादुर औरतों ने मुसलमान शहीदों के (जिन में अमीर हमज़ा प्रभृति सबथे) नाक कान काट लिये और कलेजे चीरकर चबाए-मुहम्मद् शिबली साहबने वहाँ जो शब्द प्रयोग किये हैं उनका अनुवाद हम देते है " स्त्रियों ने मुसल मान सहीदों के नाक और कान काटे एक स्त्री ने अमीर ह-मज़ा (जो शहीदों में से था) का पहलू चीरकर जिगर उसका निकाला और चबाया—इतनेमें सफ़िया बहन अमीर हमज़ाकी अपने भाई को देखने के लिये आई पैग़म्बर ने उसके बेटे से कहा कि उसको रोके ताकि वह अपने भाई की मुरदा लाश को न देखे, पैग़म्बर के हुक्मसे बेटेने उस को खबरदार किया (देखो बद्दूप इसलाम पृ० १७ व सफ़रुल सआदत व तुहफे इसलाम पृ० १२५ व तफ़सीर हुसैनी जिल्द १ पृ० ८२)

हदीस में लिखा है कि लड़ाई होती है साथ फरेब के (फतूह मिसर पृ० ४२५)

इसी के अनुसार "मुवाहिल लुदन्निया,, में है "कि हज़रत ने अबू सफ़ियां के मारने के वास्ते उमरू और सलमा को गुप्त रीतिपर भेजा-परन्तु भेद खुलगया—लोग उनपर दौड़े पर वह किसी तरह बचकर निकल आये। (सविस्तर देखो रिसाले जहाद)

मुहम्मद साहब (को निज़ूल वही) खुदा के पाससे आयत उतरने की बाबत डाक्टर स्प्रिंगर साहब अपने डाक्टर अनु-भवसे लिखते हैं " कि मानसिक रचना शक्ति के क्रमशः बढ़ जाने से और अपस्मार (मिर्गी) रोगके होजाने से मुहम्मद् साहब धोके (वहम) में पड़गए और अपनी कल्पनाओं और रचनाओं को वही या इलहाम (खुदाका कलाम) समझने लगे। (देखो लाइफ़ मुहम्मद पृ० ८६ सन् १८५१)

मुहम्मद साहब की अन्तिमावस्था ।

सूरत मायदा में है ए मुहम्मद? अल्लाह तेरी हिफ़ाज़त करेगा-और दुश्मनों के शर (उत्पात) से तुझे बचावेगा-परन्तु हदीसों और तफ़सीरों से इसके विरुद्ध पायाजाता है-तारीख़ अबुल फ़िदा में लिखा है "कि हज़रत ने आयशा से फर्माया कि वह विष (जहर) मिलाहुआ लुक़मा (ग्रास) जो यहूदिया ने बकरेके मांस में भेजाथा—और मैंने उस में से खैबर न खाया था—उस से मैं सदैव कष्ट पाता हूं—यहां तक कि मेरे जीवन की नाड़ी उस विषके कारण कटगई (तारीख़ अम्बिया पृ० २६२ व ३६३)

सहीह बुख़ारी पृ० ४१४ खैबर के ज़िक्र में लिखा है "कि गोश्त जहर मिला हुआ जो मैंने खाया था-उससे अबतक तकलीफ़ में रहा और उस वक्त उसने मेरी रगेदिल को काट दिया (और देखो मुशकात जिल्द४ पृ०६०१व ६०२ व ६०४ व ६२२ तथा तफ़सीर हुसैनी जिल्द २ पृ० ३३६ और रौज़तुल सफ़ा जिल्द २ पृ० ४१७) नवलकिशोर प्रेस) पैग़म्बर बनने के लिये सब कुछ करने को तयार थे-तफ़सीर हुसैनी में लिखा हैः-"यहूदियों को हज़रत के मदीने में रहने से डाह हुआ। उन्होंने कहा ए क़ासिम के बाप पैग़म्बरों के रहने की जगह मुल्क शाम है। अगर तू पैगम्बर है और चाहता है तू कि हम तेरा पैग़म्बर होना तसदीक़ करें तो तू शाम को चलाजा और वहां रह हज़रत ने शाम के सुफ़र का पक्का इरादा करलिया (तफ़सीर हुसैनी जिल्द १ पृ० ३८६ (और मआलिम में है कि असहाब (यारों) को साथ लेकर मदीने से तीन कोश की यात्रा की (प्रमाद हिन्द पृष्ठ ४६५)

मुहम्मद साहब अन्त समय में बहुत दुःखी होकर मरे हदीस में है "कि जब अन्त समय में हज़रतसे जबरईलने पूंछा कि तुम्हारा क्या हाल है तब हज़रत ने कहा कि मैं अपने आपको बहुत तकलीफ में पाता हूं दूसरे दिन फिर जबरईल आया और हज़रतने पूंछा तो फिर वही जवाब दिया जो पहले

दिन दियाथा (मुशकात जिल्द ४ पृ० ६२८ फसल ३ वाक़ बफातुल नबी)

पाठक जान सकते हैं कि यह बात क्या है ? और पैगम्बर इसलाम अन्त समय में क्यों इतना शोक और दुःख मानरहे हैं-सब जानते हैं कि जो दिनरात स्त्रियों के भोग विलास में तत्पर हों और से जिन्हे कामोद्दीपन के नुसखे (औषधिपत्र) प्राप्त हों। और जिन की अभिलषित स्त्री अपने पति को हराम होजावे वह दुःखित और क्लेशित होकर संसार को न छोड़े तो क्या वह ऋषि मुनियों की तरह भक्ति रस में निमग्न होकर ज्ञान के परमानन्द से पूरित होकर चोला छोड़े यह कभी हो नहीं सकता। जैसे कृत हानि और अकृताभ्यागम नहीं होसकता वैसे ही पुण्य से विमुख होकर पाप से कोई अपनी भलाई नहीं कर सकता।

मुहम्मदसाहब अपनी क़बर पुजवानी चाहते थे-हदीस में है "जो कोई मेरी कबर की ज़ियारत (दर्शन) करै बाद मौत मेरीके गोया उसने मेरी ज़ियारतकी ज़िन्दगी की हालत में" तथा "दोज़ख (नरक) में न जावेगा वह जिसने मुझे देखा" एवं "जो कोई मेरी क़बर की ज़ियारत करै उसके लिये वाजिब हुई शिफ़ाअत" (तारीख़ अम्बिया पृ० २७० व शरह वक़ायः उर्दू जिल्द १ पृ० २०० व अक़ायद इसलाम मुहम्मदसाहबने अपने खान्दान के लिये बादशाही की तजवीज़ की थी मगर न चली पृ० २२० ।

पाँचवाँ अध्याय

मिश्रित आक्षेपों का निवारण।

(मौलवी पृ० १११) तैत्तिरीय उपनिषद् यजुर्वेद में लिखा है कि सूर्य्य रस (रतूबत) प्राप्त करने के लिये चक्कर खाता है और जल जो उसका भोजनहै उस के कारण जीवित है देखिये यह लेख कैसा झूठ एवं वैद्यक, गणित और पदार्थ विद्या के विरुद्ध है।

(आर्य्य) हमने सारे उपनिषद् अवलोकन किये-परन्तु उन में यह कहानी कहीं नहीं देखी—यदि सारा इसलामी जगत मिलकर कोशिश करें तो भी यह बात तैत्तिरीयोपनिषद् से कोई नहीं निकाल सकता-इस झूठी प्रतारणा का हम आपको क्या उत्तर दें ? परमात्मा आपको सीधे और सच्चे रास्ते पर लावे ताकि आप इस अन्ध कूप से निकलकर प्रकाश में आवें।

हां निस्सन्देह ऐसी बातें क़ुरान में हैं सूरत बनी इसराईल को देखिये—जिसपर तफसीर हुसैनी वाला लिखता है "कि आयत दिन की सूर्य्य है और आयत रातकी चान्द और "म-हवे आयत" घटना चान्द्का है पौर्णमासी से अमावास्यातक। उसी में अन्यत्र एक और रिवायत है "कि पहले चन्द्र और सूर्य्य प्रकाश में एक समान थे इसी कारण रात और दिन में कुछ भेद न था-खुदाताला ने जबरईल को भेजा—उसने अपने पर (पक्ष) चान्दपर मले जिनके संघर्षण से उसका प्रकाश कम होगया और सूर्य्य जैसेका तैसारहा (जिल्द २ पृ० १८५)

कुरान सूरत बकर में एक आयत है जिस में इब्राहीम ने यह प्रार्थना की है "कि खुदा हमको रोज़ी देनेवाला है मेवों से, खुदाताला ने इस प्रार्थनाको स्वीकार किया और जबरईल को हुकम दिया कि वह फिलिस्तीन * के एक गांव को (जो फलों और मेवों से भराहुवा था) उस भूमिसे उठाकर मक्के में ले जावे। जबरईल खुदाके हुकम से उस गाँव को मक्के में लाया और सातवार कावेकी परिक्रमा दिलाकर तहाँ की भूमिपर जो मक्के के समीप है स्थापन किया और उस गाँव का नाम नायफ रक्खागया इसलिये कि उससे सातवार मक्के का तवाफ (परिक्रमा) कराईगई थीं और मेवे मक्के के यहीं पर होते हैं" (तफसीर हुसैनी जिल्द १ पृ० २१)

सूरत बकर में एक आयत और है-जिसमें खुदाताला ने पहाड़ को हुकुम दिया "कि वह उनके (बागियों के) सिरपर बैठे—सो पहाड़ खुदाके हुकुम से उनके सिरपर बैठा—और सामने उनके आग जली और पीछे से भयानक नदी चढ़कर

* फिलीस्तीन मुल्क शाम में एक नगर का नाम है।

आई—उन को मांगने का कोई मार्ग न मिला—बड़ा आश्चर्य हुआ (तफसीर हुसैनी जिल्द १ पृ० १२)

सूरत कौसा में एक आयत है जिसमें लिखा है कि सूर्य्य और चन्द्रमा को इकठ्ठा करके नदी में डालदिया। (देखो तफसीर हुसैनी जिल्द २ पृ० ४३७)

कुरान की वैद्यक, गणित और पदार्थ विद्याके हमने सिर्फ चार नमूने दिखलाए हैं, मौलवी क्या इससे बढ़करभी कोई झूठ या प्रलाप होसकता है।

(हु० हि० पृ० १४६) कहते हैं कि स्वर्ग में भी लोग दण्ड पाते हैं। महाभारतके आदि पर्व में लिखा है कि राजा ययातिने स्वर्गमें कहा कि मैं अपने समान किसीको नहीं समझता-इन्द्रनेइस अपराधके बदले स्वर्ग से उस को पृथ्वी में फेंक दिया—फिर कालान्तर में इस पाप से मुक्त होकर स्वर्ग में गया।

(उत्तर) महाभारत में जिस राजाका वर्णन है वह आकाश में नहीं किन्तु पृथ्वी में रहताथा—हम उसका पता बतलाते हैं कि इन्द्र कहां रहते हैं, उस नगरका इन्द्रपुर या सुरपुर या अमरपुर नाम है जो ब्रह्मदेश का एक राजकीय स्थान है—वहां अमरावती नाम नदी बहती है और सफेद हाथी होता है अप्सरा गाने बजाने वाली स्त्रियाँ भी बहुत हैं और फल फूल की भी वहां बहार है—वहाँपर अर्जुन व कृष्ण आदि कई बार गये—हां यही आक्षेप कुरान और उसके बिहिश्तपर चरितार्थ होता है—जिससे आदम बेचारा जरासी भूल होनेपर निकाला जाता है—क्यों मौलवी साहब ! बिहिश्त में सजा पाते और वहां से निकाले जाते हैं या नहीं।

(हु० हि० पृ० १४६) एक पुण्यात्मा राजा स्वर्ग में गया एक दिन गंगा ब्रह्मा के पास गई—वह राजा भी वहां उपस्थित था—वायुने गङ्गा का वस्त्र उठादिया-राजा की दृष्टि उसके जंघा पर पड़ी—आसक्त होगया और स्वर्गसे निकाला गया—स्वर्ग क्या हुआ रण्डियोंका चकला हुआ।

(उत्तर) इससे भी यह सिद्ध होता है कि वास्तव में स्वर्ग से तात्पर्य-मुल्क ब्रह्मा से है और इन्द्र वहांका राजा है

जिस के यहाँ कोई रम्भा नाम की स्त्री होगी—जिसपर कोई अपरिचित राजा आसक्त हुआ होगा—जिसको इन्द्रने वहाँ से निकलवा दिया होगा—परन्तु जब हम कुरान को देखते हैं और उसके हूरो गिलमाँ (लौंडे लौंडियों) पर दृष्टि देते हैं तो निस्सन्देह हमें आप का कथन सत्य प्रतीतहोता है। (सविस्तर देखो रिसाले निजात)।

(हु० हि० पृ० २२७) हिन्दुओं के मत में जादू और मारण आदिके प्रयोग विहित हैं अथर्व वेद में शत्रुको मार डालनेके बहुत मंत्र हैं और उन में बलिदान कीभी विधि है-जो भगवती देवी को चढ़ाकर अपने शत्रु को मार डाले—एक स्थल पर लिखाहै कि जिसको मारना हो उसकी आकृति कागज़ पर बनाकर उसका सिर काट डाले—अथर्व वेद और—ऋग्वेद और अनेक ग्रन्थों मे ऐसे मंत्र हैं जिन में ईश्वर भिन्नसे प्रार्थना की गई है।

(उत्तर) आप का यह कथन उन्मत्त के प्रलाप से बढ़कर नहीं—क्योंकि नतो जादू कोई वस्तु है और न उससे किसी प्रकार की भलाई या बुराई होसकती है-जादूका मानना और उससे लाभ हानि का निश्चय करना मूर्खता की बातें और अज्ञानियों की बातें हैं वेद या शास्त्र या किसी आर्ष ग्रन्थसे जादू टोने का कुछ सम्बन्ध नहीं—मुझे आप की इस धृष्टता पर बड़ा आश्चर्य होता है कि बिनादेखे भाले वेदों के ऊपर यह झूठा कलङ्क लगाने को उद्यत होगये।

लीजिये हम आप को जादूकी उत्पत्ति सुनाते हैं—जहाँ से शैतान निकला-वहीं से जादू पैदाहुआ-बाइबिल इन बातों की मूल है और जिन्न शैतान और जादू उसका उसूल—खुद मसीह जिन्न व भूत निकाला करते थे—क्योंकि उन्होंने चालीस दिनतक शैतान के पास तालीम पाई थी उसने अच्छी तरह अपने मतलब की पट्टी पढ़ाई—हजरत अज़ाज़ील ने इससे पहले कई वर्ष तक स्वर्ग में शैतानी स्कूल चलाया-और हज़रत खुदाताला ने अन्तर्यामी होकर भी उसे मुअल्लिम मलकूत (फिरिश्तों का गुरू) बनाया फिर आदम

को उसके जालोंमें फंसाया-गेहूं का दाना खिलाया-अयूब पर जादू चलाया—जकरिया को चुरवाया-यहूदा में प्रविष्ट होकर मसीह को फांसी दिलाया-और मुहम्मद साहब के दिल में मुसल्ले (आसन) बिछाकर उनके मुंह से बुतों को शिफाअतका कलमा पढ़वाया।

सूरत बकर में लिखा है "कि उन्होंने पैरवी की उस की जो पढ़ते थे शैतान लोग सुलेमान की बादशाही में—सुलेमान काफिर न हुआ लेकिन शैतान काफिर हो गये-लोगों का जादू सिखलाते थे और पैरवी करते थे उसकी जो दो फरिश्तों हारूत व मारूत पर बाबुल में नाजिल हुआ है—जब याद करते हैं उनमें से चन्द मन्त्र जिनके सबब से स्त्री पुरुषों में वियोग डालें—और नहीं हैं वह किसी को हानि पहुंचाने वाले जादू से मगर खुदाके इरादे से"।

सूरत जिन्न में लिखा है "कहो वही भेजी गई तरफ मेरी कि मेरी बातोंकोसुना कई जिन्नोंने-पस कहा उन्होंने कि हम ने विचित्र कुरान सुना जो लेजाता है तरफ सच्चे रास्ते के पस हम जिन्न लोग कुरानपर ईमान लायें"।

शाहवली उल्ला हाशिये कुरानपर लिखते हैं "एक दिन मुहम्मद साहब सुबहकी नमाज मक्केके बाहर पढ़तेथे-जिन्नों की जमाअत (श्रेणी) ने उसको सुना और ईमान लाए खुदाताला ने इनके ईमान और बोलचाल से इस सूरत में इन्सानोंको खबरदी (पृ० ५२६ और देखो तफसीर जलाली पृ० १८० तथा तफसीर हुसैनी जिल्द२ पृ०३२४ व ४२८)।

कुरान की इन आयतों से प्रगट होता है कि शैतान व जिन्न मुसलमान होगया-हिदुस्तान में जो मूर्ख लोग जिन्नका भूत उतारतेहैं वह सुलेमानबीर,मुहम्मदाबीर और पहलु शाबीर का नाम प्रायः लिया करते हैं। जिससे सिद्ध है कि यह तीनों साहब जादू टोनेके बीर हैं-हमारे मुल्लाँ और मोलवी जादू केमन्त्रोंका काम कुरानसे चलाते, किसी आयत को सीधा और किसीको उलटा पढ़कर उलटी तसबीह (माला) घुमाते, बटेर लड़ाने में मारमीत और अजरमीत को काममें लाते,

लोगोंके घर आग लगाने में "फ़ार मिनुलननूर" की आयत को लिखकर चिराग़ में जलाते और आगको बुझाने के लिये "कुलनायानार कोनी बरदन वा सलामन" को पानी में बहाते हैं-बस कुरान वास्तव में जादू टौनेकी खान और गंडे ताबीज़की जानहै—फ़िनूहगौंब, नक्श सुलेमानी एजाज़ मुहम्मदी दुआ सिरयानी और चेहल जाफ़ यह सब साफ़ २ जादू टौने का काम देते हैं-जिससे कोई ईमानदार मुसलमान इन्कार नहीं कर सकता-जादू की तालीम खुदा ने दी और दो फ़िरिश्ते उसके प्रचारक हैं। और दोनोंका मुखिया एक है जो सन्देह करै वह काफ़िर होजाय।

पवित्रवेदोंमें इनबातोंका पतानहीं और न भगवती देवीकी कथा.हमारे धर्मशास्त्र प्रणेतामनुने ऐसी विडम्बना करनेवालों को अपराधी ठहरायाहै यथा-किसीसे धनलेकर अनुचितकर्म करनेवाला,किसी कल्पितवस्तु या ग्रह आदिका भय दिखला कर धनलेनेवाला, सोनेमें कोई और धातु मिलाकर वेचनेवाला, जड़ वा चेतन पदार्थोंसे जुआ खेलने वाला, मित्र,पुत्र और लाभ आदिके समाचार सुनाकर जीविका करनेवाला अपने प्रयोजन के लिये पापको छिपाकर उसे पुण्य प्रगट करनेवाला, हाथकी रेखा देखकर और उस बुरेभले फलको बतलाकर आजीविका करनेवाला-इन सबके कामों को राजा अलग २ देख कर यथा योग्य दण्ड विधान करे। (मनु॰ अ॰ ९ श्लो॰ २५८ से २६२ तक) बस जादूका मानना एक झूंठी कहानी और अविद्याकी निशानी है जो लोग भ्रान्ति और अविद्या में फंसे हुए हैं वही इन बातोंपर विश्वास रखते हैं—आर्य्य धर्म से इन बातों का कोई सम्बन्ध नहीं।

(हु॰हि॰पृ॰ २१९) हिन्दू लोग आपको साक्षी (गवाह) बनाते हैं।

(उत्तर) आग तो जड़है वह गवाह नहीं होसकती-हां उस में होम करके वायु को शुद्ध करते और मनुष्यों के मस्तिष्क सुगन्धित करते हैं।

(हु॰ हि॰ पृ॰११९) हमारे दीन (मत) में विवाह वह है

कि कोई स्त्री अपने आपको किसी पुरुष की आधीनता में देवे—यदि स्त्री या पुरुष अबोध नाबालिग, होंतो उसका कोई अध्यक्ष जैसे बाप वा भाई विवाह करदेवे फिर इस प्रतिज्ञा के लिये दो ईमानदार मनुष्यों की साक्षी होनी चाहिये—और स्त्रीका पुरुष पर कुछ स्वत्व (हक़) भी ठहरजाता है इसलिये कि वह पुरुष के बन्धन (कैद) में पड़जाती है—और इस हक़का मेहर है—और विवाह के समय खुतबा (जो विवाह में कलमा पढ़ा जाता है) पढ़ना सुन्नत (मुसलमानों की रीति) है।

(उत्तर) नाबालिग (अबोध) का इक़रार नामा (प्रतिज्ञापत्र) उचित नहीं है—इसलिये धर्मशास्त्रानुसार बोधशून्य बच्चों का विवाह भी अनुचित है और ऐसा विवाह सृष्टिक्रम के भी विरुद्ध है—क्योंकि विवाह का जो मुख्य तात्पर्य है वह इससे नितान्त जाता रहता है यह असमय अनुचित रीतिपर काम के वेगको भड़काना और व्यभिचार को बढ़ाना है मुहम्मद साहबने सृष्टिनियम के विरुद्ध ६ वर्षकी लड़की (आयशा) से विवाह किया—और नवेंवर्ष में उसके साथ प्रसङ्ग किया—इस से अधिक और अनर्थ क्या हो सकता है।

और यह जो आपने कहा कि स्त्री का स्वत्व पुरुष परकुछ ठहरजाता है—इस पर कई शङ्कायें उत्पन्न होती हैं—प्रथम यह कि इस दीन के अनुसार स्त्री और पुरुष के अधिकार बराबर नहीं और न वे ईश्वर की समान प्रजा हैं—क्योंकि स्त्री बन्धन में पड़जाती है परन्तु पुरुष नहीं-वहतो स्वतन्त्र है जिस स्त्री से चाहे विवाह करे—एक समयमें चार तक करसकता है और जो (सुन्नतनबवी) पैगम्बर की रीति का अनुसरण करे तो १५ तक और यदि मुत्तअह······पर अमल करे तो असंख्य इसके अतिरिक्त दासी जितनी चाहे उतनी रख सकता है (सविस्तर देखो कुरान सूरत निसा तर्जुमा शाहवलीउल्ला पृ० ७७)।

अपनी विवाहिता स्त्री का दूसरे की विवाहिता स्त्री से बदलाना भी इसलामी शास्त्रों में विहित है—कुरान सूरत निसा में एक आयत है जिसका तर्जुमा यह है "यदि बदलना चाहो

तुम एक स्त्री से दूसरी स्त्री को-तो महर में जो कुछ तुमने उसे दिया है उससे लौटालो—इसी तरह सूरा बकर में भी एक आयत है जिसका तर्जुमा सादीने इस प्रकार किया है" यदि पुरुष स्त्री को तिलाक देदेवे—जो तिलाक देदेने के बाद फिर वह स्त्री उसके काम की नहीं रहती—यदि इस दशा में वह किसी और पुरुष के साथ विवाह करलेवे तो कोई दोष नहीं।

इस पर कुरान के हाशिये में लिखा है तीसरे तिलाक के बाद फिर नहीं करसकती-बल्कि दोनों की इच्छा हो तब भी विवाह नहीं होसकता-जबतक बीच में दूसरे पुरुष का संग न हो चुके। (देखो कुरान पृ० ४६ और मुशकात फसल १ जिल्द ३ पृ० १०३ और कानून जिल्द २ पृ० ७१४ नवलकिशोर प्रेस)

अतः यह बहुत बुरी बात है कि मेहर (निष्क्रय) नियत हो—वेद शास्त्र की यह आज्ञा है कि पुरुष स्त्री का अर्द्धाङ्गिनी जाने-सिवाय एक स्त्री के दूसरी का नाम भी न ले-वेद की आज्ञानुसार एक पुरुष के लिये एक स्त्री और एक स्त्री के लिये एक पुरुष होना चाहिये-और यह सृष्टि नियम का भी अभिप्राय मालूम होता है—संस्कार विधि में ऐसे ही विवाह की आज्ञा है- स्त्री की अवस्था न्यूनातिन्यून १६ वर्ष और पुरुष की कम से कम २५ वर्ष की होनी चाहिये-उस समय दोनोंकी प्रसन्नता से माता पिता और अन्य वृद्धों के सन्मुख विवाह करने की आज्ञा है और उसकी विधि यह है कि पहले वेद मन्त्रों से परमात्मा की स्तुति व उपासना की जाती है तत्पश्चात् यज्ञ मण्डप में आहुति देते हुए स्त्री पुरुष पाणि ग्रहण के मन्त्रों से परस्पर प्रतिज्ञा करते हैं पुनः हवन की समाप्ति पर सब उपस्थित लोग उनको आशीर्वाद देते हैं।

दीन इसलाम में जगत् के सारे मतों से जो उत्तमता या अधिकता है उसे मौलवी हुसेनवाअज़ कुरानके हवाले (प्रतीक) से लिखते हैं "याद करो ईश्वर के उपकारों को कि जो उसने तुमपर किये हैं-खास कर विवाहों के विषय में क्योंकि पहले मतों के धर्मशास्त्रों में किसी को एक से अधिक विवाह करने की आज्ञा न थी सिवाय पैगम्बरों के—और इस

ई [illegible] एक समय में विवाह करसकता है—पहले तिलाक के बाद फिर उनसे सम्बन्ध नहीं करसकता था और अब (इसलाम) में करसकता है पहले यदि तिलाक दीहुई स्त्री जीवित होती तो पुरुष दूसरा विवाह नहीं करसकता और अब इसलाम की शरीअत के अनुसार करसकता है (मुफ्तीनां जिल्द १ पृ ४१) ।

मौलवी [illegible] साहब लिखते हैं " मुसल्मानों में स्त्रियों [illegible] और पर्दे में रखना लिखा है । (देखो सूरत नूर व सूरत अहजाब व तौफ़त फारूकी पृ० १२५) हदीस के हवाले से इखलाक [illegible] में लिखा है "कि लड़कियों को लिखने और पढ़ने से सर्वथा वर्जित रखना चाहिये । पृ० २१४

हु० हि० पृ० ११८) और यदि पुरुष अपनी स्त्री को तिलाक दे देवे ।

उत्तर—तिलाक (स्त्री का परित्याग) एक निन्दित कर्म है क्योंकि इससे व्यभिचार की वृद्धि और सैकड़ों अनर्थ उत्पन्न होते हैं सुशीलता और लज्जा की नौकाको यही धृष्टता और निर्लज्जता की नदी में डुबोता है जिन लोगों में यह भयानक रीति प्रचलित है उन्हीं को परित्यक्त स्त्रियों से सर्वथा कपले भरेहुये हैं । तनिक मुंहपर वस्त्र डालकर आन्दोलन करो !!!

(हु०हि० पृ २१८) या किसी स्त्री का पति मरजावे तो उस स्त्री को अधिक (अवधि) के बीतजाने पर किसी और पुरुष से विवाह करलेना उचित ही नहीं किन्तु धर्म है ।

उत्तर—यदि विधवा की प्रसन्नता और सम्मान की इच्छा हो तब उसका पुनर्विवाह होना चाहिये—परन्तु शोक तो यह है कि इसका प्रचार इस देश में बहुत कम है बहुधा उच्चश्रेणी के मुसलमान भी विधवा स्त्रियों का दूसरा विवाह नहीं कराते—जिसको पृ० २२१ पर तुमने भी माना है—इस अनर्थ के कारण स्वयं हज़रत पैगम्बर अग्रगामी हुये हैं—उन्होंने अपने आप तो लोगों को विधवाओं, परित्यागकी हुई स्त्रियों और बहू बेटियों से विवाह किये और किन्ही २ को बिना वि-

भाई के भी घर में डालदिया—परन्तु हज़रत की मृत्यु के पश्चात् आयशा प्रभृति उनकी स्त्रियां इस पुण्य कार्य्यसे वञ्चित रहीं-अर्थात् हज़रत के निषेध करने से बाधित (मजबूर) हो गईं-शोक ! महा शोक !! यद्यपि उस समय कई स्त्रियां उनकी युवति और प्रौढ़ा भी थीं और कई उनके मित्र उनसे विवाह करना चाहते थे—तथापि किसी का विवाह न हुआ ।

(हु० हि० पृ० २२०) हिन्दू दूलहा और दुलहिन का विचित्र वेष बनाते हैं-शिरपर मौड़, हाथ में कंगना, मुखपर सेहरा, (जैसे घोड़े और बैल के मुंहपर मखेरना होता है) और पोशाक कुछ और ही तरह की होती-और विरादरी की स्त्रियों का एकत्रित होकर सात दिन तक, दूलहा और दुलहन को उबटना लगाना, भांति २ के अश्लील गीत गाना, तेलचढ़ाना, तभी कढ़ाई करना, चौक पूरना, अभिमान और घमण्ड जतलाने के लिये बखेर करना और उसमें रुपया, पैसा फेंककर परमेश्वर की दी हुई दौलतको बरबाद करना, आतिशबाज़ी छुड़वाना, ढोल, नफ़ीरी, नक्कारे और ताशे आदि बजवाना, बन्दूकें छोड़ना, समधियों का आपस में मिलकर हँसी और ठट्ठा करना, मिठाई आदि बनाकर बरातियों को जिमाने के लिये डंगरों की तरह बिठाना, दूलहा से निर्लज्जता की बातें करना, अश्लील और असभ्य छन्दों का पढ़ना, स्त्रियोंका पुरुषोंको अश्लील गीतों में गालियां देना और दूलहा से दुलहन की जूती को सिजदह कराना आदि आदि ।

उत्तर—इन सब बातों का वेद व शास्त्रों में कहीं पता नहीं है—यह सब बातें शास्त्र विरुद्ध होने से अनुचित हैं आर्य्यसमाज में सैकड़ों विवाह होचुके हैं और होते हैं जिन में इन बातोंका कोई नाम नहीं लेता—बस सर्व साधारण की त्रुटियों के हम उत्तरदाता नहीं होसकते—मुसलमान भी सेहरा बान्धते हैं बड़े२ विद्वान् मौलवी और सय्यद मुहर्रम में हसन और हुसैनका सेहरा बनायाहुआ गाया करते हैं-क्या यह घोड़े और बैलके मखेरने जैसा नहीं ? इकट्ठा खाने को हम सदासे डंगरों और वहशी लोगोंका स्वभाव जानतेथे-परंतु धन्यहै

परमात्मा को कि आज एक मुसलमान के लेख से भी यह सिद्ध होगया कि यह डंगरों और बैलों का काम है मनुष्यों का नहीं भाई हमतो पहले सेही कहते थे कि सभ्य और आयुर्वेद के प्रणेताओं ने इकट्ठा खाने को अच्छा नहीं बताया—क्योंकि इसमें एक दूसरे को बीमारी के लगजाने का भी भय है-यह रीति हिन्दुओं में भी कहीं २ मुसलमानों के संसर्ग से प्रचलित हुई है, वेश्या नचाना या आतिश बाजी जलाना, रुपया उड़ाना गाली देना इत्यादि को हम शास्त्र विरुद्ध और अनुचित समझते हैं-परन्तु विवाह में उचित रीति पर हर्ष मनाना, अच्छे राग गाना और बाजे बजाना इत्यादि बातें बुरी नहीं-क्योंकि हमारे यहां तो शादी (उत्सव) होता है इसलिये उस में अवश्य हर्ष मनाना चाहिये। आपके यहां हर्ष के स्थान में (मातम) शोक होना है सो उचित है।

(हु० हि० पृ० २२६) हमारे मतमें हरतरह की शराब हर किसी पर हराम है और वाम मार्गी हिन्दुओं के मत में हर किस्म की शराब हलाल है।

(उत्तर) वाममार्गी हिन्दुओं में ऐसे है जैसे मुसलमानों में रिन्द मुशरिब जिनका यह सिद्धान्त है "वाअज शराब पीने से काफ़िर हुआ ये क्यों। क्या ड़ेढ़ चुल्लूपानी में ईमान बहगया"। अथवा

हे उपदेशक सुनो रे भाई। मद्यपान से धर्म न जाई॥
धर्म न त्रण सम है लघु भाई। जो किञ्चित जलसे बहिजाई॥

यदि वामर्गियोंके कारण हिन्दू मज़हब बदनाम है तो रिन्दों समाईलियों और ज़ाकरियों से मुहम्मदी मतभी नेक नाम नहीं परन्तु आपके समस्त नबी भी तो शराब को हलाल समझते थे और पीते थे-इसपर भी आपने कुछ ख़याल किया या नहीं।

(हु० हि० पृ० २२७) हमारे दीन में हर पेशेवर के घर का खाना हलाल है यदि उसका धन हराम के पेशे से पैदा न हुआ हो।

(उत्तर) इस बात में हम और आप सहमत हैं;-इसलिये

हमारे यहां पाकक्रिया शूद्र के कर्मों में से है और हम उन सब मनुष्यों के हाथ से जो हमारे धर्मको मानते हैं खाना बुरा नहीं समझते परन्तु हमारे और आपके हराम व हलाल (भक्ष्याभक्ष्य) में भेद है आप पशु पक्षियों को मारना और खाना हलाल जानते हैं और चौके पर सरवरी रोटी खाने को हराम आप कौड़ीपर मुर्गी मारने और छदामपर बकरीका गला काटनेको सवाब (पुण्य) मानते हैं परन्तु हम इसे पाप समझतेहैं और पैसे के बरका खाना अनुचित मानते हैं तुम्हारे ही भाई शीया मुसलमान तुमको पलीद समझते हैं। देखो वह क्या कहते हैं:—"सुन्नत वाले यहूंद और निसारा से भी अधिक पलीद हैं–यदि इनके शरीर से कोई वस्तु छू जावै तो उसे धोना चाहिये (तुहफ़े असना असरिया पृ० ५७०)।

हम आर्य्यलोग सिवाय मेहतर, कसाई और अघोरीआदि पलीद लोगों के और किसीको छूना बुरा नहीं समझते-परन्तु आश्चर्य्य है कि मुसलमानलोग भंगी और कसाइयों के साथ भी संसर्ग रखते हैं और शौच (आबदस्त) तक नहीं करते उसी मट्टी के बर्तन से पाख़ाने जाते और उसीसे पानी पीते हैं (बलिहारी है इस पवित्रता की)।

(हु० हि० पृ० २२८) हमारे यहां परस्पर मिलने के समय सलाम का एक ही नियम है और हिन्दुओं में अनेक।

उत्तर—वेद की आज्ञानुसार एक नमस्ते के सिवाय कोई नियम ठीक नहीं (सविस्तर देखो आर्य्य, हिन्दू और नमस्ते की मीमाँसा) जस तुम्हारे यहां साहब सलामत, हजरत सलामत, किबला, बन्दगी, मुजरा, कोरनिश, या अलीमदद या हुसैन या धौंफ़ल या उस्ताद आदि प्रचलित हैं ऐसे ही हिन्दुओं में रामराम, जयहरि, परमात्मा जयति, दण्डवत् और पालागन आदिका प्रचार है परन्तु यह ठीक नहीं उत्तम तो वही है जो ऊपर लिखागया।

(हु०हि०पृ० २३१) मुसलमानों में बड़ाई और छोटाई दो कारणों से है एक कर्म से और दूसरे वंशसे जैसे सय्यद, बनी हाशम, कुरेश और बनी इस्माईल अन्य जातियों की अ-

अपेक्षा श्रेष्ठ हैं और हिन्दुओं के धर्म में यद्यपि बड़ाई कर्म से भी है तदपि जाति को प्रधान और मुख्य मानते हैं।

(उत्तर) शास्त्रके अनुसार बड़ाई कर्म से है न कि वंश और गोत्र से-परन्तु मुसलमानों में केवल जाति से बड़ाई मानी जाती है-सय्यद कैसाही मूर्ख और पामर क्यों न हो परन्तु फिर भी उत्तम जानाजाता है इसलिये सब सय्यद बनने की कोशिश करते हैं किसीने सच कहा है:-"साल अव्वल शेख बूदम साल दोयम पीरजी। गल्ला चूं अरजां शवद इमसाल सय्यद मेशवद।

अर्थात्-प्रथमवर्षमें शेख कहाये। वर्ष द्वितीय पीरजीभाये॥
भई अन्नकी जब अधिकाई। सय्यद की पदवी तब पाई॥

इस्माईल के वंश में होना महत्वका चिन्ह नहीं-इस्माईल की मां हाजरा लौंडी थी। दासीपुत्र काम नहीं आये। नृपको जायो चाहि कहावे॥ (देखो हुसेनी जिल्द २ पृ० १ ६ ७ व अबुल फिदा जिल्द १ तथा पैदायश तौरेत १६१ व तारीख अम्बिया पृ० ३१ व ३४).

(हु० हि० पृ० २०८ व २०६) हमारे दीनमें सुबह से शाम तक रोजह रखना रमज़ान के महीने में धर्म है और हिन्दू अपने बड़ों के नामपर रोजह रखते हैं और उसको व्रत कहते हैं और जिनको श्रद्धा हो उनपर कुरबानी ईदुलज़ुहा की उचित है और यह इबादत (उपासना) का अंग है।

(उत्तर) रोजह बुद्धि और वैद्यक के विरुद्ध होने से ठीक नहीं—उससे तो एकादशी का व्रत अच्छा है—जैसे कोई २ हिन्दू मुर्दों के नामपर रोजह रखते हैं—ऐसेही प्रायः मुसलमान हजरत अली, इमाम हुसेन, बाबा फातिमा और पीर साहब का रोजह रखते हैं—सच पूछो तो दोनों सीधे मार्ग से दूर भटक रहे हैं और न्याय तो यह है कि मुसलमान रमज़ान में अधिक पाप करते हैं—पशु अधिक मारेजाते हैं जिससे दुर्गन्धि अधिक फैलती है लाखों मनुष्य मृत्यु के ग्रास होजाते हैं—आये दिन मक्का में १४-१५ हज़ार हाजी विशूचिका की भेंट चढ़जाते हैं—यदि ईश्वर प्रसन्न होता तो रोग क्यों

कलाता बकरे या ऊंट या गाय सुवर का ईश्वर या बुतों या पीरोंके नामपर गला काटना महापाप और अत्याचार है और ईश्वर के नाम पर ऐसा अनर्थ करना और भी बुरा है-हिन्दू यद्यपि इस समय वैदिक धर्म से अपरिचित हैं तदपि ऐसे निष्ठुर और दयाके विरोधी नहीं कि परमेश्वर के नाम निर्बल और निरपराध प्राणियों के गले काटने लगें-अपने वास्ते या डाकिनी शाकिनी और कालीके नाम पर काटते हैं-वह ईश्वरपर हिंसा का कलङ्क नहीं लगाते किन्तु ऐसा कहने से भी डरते हैं देखो तुम्हारे कुरान सूरन हजमें भी लिखा है " नहीं पहुंचता खुदा को गोश्त कुरबानियों का और न लोहू उनका बलकिन खुदा को तुम्हारी परहेज़गारी पहुंचती है " कुरान की यह आज्ञा होने पर भी न मालूम क्यों मुसलमान लोग निरपराध पशुओं का गला काटकर पापके भागी बनते हैं और सबसे अधिक शोक तो इस बातपर है कि और सम्प्रदायों में जितने अच्छे लोग होते हैं वह इस हत्याकाण्ड से अलग रहते हैं परन्तु मुहम्मदी मतमें यह उत्तम सेवा मसजिदों के मुल्लानों, पीरों और काजियों से लीजाती है त्राहि भगवन्! त्राहि भगवन्!!

(हु० हि० पृ० २१०)हमारे मतमें प्रत्येक श्रद्धावान् मुसलमान को उचित है कि एकबार अवश्य हज्ज (काबे) की यात्रा करे-और काबा एक पवित्र स्थान है मक्के शरीफ़ में और खुदाताला का हुकम है कि जबकोई नमाजपढ़े काबेकी तरफ मुंहकरके पढे और सिवाय इसके और तरफको सिजदा करना वर्जित है और खुदाताला ने उस स्थानको पवित्र और श्रेष्ठ होने से सब मुसलमानों का उपासनालय ठहराया है—और जो कोई हज्ज करता है और उस मन्दिरकी परिक्रमा करता है उसके सब पाप और अपराध क्षमा हो जाते हैं और सिवाय काबे के और किसी मकान का हज्ज समझ करजाना और उस की तर्फ सिजदा करना या उसकी परिक्रमा करना शिर्क (नास्तिकपन) है और हिन्दुओं के तीर्थ और मन्दिर अनेक और भिन्न २ हैं।

(उत्तर) वैदिक धर्मानुसार किसी मन्दिर या पहाड़ की

परिक्रमा करनेसे पाप दूर नहीं होते-एक भयानक मरुस्थल में जहाँ वहशी और बद्दू रहते हैं ईश्वर प्राप्ति की इच्छासे आना, एक मन्दिरके चारों ओर चक्कर लगाना, संग असवद् (काले पत्थर) को चूमना, पहाड़ों के आस पास घूमना, उस मकान को खुदा का घर समझना और सदा उसकी तरफ सर झुकना और मांथा घिसाना ईश्वरकी अवज्ञा और मूर्ति पूजा नहीं तो और क्या है ? ।

जरा सोचिये-जो लोग मिसर में हैं वहकावे की पूर्वकी ओर रूम व शामवाले दक्षिण की ओर, हिन्दोस्तान व अफगानिस्तान वाले पश्चिम को ओर और अदन व नज्दवाले उत्तरकी ओर सिज्दह करते हैं और कावे के अन्दर कोई दिशानियत नहीं, जिधर चाहो मुंह करके सिजदह करो-इससे स्पष्ट रीति पर सिद्ध होता है कि सिजदह संग असवद् और मकान को कियाजाता है नकि सर्व व्यापक परमात्मा को-उसके सिवाय किसी और तरफको सिज़दह करना शिर्क और उसको नहीं-किसी और मकान की परिक्रमा करना या किसी और पत्थर को चूमना कुफ्र और उसको नहीं। नहीं है कुफ्रगर कावा परस्ती। तो फिर बुत पूजकों पर क्यों है सख्ती ॥ रवा है बोसा गर पत्थर का हज़रत। तोफिर है हिन्दुओं से क्योंयह नफ़रत॥ कावेसे मदीने वहां से करवला और आगेनजफ, क़दम इब्राहीम क़दम रसूल, क़दमआदम अजमेर, सरहिन्द, पाकपटन, लएढोरा मकनपुर, बहरायच, पीरान किलियर, गंगोह, शेखपुरह, बरनावह, अमरोहा, सनाम, शहीदा पीर स्यालकोट, दायरह दीनपनाह मुलतान, रसूल के केश और पगड़ी (जो लाहौर में हैं) इत्यादि अनेक स्थानों में मुसलमान लोग अपनी इष्टपूर्तिकी आशा से

*टामसन विलियम लिखते हैं-हरसाल ता० १२ रबी उल अव्वल को (जो रसूल की मौत का दिन है (देहली में एक बड़ा भारी समुदाय स्त्री पुरुषों का एकत्रित होता है और वह हज़रत के पाद चिन्ह (नक़शेक़दम) को पानी से धोकर पीते हैं। मुफ़ताहुल तारीख़ पृ० ६८ सन् १८६७ ई०).

जाते और विफल मनोर्थ होकर लौटआते हैं किसी ने सच कहा है:—

उसड़े शुभद्वारसे सर जिसने फिराया अपना। जिस किसी दरमें गया मान न पाया अपना।

अतएव शास्त्र के विरुद्ध चलने वाले हिन्दू और कुरान के अनुकूल चलने वाले मुसलमान न्याय के अनुसार दोनों मूर्ति पूजक और अपराधी हैं।

पूजें वह चरण विष्णुके और यह रसूल के। कायल यह खाक नअ़फके वह मायधूलके॥ वहचरणा मृतकोपीते हैं सिरपर लगालगा। नक़शे क़दम को धो के यह पीते हैं बरमला॥ वह जगन्नाथ जाते हैं शिर को झुका झुका। यह चूमते है हुजरे असियाह दस्त कियरिया॥ वह मन्दिरों को काबेको यह सर झुकाते हैं। वेहूदह बुत परस्ती में आयू गंवाते हैं॥ दोनों हैं बुत परस्त खुदासे फिरेहुए हैं दूर हक़ से चाहेवला में गिरे हुए वाजिब खुदा परस्तों को दोनों से हज़ तिनाब। काशाब्देर होनों हैं इसराफ़ नासवाब।

(कु० हि० पृ० २११) हमारे यहाँ अच्छे कर्मका फल जो परमात्मा के न्यायसे उसको मिलता है वह यदि मुर्देकोदिलावै तो उसको पहुंच जाता है—परन्तु हिन्दू अचारज को क्रिया कर्म देते हैं और श्राद्ध तर्पण करते हैं।

(उत्तर) मृतक को हमारी भेजी हुई कोई वस्तु बुरी या भली, गाली या सुहाली नहीं पहुंच सकती-श्राद्ध तर्पण का मृत कों से कोई सम्बन्ध नहीं-यह जीवित माता पिता के वास्ते हैं। स्वार्थी मुल्लाओं और लालची पण्डितोंने इन्हें मुर्दों के लिये बतलाया और माल उड़ाने का बहाना बनाया है सच है मुर्दा स्वर्गमें जावै या नर्कमें मुल्लाको अपने हलुवे मांड़े से काम। करैं श्राद्ध मुर्दों का अज्ञान छाया। मरों को भला किसने भोजन जिमाया॥ हिन्दू तो सिर्फ क्रिया कर्म या श्राद्ध ही करते हैं-परन्तु मुसलमान तो उनसे हजार गुणा बढ़कर स्वांग रचते हैं-मुर्दे का तीजा, दसवां, चेहलम, शशमाही सालाना, पीर साहब की ग्यारहवीं, सत्रहवीं, तेरहवीं, अमर

हमज़ा की शुबरात, इमाम हुसैनका अठारह मुहर्रम, हर एक बुजुर्ग का फातहा उसकी मौतके दिन, और किन्हीं २ के लिये विशेष शर्बत और भोजन-जैसे शाह अब्दुल हक़ का तोशा हलवी, हज़रत बीबी की सहनक दही खुश्के की, हजरत अली का कूंडा मीठे चावलोंका, बू अली कलन्दर का मालीदह, इमाम हुसैन की दलीम और शर्बत, बाबा फरीद की खिचड़ी मीठी, पीर धन्नूका नमक, सय्यद सुलतान का रोट या रेवड़ियाँ, ख्वाजे मुअय्यनुद्दीन चिश्तीकी देग, किसी की नियाज़ (भेंट) सवा रुपया, पांच पैसा, तीन कौड़ी किसी का रोट सवा मनका, किसी का पाँच सेरका, मुर्दे का इसकात कुरान कराना और सात मनुष्यों के हाथों पर फिराना, तीन चिराग जलाना, परिक्रमा करना, उसके आगे हाथ जोड़कर खड़े होना, कबरों पर पानी डालना, संध्या समय दीपक जलाना, मुहर्रम में पानी की मश्कें छिड़कवाना और ताज़िया बनवाना और उनके नीचे बच्चों का निकलवाना, अर्जी बंधवाना इत्यादि-क्या इससे बढ़कर भी मूर्ति पूजा और ईश्वर विमुखता हो सकती है ? कदापि नहीं।

इसलाम की सभ्यता का एक विचित्र निदर्शन

तारीख़ अम्बिया में लिखा है कि जब हज़रत इस्माईल को हजरत इब्राहीम गोद में लेते थे-तब बीबी सारह को इस बातका बड़ा डाह हुआ-उसने शपथ खाई कि मैं तीन अङ्ग हाजरहके शरीर में से काट गी-जब हाजरहको यह ख़बर मालूम हुई तो वह छिपगई-हजरत इब्राहीम ने बड़ी आधीनता से प्रार्थना की कि वह उसके दोनों कानों की नोक और कुछ योनि का भाग काट लेवै-ताकि इसकी शपथ पूरी होजावे-सारहने इस प्रार्थना को स्वीकार किया-हज़रत इब्राहीम ने हाजरह को प्रगट किया-और जो बात तय हुई थी वह अमल में आई-इसी हेतु से कानों में छिद्र और स्त्रियों का खतना करना सुन्नत है यह दण्ड देकर भी सारह का क्रोध शान्त न हुआ-वह सदा हाजरह और इस्माईल के डाहसे जलती रहती थी--निदान

उसे (हाजरह का) घर से निकलवा दिया । तारीख़ अम्बिया पृ० ३४ व ३५–वही गाथा तारीख़ तिबरा जिल्द १ पृ० ६७ में, और रौज़तुल सफ़ा जिल्द १ पृ० ३७ में बड़ी अश्लील रीतिपर गाई गई है ।

आर्य्य धर्म में क्या विशेषता !

(१) ईश्वर को देश कालादि से अनवच्छिन्न समझ कर उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना ध्यान और समाधि द्वारा उसके पवित्र गुणों के चिन्तन में अपने मनको लगाना परमात्मा की एकता और उसके महत्व का निदर्शन जिस उत्तमता से इस धर्म में कियागया है इससे बढ़कर किसी और जगह नहीं मिलसकता किसी प्रकार की मूर्तिपूजा, ईश्वर को भौतिक मानना, उसका किसी में प्रवेश करना या जन्मलेना, किसी मनुष्यका ईश्वर होना या उसके बराबरहोना या उसका दूत एलची या प्रतिनिधि होना इत्यादि बातें जो मूर्तिपूजा की जड़ हैं इस धर्मके अनुसार निषिद्ध और कल्पित हैं क्योंकि वेद में इनकी कहीं पर विधि या आज्ञा नहीं । देखो यजुर्वेद अ० ४० मं० १ से १७ तक)

(२) वेद जो सबसे प्राचीन, ब्रह्मासे लेकर जैमिनि पर्य्यन्त सब ऋषियों के सम्मत, त्रयी विद्या ज्ञान, कर्म और उपासना से भरपूर, भ्रान्ति अविद्या और त्रुटियोंसे दूर जिन की शिक्षा मनुष्य मात्र के लिये और जिनका उपयोग प्राणिमात्र के लिये है–उन को यह अपना धर्म पुस्तक मानता है ।

(३) सारेधर्म जन्चीता और तर्क से अपने को बचाते और भेड़ा चाल में लोगों को फंसाते हैं परन्तु यह मनुष्य की मनन शील व्युत्पत्ति करताहुआ प्रत्येक को विचार और तर्क से काम लेनेकी प्रेरणा करता है और अपने भाइयों को अविद्या और अन्ध परम्परा के गढ़े में गिरने से बचाता है और यही विद्या का तात्पर्य्य है ।

(४) परमेश्वर की सच्ची उपासना (योग विद्या) केवल इसी धर्म में है जिसके बिना न तो ध्यान होसकता है और न

मन एकाग्र—जबतक इस चञ्चल मनकी गति को नहीं रोका जाता तबतक ध्यान नहीं जम सकता—और बिना ध्यान के जमे ईश्वर की प्राप्ति दुर्लभ है—ऐसी परा उपासना और उसके पूर्ण साधन किसी और धर्म में नहीं मिलसकते।

(५) सारे धर्म परमेश्वर की प्राप्ति के लिये किसी न किसी मध्यस्थान को नियत करते हैं—केवल एक वैदिक धर्मही है जो बिना किसी की मध्यस्थता के केवल अपने पुरुषार्थ से ईश्वरकी प्राप्ति मानता है—वह सबका पिता और सबसे सम्बन्ध रखता है—जो सच्चे भाव और शुद्ध मन से उसको पुकारता है वह बिना किसी की सिफारिश के उसकी सुनता है।

(६) पञ्चयज्ञों को जो आत्मिक और सांसारिक उपकार के मूल हैं नित्यकर्म मानना अर्थात् ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या) के द्वारा अपने आत्मिक भावों को शुद्ध करना, देव यज्ञ (अग्निहोत्र) द्वारा वायु जलको शुद्ध करके प्राणिमात्र का उपकार करना, पितृ यज्ञ (श्राद्ध और तर्पण) के द्वारा माता पिता और गुर्वादि की सेवाकरना, अतिथि यज्ञ के द्वारा अभ्यागत और उपदेशकों का सत्कार करना, भूतयज्ञके द्वारा दीन और अनाथों का पालन और पोषण करना—यद्यपि और सम्प्रदायों में भी इन में से सब किसी को कर्तव्य माना गया है तथापि आर्य्य धर्म विशेष रूप से इनको नित्य कर्म बतलाता हुआ इनकी कर्तव्यता का प्रतिपादन करता है।

(७) स्त्री, पुरुष, सम्बन्धी, माता, पिता, पुत्र, पड़ोसी, विदेशी, अनाथ, अतिथि, और दीन, लोगों के साथ यथा योग्य बर्ताव करना जैसा यह धर्म बतलाता है वैसा अन्य कोई नहीं हर्ष और शोक के कर्म, जन्म से लेकर मरणतक षोड़श संस्कार (जिनसे मनुष्य का शरीर ही नहीं किन्तु आत्माभी सुप्रसन्न होता है) जिस उत्तमता से मनुस्मृति और गृह्यादि सूत्रों में बतलाये गये हैं उनका लव लेश भी और कहीं नहीं मिलता स्त्री को अर्द्धाङ्गिनी मानना, बहु विवाह का न होना,

र्य्य व्रत और पतिव्रत धर्मका पालन करना, इस मत के महत्वके चिन्ह हैं।

(८) आत्मा और आत्मिक शक्तियों का ज्ञान, प्रकृति और प्राकृतिक पदार्थों का ज्ञान, परा और अपरा विद्या का व्याख्यान, सृष्टिकी उत्पत्ति और प्रलयका वर्णन जिस उत्तमता से वैदिक धर्म बतलाता है उससे बढ़कर सायन्स (पदार्थ विद्या) भी नहीं बतला सकती।

(९) दया जिससे बढ़कर और कोई गुण नहीं इस धर्म का बड़ा भारी अंग है अर्थात् मांस न खाना और निरपराध किसी प्राणी को न सताना

(१०) अन्याय, दबाव, भय और लोभ से किसी को अपना अनुगामी, बनाना युद्ध, कलह और विवाद से अपनी उन्नति चाहना इस धर्म में वर्जित ही नहीं किन्तु अत्यन्त गर्हित है—प्रेम और सुहृद्भाव से सबको धर्म और हित की शिक्षा करना इस धर्म का उद्देश है (देखो आर्य्यसमाज का ७ वां और नवाँ नियम)

(११) सारे ऋषि, मुनि, विविध विद्याओं के आचार्य्य-फिलास्फर वेदों के अनुगामी थे—और सम्प्रदायों में जितने डाक्टर, फिलास्फर और आचार्य्य हुए हैं वह प्रायः अपनी धर्म पुस्तकों से विमुख होतेगए और उन धर्म पुस्तकों के कट्टर अनुयायियों ने उन विद्वानों के साथ वह २ सलूक किये कि जिनके स्मरण करने से रूंगटे खड़े होते हैं— अर्थात् उनके चमड़े उतर गये, उन्हें शिकंजे में खींचा गया था फाँसी दीगई परन्तु वे इस धब्बे से पाक हैं।

(१२) झूंठी करामातें; सृष्टि क्रम विरुद्ध बातें, भानमती के तमाशे, रसायन के लटके, पारस के किस्से, जादू, जिन्न भूत, परी और शैतान की भूल भुलैय्यां इस मत में नहीं हैं परन्तु और सब मतों की धर्मपुस्तकें इन बनावटी और कल्पित गाथाओं से भरी पड़ी हैं।

(१३) मनुष्य की जीवन यात्रा को चार भागों में विभक्त

करना और प्राकृतिक नियमानुसार उनके उद्देश्य को नियत करा इन सब के सर्वोत्कृष्ट महत्व को जतलाता है ब्रह्मचर्य्य गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास यह चार आश्रम और इनके पवित्र उद्देश जबतक यह संसार रहेगा तबतक इस के निर्मल यश को धवलित रक्खेंगे।

(१४) जब २ इस धर्म पर इसके गूढ़ मर्म को न समझ कर लोगों ने आक्रमण किये और लोगों को इससे विमुख बनाया तब २ ईश्वर की कृपा से अकस्मात इसकी रक्षा के सामान पैदा होगये—जब बामी और शक्तिकादि सम्प्रदायों ने इसको कलंकित करना चाहा—तब महात्मा बुद्ध ने इसकी रक्षा की और जब बौद्ध और जैनियों ने इसको निगलना चाहा तब महात्मा शंकर ने उनका मुंह कील दिया और जब अहं ब्रह्म वादियों ने इसके कर्मकाण्ड और उपासना काण्ड से लोगों को विमुख करना चाहा। तब रामानुजादि आचार्य्यों ने उनको रोका। और जब इसलाम का अजदहा इसको निगलना चाहता था तब गुरु नानक और गुरु गोविन्दसिंह प्रभृति महात्माओं ने इसको बचाया। और अब अब ईसाई, मुसलमान, जैनी और पौराणिक यह सब अपने २ पेट में इस को रखलेना चाहते थे स्वामी दयानन्द ने इसके मर्म को जतलाकर और सब का आदि गुरु इसे ठहराकर इसकी स्वत्व रक्षाकी—ऐसे २ घोर परिवर्त्तनों और आक्रमणों से बचकर इसका जीवित रहना क्या इसके महत्व को सिद्ध नहीं करता अवश्यमेव करता है।

यद्यपि इसके अनुयायियों को यथा क्रम इसके लिये बहुतसी आपत्तियों और यातनाओं को सहना पड़ा यहां तक कि बहुतों को मृत्युका भी मुकाबिला करनापड़ा—परन्तु इसका प्रेम और अनुराग लेशमात्र भी उनके हृदयों से कम न हुआ आर्य्यों ने इसके लिये अपने ही नहीं किन्तु अपने छोटे २ बच्चों तक के शिर कटाये—उनकी स्त्रियों ने अग्निकुण्ड में अपनी आहुतियां दीं परन्तु इस प्राण से भी प्रिय वैदिक धर्मसे मुंह न मोड़ा क्या यह इसके महत्व का कुछ कम प्रभाव है।

(१६) सत्य की जिज्ञासा और धर्म के निर्णयार्थ प्रत्येक

मनुष्य को उत्तेजित करना, विद्या बुद्धि और युक्ति के विरुद्ध किसी की बात न मानना, प्रत्येक विद्वान, सज्जन धर्मात्मा का आदर करना–और उनकी शिक्षा और दीक्षा से पब्लिक को बोधितकरना, प्रेम और सुहृदभाव से सत्य धर्म को फैलाना, युक्ति और प्रमाण से लोगों के संशय मिटाना, परोपकार और निष्काम कर्मकीमहिमा बतलाना–कर्मानुसार फलकी व्यवस्था को प्रतिपादन करते हुए पुनर्जन्म को सिद्धकर ईश्वर के न्याय और दया आदि गुणों को सार्थक बनाना इत्यादि इस धर्म के पवित्र चिन्ह हैं। धन्य हैं वे पुरुष जो सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहते हैं।

अन्तिम निवेदन।

भाई मुसलमानो ? और विशेषकर हमारे आर्य्यावर्त के रहनेवालो ! ईश्वर के लिये पक्षपातको छोड़कर इस पुस्तक का अवलोकन करो–अरब में जब इसलाम फैला उससे पहले वहाँ साबयीन, मजूस, यहूद और ईसाई लोग रहते थे–उन्हीं की धार्मिक शोचनीय दशासे इसलाम को काम पड़ा और इसलिये केवल यही लोग कुरान में बारर सम्बोधित कियेगए हैं उन्हीं के प्रश्नों के उत्तर हैं उन्हीं से कलह, विवाद और युद्ध आदि हुए हैं–किसी सभ्य, विद्यारसिक और स्वतन्त्र जाति से पाला नपड़ा यही कारण है कि अरब जैसे असभ्य अविद्याग्रस्त देश में इसका प्रचार होगया—स्पेन पुर्तगाल आदि सभ्य देशों में भी यह पहुंचा—परन्तु वहाँ इसकी दाल न गली अत्याचारके सहारे पहुंचाथा, अतः बहिष्कृत कियागया या स्वयं भाग आया जिन सम्प्रदायों को स्वयंमेव दुर्दशा हो रहीथी वह भला इसका मुकाबिला ही क्या करते ? इसी कारण वह अद्यावधि सर न उठा सके (देखो ईरान मिस्र और अफगानिस्तानकी हालत) परन्तु जिन धर्मों में सचाई और दया आदि ईश्वरीय गुणोंका लेश था वह कभी इसलामके जाल में न फंसे और यदि कभी सेवाजी की तरह औरंगजेब जैसोंके दावघात में आगये तो झट अपनी बुद्धि बलसे निकलगये और फिर हाथ न आए।

यद्यपि वैदिक धर्म से विमुख होकर आर्य्य सन्तान ने पुराणों को अपना धर्म पुस्तक मानलिया था परतौभी उपनिषदों की सच्ची फिलासफी उनके हृदयों में कुछ न कुछ चमकती रही जिससे इसलाम की शिक्षा से उनके हृदयों पर प्रभाव नपड़ा विचार का स्थल है कि सात सौ वर्षा की रक्त वर्षा को धारा भी आर्य्य धर्मकी प्रदीप्त ज्ञानाग्नि ठंढा न करसकी-किन्तु समयं२ पर इस पवित्र जाति में से धर्मात्मा लोग प्रगट हो कर इसलाम के आक्रमणों से इसको बचाते रहे और उसके आक्षेपों का समीचीन उत्तर भी देतेरहे--उन्हीं मेंसे श्रीयुत परमहंस परिव्राज का चार्य्य स्वामी दयानन्द सरस्वती जी भी प्रगट हुए-पूरे एक हजार वर्षके पश्चात् आर्य्यावर्त्त की आशालता लहलहाई, मनोर्थ का पुष्पखिला और सत्यका सूर्य्य चमका यद्यपि आर्य्य जाति अविद्या की कीचड़ में लिथड़ कर और अभिमान की दलदल में फंसकर निस्तब्ध होगई थी और पाषाण पूजादि करने लगगई थी तथापि उस महात्मा के सच्चे और बेलाग उपदेश अपना काम करगये-उनके निस्वार्थ उपदेश और निष्काम पुरुषार्थ ने देशकी एकदम काया पलटदी-और प्रायश्चित्त का द्वार खोलदिया जिसदेश में आकर इसलाम की तेजतलवार खुट्टली होगई--ईसाइयों की गूढ़ पालिसी की कलई खुलगई वहांपर उसके सत्य और बेलाग उपदेश ने लोगों को चकितही नहीं किन्तु अपनी ओर आकर्षित भी किया उस की शिक्षा, प्रवचन पटुता, सहन शीलता और निर्भयता को देखकर विपक्षी लोग भी दंग रहगये—आर्य्य सन्तानों के हृदय में जो द्वेष और अभिमान की अग्नि धधक रही थी उसको शान्ति और प्रेम की धारा से बुझादिया—भूले बिछुड़े भाइयों का परिचय दिलाकर उन्हें एक दूसरे के गले मिला दिया वेद और शास्त्रों के युक्ति और प्रमाण भरे उपदेशों को सुना भ्रान्ति भरी कल्पनाओं को भगादिया-ज्योतिश्शास्त्र के विरुद्ध भिमत अभिप्राय को जता ग्रहों की कल्पित बाधा और शंकासे लोगोंको छुड़ादिया और प्रत्येक प्रकारकी कब्रपूजा, स्थानपूजा और पाषाण पूजाकी यहांतक छानबीनकी कि साधारण आर्य्य

के सामहने प्रवीण ईसाई, विद्वान मौलवी या प्रसिद्ध पाषाण पूजक को ठहरना दुस्तर होगया—मुसलमान भाइयो! अब इस देश से दिन प्रति दिन भ्रान्तिका राज उठता और अविद्या का डेराडंडा उखड़ता जाता है अब प्रत्येक धर्मका विद्या से सामना और बुद्धिसे मुकाबिला है यूरोप में विद्याकी धारा बहते ही (वह साराकूड़ा कर्कट जो १८०० वर्ष से जमा होरहा था) बहगया और बहता जाता है—अब वहां बाइबिल की किस्से कहानियां अलिफ लैला और फिसाने आजाद से बढ़कर नहीं समझीजाती—यहीदशा इसलाम की है—अत्याचार से इसका सम्बन्ध और अविद्या से इसका गंठजोड़ा बन्धा हुआ है-जहां२ विद्या और सभ्यता की लाइट (रौशनी) पहुंचगई या पहुचती जातीहै वहांसे इसका डेराडंडा उखड़गया या उखड़ता जाता है वह कल्पित मत जो संग्रह हैं जिन्दावस्था, तौरेत, जबूर और इन्जीलके जिन्न भूतों की कहानियोंका, वह इसलाम जो भण्डार है जादू टौने और मुर्दों की करामातों का, वह पन्थ जो अपने अनुयायियों को कबर पूजा, स्थान पूजा और मूर्ति पूजा की शिक्षा देरहा है और वह ग्रन्थ जो प्रमाद और विषया सक्ति से भरेहुए स्वर्गका (जहां हूर व गिलमां रहते और शहद और शराब की नहरें बहती हैं) लालच देरहा है—और वह फिलासफी का शत्रु जो भूगोल खगोल विद्या से शून्य है याद रखिये कि वहविद्याके प्रकाशके सामने कदापि ठहर न सकेगा अब शीघ्रवह समय आनेवाला है कि जब यह सारे सम्प्रदाय यातो अपने २ धर्मग्रन्थों का संशोधन और रीति नीति का यथोचित परिवर्तन करेंगे—या उनसे बिलकुल हाथ धोबैठेंगे। इसकी पुष्टिमें आजकल के पैगम्बर हजरत कादियानी को इल-हाम भी होचुका है—वह कहते हैं—"कि आजकलके नवयुव-कोंकी रुचि धर्मसे हटती जाती है" अतएव अब भी समझ जा-ओ और आग्रहकी पट्टी आंखों से उतारकर वैदिकधर्मकी श-रणली—जो सबसे पहले तुम्हें विद्या और बुद्धिसे काम लेने की आज्ञादेता है-मित्रो! अविद्या का आवरण दूर करदो अत्या-चारका जुआ अपने भाइयों की गर्दन से उतारदो—हठ और

आग्रह को अपने हृदय से निकालदो आओ हमसब मिलकर सत्यका प्रचार करें-परमत्मा हमारे भाइयों के हृदयों में सत्य का प्रकाश करें इत्यलम् ।

आपका शुभचिन्तक

लेखराम आर्य्य पान्थ

दर्शनों पर भाष्य

वैशेषिक दर्शन-संस्कृत पदार्थ-विज्ञान में यह पुस्तक सबसे अधिक प्रमाणिक है जहां तक विचार किया जाता है। इससे अधिक उत्तम साइन्स का पुस्तक मिलना असम्भव है इस ग्रन्थके रचीयता का मुख्य उद्देश्य यह है कि इस को पढ़ने वाला प्रत्येक वस्तु के तत्वको जान कर अपना अभिष्ट सिद्ध करे। मूल्य १।) रु० है

न्याय दर्शन--यह प्राचीन ऋषी महात्मा गौतमजी का रचा हुआ अमूल्य ग्रन्थ है। क्योंकि संस्कृत से अनभिज्ञ पुरुष इससे लाभ नहीं उठा सकते थे। और इसके गूढ़ विषयों को ग्रहण नहीं कर सकते थे। इसलिये देवनागरी भाषा में अनुवाद उनके लिये अति उपयोगी होगा जिसमें कि असल सूत्र देकर सरल भाषा मे इसकी विस्तृत व्याख्या की गई है। मूल्य १।)रु०

सांख्य दर्शन--इस दर्शन को श्री कपिल मुनीने रचा है इसमें प्रकृती और पुरुष का वर्णन है। यह प्रथम तीन बार छप कर हाथोंहाथ बिक चुका है अब चौथीवार छपा है मूल्य सिर्फ ॥।) है।

स्त्री शिक्षा की अपूर्व श्रेणी बद्ध पुस्तकें

बालाबोधिनी--प्रथम भाग -) द्वितीय भाग =)॥ तृतीय भाग ।)॥ चतुर्थ भाग ।=) पंचम भाग ॥) है पाँचो एक साथ लेनेसे सजिल्द १।) रु०

भारत वर्ष की वीर और विदुषी स्त्रियां प्रथम भाग ॥) तृतीय =)॥ शान्ता ॥) लक्ष्मी ।)

सीता चरित्र नाविल छओं भाग श्री मुन्शी दया-राम साहब का लिखा स्त्री शिक्षा का छटा दार मनो रंजन भाषा में यह पुस्तक प्रसिद्ध है मूल्य जिसका प्रत्येक भाग छः छः आने का है छओं भाग साथ लेने से २=) सजिल्द २।=) में मिलेगा

पती वृत धर्म--इस में एक कन्या का अति उत्तम मनो हर व्याख्यान है मूल्य)॥ अनपढ़ स्त्री की यात्रा)॥।

स्त्री पत्र प्रबोध--इस पुस्त में यह दिखलाया है कि मातापिता आदिसे किसतरह पत्रव्यवहारकरना चाहिये (मू०।)

विवाह दर्श—आर्य्य समाजके सुप्र सिद्ध वक्ता सुले-खक श्रीयुत मास्टर आत्माराम जी (एज्यू केशनल इन्सपेक्टर बड़ौदा स्टेट) की अति प्रसिद्ध रचना है मास्टर जी ने इस ग्रन्थ को बड़े प्रेम से लिखा है। मूल्य केवल १) है

महात्मा पुरुषों के जीवन चरित्र।

छत्र पती शिवाजी का जीवन—लिखने की आव-श्यकता नहीं कि यह पुस्तक कैसी होगी जिस पुरुषका इसके अन्दर जीवन है सर्व साधारण से छिपा नहीं है कि यवन दल से पददलित होती हुई इस हिन्दु जातीको बचाने वाला यही वीर था। मू० ॥) है

हकीकत राय धर्मी-यह वही हकीकत है कि जिसने अपने धर्म के ऊपर प्राण तक निछावर करदिये मूल्य –)॥ है

सिक्खों के दश गुरु—नानक आदि दस गुरुओं का नाम किसने नहीं सुना कौनसा हिन्दु उन महात्माओं का कृत-ज्ञ नहीं ! कौन वीर शिरो मणी गुरुगोविन्दसिंहजी तथा उनके वीर बालकों की शूर वीरता नहीं जानता जिन्हों ने म्लेछों के पंजेसे इस हिंदु जाती को निकाला जिसका मू० केवल ॥) है

श्री० १०८ महर्षि स्वामी विरजानन्दजीका जीवनचरित्र मूल्य –)

पुस्तक मिलने का पता—वैदिक पुस्तकालय मुरादाबाद

देखने योग्य पुस्तकें

यवन मत सम्बन्धी पुस्तकें ।

तर्क इस्लाम =)॥ कुरान की छान बीन ≈) यवनमतादर्श१) यवन मतसमीक्षा मूल्य ।) मौकूंजाट पादरी साहब का मुबाहसा मूल्य -)॥ विनलता ।) कुरान का फोटू -)

बाल सत्यार्थ प्रकाश—यह पुस्तक श्री १०८ महर्षि-स्वामी दयानन्द जी के सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर लिखा गया है हमारे इस पुस्तक के लिखने का सिर्फ यही मन्तव्य है कि आर्य बालक अपने धर्म की व्यवस्था और स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों को समझ सकें ! मूल्य ।-)॥

बालमनुस्मृति मूल्य ।) बाल शिक्षा प्र०)॥ द्वितीयभाग -)

जीवन—यह एक बहुत ही उत्तम पुस्तक है । इस में मनुष्य की जिन्दगी पर १ मनोहर व्याख्यान है मूल्य ॥) है ।

दृष्टान्त समुच्चय—इस में १६४ दृष्टांत हैं । जो कि कठिन से कठिन विषय को भी इस के द्वारा आसानी से समझ सकते हैं । इस में व्यर्थ हंसी दिल्लगी या वक्त के खोनेवाले दृष्टान्त नहीं है । मूल्य १=) है ।

नीतिशतक—इस पुस्तक को ग्रहण करके और इस से लाभ उठाकर हर मनुष्य को निति्ज्ञ कहलाने का अधिकारी होना चाहिये । संसार में जो मनुष्य निति्ज्ञ नहीं वह पशु समान होता है । मू० ।) है ।

ध्यान योगप्रकाश—इस पुस्तक में योग के कठिन से कठिन विषयों का वर्णन उत्तम रीतिसे किया है पुस्तक रोचक और सर्व साधारण के उपयोगी है । मूल्य १।)

स्वर्ग में सबजेक्ट कुमेटी—पुस्तकके रचियतासम्पादकाचार्य्य श्री पं० रुद्रदत्तजी हैं । इस का विषय नाम से ही समझ लीजिये मूल्य -)॥

द्वितीय भाग–स्वर्ग में महासभा–यह भी पुस्तक बड़ी दिल्लगी की है उपरोक्त पंडित जी ही इसके करता हैं मू० ।)

पंचांगोत्पत्ती–पत्रा बनाने की विधि है मूल्य ।।)

गाने योग्य भजन पुस्तकें

स्त्री ज्ञानगजरा तीनों भाग –)॥ वसन्तमाला ।–) भजन पचासा प्रथम भाग –) द्वितीय भाग =) अबला भजन चालीसी –) स्त्री ज्ञान प्रकाश =)॥ द्वितीय ≡) नगरकीर्तन पाठक रामस्वरूप कृत –)॥ भजन अन्धेर खाता)॥ वासुदेव बत्तीसी –)॥। धर्म बलिदान आल्हा में =) संजीवन बूंटी ।) अद्भुत भजनसंग्रह =)। कर्णामृत–यह पुस्तक अत्यन्त ही रोचक है कविता बड़ी उत्तम है मू० =) मुरारीलाकृत विधवाविलाप या रहमासा)। नारीभजन विलास)॥। उच्चावस्था)॥। वासुदेव चमत्कार =) स्त्री भजन भंडार ।=) स्त्री भजनमाला –) जाटक्षत्रिय भजन ।–) वासुदेव रत्नमाला ।)॥ कुरीत निवारण =) होली ब्रह्मज्ञानकी –) बारह खड़ी मुरारीलाल कृत)। भजन अज्ञान नाशक सैकड़ा १।) स्त्री गीतसागर प्रथम)॥ द्वितीय)॥ आर्य भजन संग्रह ।=) आर्य्यसंगीत शतक ।–) मद्यदर्पण –) अद्भुत भजन संग्रह उर्दू –)। भजन चालीसा –) ज्ञान भजनावली प्रथम =) द्वितीय =) तृतिय =) चतुर्थ =) आर्य्यगायन भजन पच्चीसी ।॥ भजन हृदय प्रकाश)॥ भजन प्रकाश =) द्वितीय =) संगीत शिक्षावली =) मनुस्मृति आल्हा ॥=) जगत हितैषिणी ।) पोपप्रदीप =) प्रेमदुलारी विनय –) वेश्या लीला)॥ नागरी भजन माला –) संगीत सागर =) वैदिक पताका –) ज्ञान भजनोपदेश)।